

गीत

गीत विषय सूची

गीत का शीर्षक

हिन्दी English पृष्ठ
संख्या

त्रिएकता की आशीष

उसकी अराधना	1	6	11
उसकी स्तुति	2—3	7—8	11

पिता की आराधना

आत्मा की तरह	4	11	12
जीवन के स्रोत की तरह	5	12	13
प्रेम और जयोति की तरह	6	13	14
उसकी नवीनता	7	16	16
उसकी महानता	8	17	17
उसकी विश्वासयोग्यता	9	18	18
उसकी पवित्रता	10	22	20
उसकी बुद्धिमत्ता	11	24	21
उसकी दया	12	26	22
उसका प्रेम	13—16	27—31	23—26
उसका छुटकारा	17—18	40—41	28—29
पुत्रत्व में उसका अनुग्रह	19	48	30

प्रभु की स्तुति

उसकी मानवता	20	62	31
उसका नाम	21—22	66—76	32—33
उसका देहधारण	23	82	35
उसका कष्ट	24	86	36
उसका छुटकारा	25—28	105—116	37—40
उसका विजय	29	124	41
उसकी प्रशंसा	30—31	127—132	42—44
उसकी महिमा	32	136	44
उसका प्रेम	33	152	45
उसकी सुन्दरता	34	171	46
उसकी सर्व सम्मिलिता	35—36	189—190	47—48
उसकी वृद्धि	37	203	50

गीत विषय सूची

गीत का शीर्षक	हन्दी संख्या	English	पृष्ठ
उसके साथ संतुष्टि	38	208	51
उसे याद करना	39—42	213—233	52—56

आत्मा की भरपूरी

सांस की तरह	43	255	56
भरना	44	267	57
कूस के द्वारा	45	280	58

उद्धार का सुनिश्चित और आनन्द

प्रभु द्वारा प्रेम किया जाना	46—47	285—287	59—60
परमेश्वर से मेल	48	299	61
लहू द्वारा छुड़ाया जाना	49	306	62
आत्मा से जन्म	50	308	63
प्रभु से खिलाया जाना	51	310	64
अनुग्रह से बचना	52	317	65
मसीह से संतुष्ट	53—54	322—324	66—67

चाह

मसीह के लिए	55—56	359—360	68—69
मसीह के लिए जीवन की तरह	57—58	364—365	70—71
मसीह को प्रेम के लिए	59—60	368—369	72—73
मसीह के साथ संगति	61—62	371—377	74—75
मसीह के साथ निकटतम चाल	63—64	384—387	76—77
मसीह में बढ़त	65	395	78
मसीह की समानता	66	398	79
ज्योति की	67	426	80
प्रभु के प्रेम में विवश	68—69	431—437	81—82

समर्पण

प्रभु को सब देना	70	441	83
प्रभु को स्वीकृति	71	450	84

गीत विषय सूची

गीत का शीर्षक

हिन्दी
संख्या

English

पृष्ठ

मसीह के साथ एकता

उसके साथ एक	72—73	474—475	85—86
उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के साथ पहचान	74	482	87

मसीह का अनुभव

आत्मा की तरह	75	493	88
अनुग्रह की तरह	76	497	89
जीवन की तरह	77—81	499—507	90—94
भोजन की तरह	82	509	95
सब कुछ की तरह	83—85	510—530	96—99
अंतर्निवासी जन की तरह	86	538	100
उपलब्ध जन की तरह	87	539	101
उद्धारकर्त्ता की तरह	88	540	102
उसकी समृद्धि	89	542	103
उसको समाहित करना	90—91	548—551	104—105
उसमें बने रहना	92—93	561—564	107—108

परमेश्वर का अनुभव

अनंत भाग की तरह	94	600	109
त्रिएकता के द्वारा	95	608	110
आत्मा के अभ्यास द्वारा	96	612	112
उसके साथ संगति	97—98	614—615	113—114

कूस का मार्ग

जीवन का मार्ग	99	631	114
विजय का मार्ग	100—101	632—634	115—116
फल लाने का मार्ग	102	636	118

प्रोत्साहन

प्रभु के साथ संगति के लिए	103—104	643—644	118—120
प्रभु पर भरोसा के लिए	105—108	646—653	121—124
प्रभु की विश्वासयोग्यता पर भरोसा के लिए	109	655	125
प्रभु की आज्ञा मानना	110	657	126

गीत विषय सूची

गीत का शीर्षक	हिन्दी संख्या	English	पृष्ठ
ज्योति में चलना	111	658	127
व्याकुल न होना	112	661	128
बढ़ने के लिए	113	664	129

परीक्षा में ढाढ़स

प्रभु में आनंद द्वारा	114	717	130
-----------------------	-----	-----	-----

आन्तरिक जीवन के विभिन्न पहलू

दो आत्मा एक की तरह	115	745	131
तोड़ना और मुक्ति करना	116	749	132
रूपांतरण	117	750	133

प्रार्थना

महा पवित्रता में	118	770	134
एक मन से	119	779	135
प्रभु के साथ संगति	120	784	136
प्रभु से कहना	121	789	137

वचन का अध्ययन

वचन को खाना	122—123	811—812	138—140
-------------	---------	---------	---------

कलीसिया

मसीह की वृद्धि	124	819	141
उसकी समान्य परिभाषा	125	824	142
उसका निर्माण	126—129	837—841	144—148
उसका आकर्षण	130—131	852—853	149—150
उसकी संगति	132	861	151

सभाएं

मसीह का प्रदर्शन	133	864	152
परमेश्वर की अराधना करना	134	865	153
कार्य करना	135	867	154

आत्मिक युद्ध

जयवन्त	136	894	155
--------	-----	-----	-----

गीत विषय सूची

गीत का शीर्षक	हिन्दी संख्या	English	पृष्ठ
सेवा			
धारा में	137	909	157
सुसमाचार प्रचार करना			
मसीह की प्रदानता	138	922	158
जीवन बहाव द्वारा	139	925	158
खाली हाथ से	140	930	159
महिमा की आशा			
मुझमें मसीह	141	948	160
मसीह महिमाकरण की तरह	142	949	161
अंतिम प्रकटीकरण			
परमेश्वर का केन्द्र विचार	143	972	162
पवित्र शहर	144	976	163
सुसमाचार			
लहू	145—146	1006—1008	165—166
मसीह की आवश्यकता	147—148	1024—1025	167—168
प्रभु के पास आना	149—152	1048—1052	169—172
प्रभु को पूकारना	153	1054	173
सममान्य	154	1080	174
पिता की आराधना			
उसका नाम, उसका बचन, उसकी महिमा	155	1081	175
प्रभु की स्तुति			
उसका सर्व-सम्मिलित	156	1103	176
उसकी याद	157—158	1107—1112	177—178
आत्मा की भरपूरी			
अंतरनिवासी आत्मा की तरह	159	1113	179
श्वांस की तरह	160	1114	181
उद्धार का सुनिश्चित और आनन्द			
कितना महान उद्धार	161	1130	182

गीत विषय सूची

गीत का शीर्षक	हिन्दी संख्या	English	पृष्ठ
मसीह का अनुभव			
आत्मा में	162	1141	184
खाना और पेय की तरह	163—164	1150—1151	184—186
उसको आनंद करना	165	1153	187
उसे प्रेम करना	166	1159	188
दीवट के बीच में मनुष्य के पुत्र की तरह	167	1184	189
परमेश्वर का अनुभव			
जीवन की तरह	168	1191	190
प्रोत्साहन			
दोड़ने की	169	1205	191
कलीसिया			
परमेश्वर के झुंड की तरह	170	1221	192
मसीह की देह की तरह	171	1226	193
एक नया मनुष्य की तरह	172	1232	195
हमारा घर और आराम	173	1237	196
जीवन में बढ़त द्वारा निर्माण	174	1240	197
महिमा की आशा			
मसीह के आगमन की तैयारी	175	1308	199
विवाह का दिन	176	1314	200
गाने के लिए वचन	177	1340	201
अंतिम प्रकटीकरण			
परमेश्वर का अनंत उद्देश्य	178—179	1350	202—203
आंतरिक जीवन के विभिन्न पहलुएं			
जीवन की संगति	180	1351	203
मसीह का अनुभव			
उसे प्रेम करना	181		205
उसकी उमड़ती संतुष्टि	182		205
पताका गीत— मरकुस के सुसमाचार का क्रिस्टलियकरण	183		205

गीत विषय सूची

गीत का शीर्षक	हिन्दी संख्या	English	पृष्ठ
युवाओं के गीत			
आशीष प्रभु	184		206
खुदा ने बुलाया हमें	185		206
प्रेम परमेश्वर जिसने भेजा प्रिय पुत्र को	186		207
कैसे मैं एक गांव की लड़की	187		209
मैं क्रुसीकृत मसीह के साथ	188		211
अगर है चाह प्रभु कि तो	189		212
प्रभु तेरा बस एक स्पर्श	190		213
बस तुझमें रहना, जैसे तू मुझमें	191		215
करूँ प्रेम पर न हों आन्दित	192		216
हे यीशु तुम हो प्यारे	193		217
प्रभु, हृदय मेरा सच्चा रख हमेशा	194		218
प्रिय प्रभु दूल्हा	195		219
चरवाहा स्वीकार कर	196		221
कुछ आज कल हमसे कहेंगे	197		222
त्रिएक ईश्वर रहस्य	198		223
है जो मेरा पापी कल	199		225
प्रेम करता प्रभु	200		225

त्रिएकता की आशीष — उसकी अराधना **Blessing of the Trinity - His worship**

1

6

1. पवित्र, पवित्र, पवित्र, सर्वशक्तिमान ईश,
अन्नत काल तक तेरी नित स्तुति गाएं;
पवित्र, पवित्र, पवित्र, दयालु और प्रबल!
तीन में एक परमेश्वर
धन्य त्रिएकता!
2. पवित्र, पवित्र, पवित्र, सब सन्त भजन करते;
प्राचीने मुकूटे कांच समुद्र पर डालते
करुबें, सारापें, तेरी आराधना करते;
जो था, और है, और रहेगा सदैव!
3. पवित्र, पवित्र, पवित्र, मेघो से तू घिरा
पापी आँखे, तेरी महिमा देख नहीं सकती
केवल तू पवित्र है, और कोई ना तुझ जैसा,
सिद्ध है, शक्ति, प्रेम और शुद्धता में!
1. Holy, Holy, Holy, Lord God Almighty!
Unto everlasting days our song shall
rise to Thee;
Holy, Holy, Holy, Merciful and Mighty!
God in Three Persons, blessed
Trinity!
2. Holy, Holy, Holy! all the saints adore
Thee;
Heaven's elders cast their crowns
down by the glassy sea;
Cherubim and seraphim worship too
before Thee,
Who wert, and art, and evermore
shalt be.
3. Holy, Holy, Holy! though the
darkness hide Thee,
Though the eye of sinful man Thy
glory may not see,
Only Thou art holy, there is none
beside Thee
Perfect in power, in love, and purity.

त्रिएकता की आशीष — उसकी स्तुति

2

7

1. महिमा, महिमा पिता की
महिमा, महिमा पुत्र की
महिमा, महिमा आत्मा की
महिमा एक में तीन की
स्तुति करो, स्तुति करों,
स्तुति त्रिएक परमेश्वर की
महिमा उसको, महिमा दो
अद्भुत कार्य उसने किया हैं।
1. Glory, glory to the Father!
Glory, glory to the Son!
Glory, glory to the Spirit!
Glory to the Three in One!
Let us praise Him! Let us
praise Him! Praise our God,
the Three in One!
Give Him glory; give Him glory!
Wondrous things for us our
God hath done!

2. उद्देश्य कर्त्ता पिता की स्तुति कर
सब किया, पुत्र की स्तुति कर
बहती आत्मा की स्तुति कर
कार्य करता तीन एक साथ

त्रिएकता की आशीष – उसकी स्तुति

3

- 1 स्तुति खुदा की जहाँ से आशीष बहती
स्तुति उसकी सारी सृष्टि करो
स्तुति करो उसकी स्वर्गीय सेना
स्तुति पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा की
- 2 स्तुति पिता की जो है स्रोत
स्तुति पुत्र की जो है प्रक्रिया
स्तुति आत्मा की जो है बहता
स्तुति खुदा की हमारा भाग यहां पर

पिता की अराधना—आत्मा की तरह

4

1. हे, पिता तू सत्य आत्मा है
सबसे ही पवित्र
आत्मा में करते अराधना
वचन में पुकारते
2. हम में एक आत्मा बनाई
कि अराधना करें
आत्मा में अनुगुंजन हो
कि हों हम एक आत्मा
3. पिता में आया है पुत्र
पुत्र ही आत्मा है
ताकि हममें आए खुदा
ओ क्या अनुग्रह है!

2. Praise the Father who has purposed!
Praise the Son who all has done!
Praise the Spirit who transmitteth!
Praise the Three who work as one!

Blessing of the Trinity - His Praise

8

1. Praise God, from whom all blessings
flow;
Praise Him, all creatures here below;
Praise Him above, ye heav'nly host;
Praise Father, Son, and Holy Ghost!
2. Praise God the Father who's the
source;
Praise God the Son who is the
course;
Praise God the Spirit who's the flow;

Worship of the Father- As The Spirit

11

1. Thou, Father, who art Spirit true,
The holiest of all;
We worship in the spirit now,
In truth upon Thee call.
2. A spirit Thou hast made for us
That we may worship Thee,
That echoing in spirit thus
One spirit we will be.
3. The Father in the Son has come,
The Son the Spirit is,
That to our spirit God may come.
O what a grace is this!

4. पुत्र है तेरा अनंत वचन
वचन है आत्मा भी
आत्मा, जीवन सी आई हममें
आत्मा नवीन करने

5. तेरी आत्मा एकता में है
हमारी आत्मा साथ
आत्मा आप ही गवाही देती
कि हम जन्मे तुझसे

6. सब में आत्मा अगुवाई करता
कि उसके पीछे चले
फिर हम आत्मिक बन जाएंगे
जीवन और शांति साथ

7. आत्मा में हो अराधना
आत्मा में तू रहे
आत्मा जब तक मुक्त ना हो
व्यक्त करने को स्वरूप

8. हे पिता, दे स्तुति तुझे
कि तू ही है आत्मा
आत्मा और सच्चाई से करे
तेरी अराधना

4. The Son is Thine eternal Word,
The Word is Spirit too;
The Spirit as our life has come
Our spirit to renew.

5. Thy Spirit in our spirit is,
And thus in unity
Thy Spirit witnesseth with ours
That we are born of Thee.

6. In everything Thy Spirit leads
That we may follow Him;
We thus may spiritual become,
With life and peace within.

7. In spirit we would worship Thee,
In spirit Thee address,
Until our spirit is released
Thine image to express.

8. Our Father, we would praise Thee
now
That Thou the Spirit art;
In spirit and in truth to Thee
True worship we impart.

पिता की आराधना – जीवन के स्रोत की तरह

5

1. परमेश्वर आप जीवन स्रोत
दिव्य धनी और मुक्त
जीवन जल जैसे बहता है
अनन्तकाल तक ।

Worship of the Father - As The Source of Life

12

1. O God, Thou art the source of life,
Divine, and rich and free!
As living water flowing out
Unto eternity!

2. तू प्रेम में पुत्र में बहा
मानव जाति के बीच
आत्मा हैं आप बहता हैं
कृपा द्वारा हम में,

3. हम आप से पाप और अधर्म से
कभी दूर चले गये;
लेकिन पुत्र ने दी मुक्ति,
जीवन और अनुग्रह।

4. हमने आप का तिरस्कार किया
आत्मा को दुख दिया
लेकिन आप आत्मा बन गये
जीवन पाने के लिए

5. जैसे आत्मा पुत्र में हैं,
वैसे हमारा मिलन
अभिषेक करता संगति से
वह बहती जाती हैं।

6. परमेश्वर का प्रेम, मसीह की कृपा,
पवित्रात्मा का बहाव,
दिव्य धन भाग लेने के लिए
सामर्थ्य देता हैं।

7. पिता, पुत्र, आत्मा एक हैं
सभांले बहुतायत से
एक मन होकर हम गाएँगे
सर्वदा आपका प्रेम।

2. In love Thou in the Son didst flow
Among the human race;
Thou dost as Spirit also flow
Within us thru Thy grace.

3. Though we in sin and wickedness
Went far from Thee apace,
Yet in the Son Thou didst redeem,
Bestowing life and grace.

4. Though we have often slighted Thee,
Thy Spirit often grieved,
Yet Thou dost still as Spirit come
As life to be received.

5. Thou as the Spirit in the Son
Hast mingled heretofore;
Thou wilt thru fellowship anoint.
And increase more and more.

6. The love of God, the grace of Christ,
The Spirit's flowing free,
Enable us God's wealth to share
Thru all eternity.

7. The Father, Son, and Spirit-one,
So richly care for us;
Thy love with one accord we sing
And e'er would praise Thee thus.

पिता की आराधना – प्रेम और ज्योति की तरह Worship of the Father - As Love and Light

6

1. तू है प्रेम, और तू है ज्योति
पुत्र में जीवन जैसे
प्रेम प्रकटन, ज्योति ज्योतिमय
तू हमें जीवन देता।

13

1. Thou art love-and Thou art light, Lord,
In the Son as life Thou art;
Love expressing, light illum'ning,
Thou dost life to us impart.

कोरस :

तू है प्रेम, तू है ज्योति
पुत्र में जीवन जैसे
प्रेम प्रकटन, ज्योति ज्योतिमय
तू हमें जीवन देता

Chorus

Thou art love! Thou art light!
In the Son as life Thou art;
Love expressing, light illum'ning
Thou dost life to us impart.

2. प्रेम उसको है व्यक्त करता
जो दिखता ज्योति द्वारा
प्रेम अंदर है ज्योति बाहर
प्रेम ज्योति साथ हो लेता

2. Love bespeaks Thy very being,
What Thou dost is shown by light;
Love is inward, light is outward,
Love accompanies the light.

3. अनुग्रह से प्रेम प्रकट,
और सच से ज्योति दिखती
तेरे प्रेम से आनंद करते
तुझ को ज्योति से जानते

3. Love by grace is manifested,
And the light by truth is shown;
By Thy love we may enjoy Thee;
By Thy light Thou, Lord, art known.

4. प्रेम से कलवरी तक जाते
ईश्वर का जीवन पाते
ज्योति समझ को है खोलती
कि हम लहू को लगाए

4. Thru Thy love, which led to Calvary,
We receive the life of God;
Light our understanding opens,
That we may apply the blood.

5. प्रेम से जीवन प्रवेश करता
तेरे संग संगति को;
तेरे ज्योति से शुद्ध होते
कि संगति में जीये।

5. Thru Thy love, as life Thou enter'st
Fellowship with Thee to give;
Thru Thy light we take Thy cleansing
And in fellowship may live.

6. ज्योति, लहू के साफ द्वारा
अभीषेक को जानेंगे
तेरे तत्व के प्रेम का जीवन
हममें ज्यादा बहेगा

6. By the light and blood which cleanses,
The anointing we shall know;
Then the life of love Thine essence,
More and more in us will flow.

7. प्रेम से है हम तेरी संतान
अब्बा पिता पुकारते
ज्योति अंधकार को दूर करता
जब तक पुत्र को न देखें

7. By Thy love we are Thy children,
Abba Father calling Thee;
Light disperses all our darkness,
Till, like Him, Thy Son, we see.

कोरस :

क्या अनुग्रह, ओ क्या सत्य
प्रेम को देख ज्योति दिखता
निरंतर स्तुति करेंगे
प्रेम, ज्योति से जाने तुझे

Chorus

O what grace! O what truth!
Love is seen and light is shown!
We would praise Thee never
ceasing,
Thou by love and light art known!

पिता की आराधना – उसकी नवीनता Worship of the Father - His Newness

7

16

1. हे पिता तू सदाबहार
तू सदा नया है
तू सदा जीवित प्रभु है
ओस की ताज़गी जैसा

1. Our Father, as the evergreen,
Thou art forever new;
Thou art the ever living Lord,
Thy freshness as the dew.

कोरस :

हे पिता तू न बदलता
पुरातन कभी न होता
तू ताजा है हर युगो से,
तेरी नवीनता खुलती जाती

Chorus

O Father, Thou art unchanging,
Thou never hast grown old;
Thru countless ages, ever fresh,
Thy newness doth unfold.

2. ओ खुदा आपका जीवन “नया”;
बिन तेरे सब दुर्बल
पर तेरे साथ सब है ताजा
कितने साल बीत गए

2. O Thou art God, and Thou art “new”;
Without Thee all is worn,
But all with Thee is ever fresh,
Though many years have gone.

3. हरेक आशीष दी उसने
नये सिरे से भरता
उसकी वाचा, नव उसका मार्ग
हमेशा समान रहता

3. Each blessing Thou hast given us
Thy newness doth contain;
Thy covenant, Thy ways are new,
And ever thus remain.

4. हम उसकी नई सृष्टि है
नई आत्मा, नया हृदय
रोज पुराने स्वभाव से बदलते
नया जीवन प्रदान करता

4. Now we Thy new creation are-
New spirit and new heart;
We’re daily from the old renewed,
New life Thou dost impart.

5. पृथ्वी और स्वर्ग नया होगा
नये शहर में सहभागी हम
नया फल होगा हर महीने
सब नया वहाँ होगा

6. ओ पिता आपका जीवन नया
और सब नया आपमें
हम गायेगें नव अनंत गीत
नई स्तुति हम तुझे देते

5. The earth and heavens will be new
And Thy new city share;
New fruits each month will be supplied,
For all is newness there.

6. O Father, Thou art ever new,
And all is new in Thee;
We sing the new eternal song,
New praise we give to Thee.

पिता की आराधना – उसकी महानता

8

1. खुदा पिता जब देखूं सृष्टि विशाल
स्वर्ग और पृथ्वी का मैं निहारूं
बड़ी छोटी चीज़ें जो हैं बेशुमार
प्रकट करते अवर्णीत सामर्थ तेरी

कोरस :

तो मेरा जी तेरी प्रशंसा में गाए
कितना अद्भुत कितना महान
और मैं गाऊँ अन्नतः तक यही
कितना अद्भुत कितना महान

2. जब उद्धार के अनुग्रह को आनंद करूं
और ध्यान करूं कैसे पुत्र भेजा
जो मरा कि हम नई सृष्टि बनें
कि जीवन विस्तार में प्रकट करें

Worship of the Father - His Greatness

17

1. My Father God, when on Thy vast
creation,
The wonders of the heav'n and earth, I
gaze,
Things great and small, beyond
enumeration,
Which manifest Thy pow'r in untold
ways;

Then all my being sings in praise
to Thee,
How marvellous! How great Thou
art!
And this I'll sing through all
eternity,
How marvellous! How great Thou
art!

2. As I enjoy the grace of Thy salvation
And contemplate how Thou Thy Son
hast sent,
Who died that we might be Thy new
creation,
Thy life expressing to the full extent;

3. जब कलीसिया, सहभागिता में देखूं
लाखों जन तेरा जीवन है रखते
कैसे निवास स्थान में बनते जाते
रखते तुझको, पूर्णता प्रकट करते
4. उम्मीद यही कि पूर्णता के युग में
नये यरूशलेम में भाग बनूं
स्वर्गों और पृथ्वी के नये होने से
तू सब में प्रकट हो जाए

पिता की आराधना – उसकी विश्वासयोग्यता

9

1. कितने सच्चे और विश्वासयोग्य
परमेश्वर पिता तू
ये संसार और इसमें सबकुछ
तेरी सच्चाई मानते
कितनी दृढ़ है तेरी सच्चाई
करूं मैं अराधना
स्वर्ग में ये स्थापित हैं
और खड़ा मेरे लिए
2. न परिवर्तन कोई तुझमें
न कोई छाया पड़ती
पहले तू था, अब जो तू है
हमेशा रहेगा
3. तेरी तरह अटल, वचन
कभी न टलेगा
स्वर्ग और पृथ्वी टल जाएंगे
वचन रहे सदा

3. When in the church, in blest
participation
I see how millions Thine own life
possess,
How they are built to form Thy
habitation,
Containing Thee, Thy fulness to
express;
4. As I expect the coming age of fulness
And hope to share the new Jerusalem,
With all the heavens and the earth in
newness
And all Thou art expressed in all of
them;

Worship of the Father - His Faithfulness

18

1. How faithful and trustworthy too,
My Father God, art Thou;
The universe and all therein
Thy faithfulness avow.
How steadfast is Thy faithfulness!
For this I worship Thee;
It is established in the heav'n,
And ever stands for me.
2. No turning shadow could there be,
Nor any change with Thee;
As Thou hast been, and now Thou art,
Forever Thou wilt be.
3. Thy word, as certain as Thyself,
Can never pass away;
Though heav'n and earth shall
disappear,
Thy word abides for aye.

4. तेरे वरदान बिन दुःख के
नाम लेना भी ऐसा
तेरी महिमा अनन्ता तक
तेरे नाम सी तेरी दया

5. विश्वासनीय तेरा वचन
मेरी प्रतिभू है
साथ में सच्ची उद्धार तेरी
मेरी निश्चिन्ता है

6. अपने कारण न करूं विश्वास
तो भी तू सच्चा है
खुद को नकार न सकता है तू
वचन पूरा होगा

7. वादा, बुलाहट को पूरा
करने में तू सच्चा
तेरी सच्चाई पर भरोसा कर
मैं लेता हूं तुझे

8. तख्त के चारो ओर मेघधनुष
घोषित करे सच्चाई
पवित्र शहर उठाती है
तेरे गुणों को सदा

4. Thy gifts without repentance are,
Thy calling is the same;
Thy grace forever lasting is,
Thy mercy as Thy name.

5. Thy word with Thine own faithfulness
A surety is to me;
By it, with Thy salvation true,
I have the certainty.

6. If, due to self, I trust Thee not,
Yet Thou art faithful still;
Thou never canst deny Thyself,
Thy word Thou shalt fulfill.

7. As Thou art faithful to perform
Thy promise and Thy call;
So, feeding on Thy faithfulness,
I take Thyself withal.

8. The rainbow round about Thy throne
Thy faithfulness declares;
This attribute forevermore
The holy city bears.

पिता की आराधना – उसकी पवित्रता Worship of the Father - His Holiness

10

22

1. पवित्र पिता, दंडवत करते
भक्तिपूर्ण गीत चढ़ाते
तू पवित्र, महिमापूर्ण है
"पवित्र तेरा नाम", पिता

2. प्रेमी तेरा हृदय पिता
धार्मिक तेरी राहें हैं
है कितना पवित्र स्वभाव
हम तक मसीह पहुंचाता

1. Holy Father, we adore Thee,
Rev'rent song to Thee we raise;
Thou art holy, Thou art lofty,
"Holy is Thy Name," we praise.

2. Loving is Thy heart, dear Father,
Righteous ever are Thy ways;
But how holy is Thy nature,
Yet, to us Christ it conveys.

3. तूने हमें शुद्ध है किया
प्रभु, मसीह के खून से
पापीयों से अलग किया
सत्य से जो वचन है

4. तूने ही पवित्र आत्मा से
बनाया हमको पवित्र
और हमारी आत्मा, देह, प्राण
पूर्णतः पवित्र होवेंगे

5. ओह यीशु का पवित्र जीवन
अनुग्रह से हम रखते
अपनी ही पवित्रता की
हमें भागी बनाता है।

6. जब उस पवित्र शहर के अन्दर
बाँटेंगे पूर्ण पवित्रता
सर्वदा ही संपूर्णता तक
"तू है पवित्र" कहेंगे

3. Thou hast ever sanctified us
With the blood of Christ our Lord;
Thou hast separated sinners
Thru the truth which is Thy Word.

4. Thou hast, by Thy Holy Spirit,
Made us holy unto Thee;
And our spirit, soul, and body
Wholly sanctified will be.

5. Oh! the holy life of Jesus
Thru Thy grace we now possess;
Thou wilt make us e'en partakers
Of Thy very holiness.

6. When within that holy city,
Thy full holiness we'll share,
To the uttermost forever,
"Thou art holy," we'll declare.

पिता की आराधना – उसकी बुद्धिमत्ता Worship of the Father - His Wisdom

11

24

1. परमेश्वर, यीशु में ध्यान है
तेरा अनुग्रह, ज्ञान
उसे हमारा ज्ञान बनाया
उस से ही तुझक राह

2. तेरी हर योजना है उसमें
तेरी अनुग्रह की राह
उसमें तेरा ज्ञान हम पाएं
वो महिमा हो तुझे

1. O God, in Christ all focused is
Thy wisdom with Thy grace;
As wisdom Thou mad'st Him to us, In
Him Thy way we trace.

2. What Thou has planned is all in Him,
Thy way of grace is He;
In Him, Thy Wisdom, we have all,
That glory be to Thee.

3. उसमें हमारी धार्मिकता
उसमें न्याय संगत पाएं
उसमें ही जो है पवित्रता
हम सब हुए पवित्र

4. उसमें है उद्धार भी सबका
उस योजना के अनुसार
ताकि पूर्ण उद्धार सब पाएं
तो बने सिद्ध मानव

5. परमेश्वर पिता का वह ज्ञान
उसकी व्यवस्था में
उसके लिए स्तुति तुझे
पूर्ण दीनता के साथ

6. तेरा ज्ञान उसमें है देखा
धनी व पूर्ण गहन
भरपूर गहराई तेरी राह में
मिलें हम सब में अब

पिता की आराधना – उसकी दया

12

1. खुदा, स्तुति हो दया की
जो महान और गहरा है
कमजोरी, विफलताओं में
अत्यन्ता से यह बढ़ती
हम दे महिमा हम दे महिमा
ऐसी दया से शोभित

2. कितने अचम्भित इस दया पे
दूर तक फैला और विशाल
हम पापीयों तक भी पहुँचा
और सदा थामे रखता
इस दया से इस दया से
क्या हटाएगा हमें

3. In Him, who is our righteousness,
Have we been justified;
In Him, who is our holiness,
We're being sanctified.

4. Redemption too He is to us,
According to Thy plan,
That we may fully be redeemed
To be a perfect man.

5. He is Thy wisdom, Father God,
In Thine economy;
For Him we offer praise to Thee
With all humility.

6. Thy wisdom we have seen in Him,
So rich and so profound;
Yet richer, deeper, in Thy way,
By us will it be found.

Worship of the Father - His Mercy

26

1. God, we praise Thee for Thy mercy,
'Tis so great and so profound!
In our weakness and our failures;
With its greatness it abounds.
We adore Thee! we adore Thee!
With such mercy we've been
crowned!

2. How we marvel at this mercy
So far-reaching and so vast!
It has reached us, e'en the sinners,
And will ever hold us fast.
From this mercy, from this mercy,
What can cause us to be cast?

3. तेरी दया के आभारी
जो है धनी व पर्याप्त
तेरी दया से उद्धार में
बड़ी कृपा हम पर की
इसके बिना इसके बिना
कैसे बनते कृपा पात्र

4. तेरी दया प्रेरणाप्रद है
कोमल, सौम्य और मधुर
तेरे धैर्य और करुणा से
हो जाएँ जरूरत पूर्ण
अनमोल मानते, अनमोल मानते
कुछ भी इस-सा है नहीं

5. पिता, आनंद करते दया
जो सदा ताजा, नया
हर सुबह इसकी बौछार
ओस सी ताजगी से भरती
इसे चख कर, इसे चख कर
तुझको स्तुति है देते

6. हो ना बंद हमारी स्तुति
दया के भागी हैं हम
सारी दया, सारी कृपा
हमारे लिए महफूज
भरोसा है भरोसा है
आश्वासन देती दया

पिता की आराधना – उसका प्रेम

13

1. आओ साथ मिलके गाने को
प्रभु प्रेम प्रभु प्रेम
लाए स्वर्ग और धरती स्तुति
प्रभु प्रेम प्रभु प्रेम
जगे सारे प्राण पापों से
सब ही हृदय में मधुर गान
और गए साथ यीशु के लिए
प्रभु प्रेम प्रभु प्रेम

3. For Thy mercy we are grateful,
'Tis so rich, so plenteous!
Thru Thy mercy in redemption,
Thou hast richly favored us.
If without this, if without this,
How could we be favored thus?

4. Oh, Thy mercy, so inspiring!
Gentle, tender, dear and sweet!
With Thy patience and Thy kindness,
Us in all our need it meets.
It we treasure, it we treasure,
Nothing can with it compete.

5. Father, we enjoy Thy mercy,
Ever fresh and ever new;
Every morning shed upon us,
It refreshes as the dew.
How we taste it! how we taste it!
Giving Thee the praises due.

6. We can never cease to praise Thee,
As Thy mercy e'er endures;
All Thy grace and all Thy favor,
Ever for us it secures.
Trusting in it, trusting in it,
Thy sure mercy us assures.

Worship of the Father - His Love

27

1. Come, let us all unite to sing,
God is love, God is love.
Let heav'n and earth their praises bring;
God is love, God is love.
Let ev'ry soul from sin awake,
Each in his heart sweet music make,
And sing with us, for Jesus' sake,
God is love! God is love!

2. कितना सुखद हमारा भाग
 प्रभु प्रेम प्रभु प्रेम
 उसके वादे आत्मा को हर्षित
 प्रभु प्रेम प्रभु प्रेम
 वो है दिन का सूरज, कवच
 मदद, आशा, शक्ति और घर
 वो हमेशा साथ हर राह पर
 प्रभु प्रेम प्रभु प्रेम

3. महिमा में फिर गाएँ हम सब
 प्रभु प्रेम प्रभु प्रेम
 यह होगा हमारा गाना
 प्रभु प्रेम प्रभु प्रेम
 अनंत युग बीत जाती
 स्वर्गीय सभा के गान में
 ये हो हमेशा मधुर गान
 प्रभु प्रेम प्रभु प्रेम

पिता की आराधना – उसका प्रेम

14

1. क्या था वो, धन्य खुदा
 जो पुत्र को देने दिया
 अर्पण किया अपना प्रिय
 नष्ट करने हमारे पाप
 वो बेइंतहा प्रेम था
 वो अटूट प्रेम का बंधन था
 जो दिया प्रिय को हमारे लिए

2. क्या पुत्र को प्रेरित किया
 उंची तख्त छोड़ने को
 कीमती लहू बहाने
 दुःख झेलने और मरने को

2. How happy is our portion here!
 God is love, God is love.
 His promises our spirits cheer;
 God is love, God is love.
 He is our sun and shield by day,
 Our help, our hope, our strength, and
 stay,
 He will be with us all the way:
 God is love! God is love!

3. In glory we shall sing again,
 God is love, God is love.
 Yes, this shall be our lofty strain,
 God is love, God is love.
 While endless ages roll along,
 In concert with the heav'nly throng,
 This shall be still our sweetest song,
 God is love! God is love!

Worship of the Father - His Love

29

1. What was it, blessed God,
 Led Thee to give Thy Son,
 To yield Thy Well-beloved
 For us by sin undone?
 'Twas love unbounded led Thee
 thus,
 'Twas love unbounded led Thee
 thus,
 To give Thy Well-beloved for us.

2. What led Thy Son, O God,
 To leave Thy throne on high,
 To shed His precious blood,
 To suffer and to die?

वो अटूट प्रेम का बंधन था
 वो अटूट प्रेम का बंधन था
 दुःख झेलने, मरने को जाने दिया

3. क्या देने को प्रेरित किया
 अपनी आत्मा स्वर्ग से
 भरने को हमारा हृदय
 स्वर्गीय, शांति, प्रेम से ?

वो अटूट प्रेम का बंधन था
 वो अटूट प्रेम का बंधन था
 आत्मा देने को प्रेरित किया

4. क्या प्रेम के हम ऋणी
 सब अनुग्रह के, खुदा
 अब हृदय उमड़ रहा
 अनंत स्तुति में

तेरी स्तुति करे हम, हे खुदा
 तेरी स्तुति करे हम, हे खुदा
 तेरे सारे असीम प्रेम के लिए

'Twas love—unbounded love to
 us,

'Twas love—unbounded love to
 us

Led Him to die and suffer thus.

3. What moved Thee to impart
 Thy Spirit from above,
 Therewith to fill our heart
 With heavenly peace and love?

'Twas love—unbounded love to
 us,

'Twas love—unbounded love to
 us

Moved Thee to give Thy Spirit
 thus.

4. What love to Thee we owe,
 Our God, for all Thy grace!
 Our hearts may well o'erflow
 In everlasting praise!

Make us, O God, to praise Thee
 thus,

Make us, O God, to praise Thee
 thus

For all Thy boundless love to us.

पिता की आराधना – उसका प्रेम

15

1. क्या प्रेम हम पर प्रदान किया,
 हम धन्यवाद करते;
 पिता, तेरी आराधना
 और स्तुति करेंगे।

2. हृदय हम पर प्रकट किया,
 जाना अनन्त इच्छा;
 उद्देश्य को पूरा करने,
 पुत्र में तू आया।

Worship of the Father - His Love

30

1. What love Thou hast bestowed on us,
 We thank Thee from our heart;
 Our Father, we would worship Thee
 And praise for all Thou art.

2. Thy heart Thou hast revealed to us,
 Made known th' eternal will;
 Within the Son Thou hast come forth,
 Thy purpose to fulfill.

3. प्रिय पुत्र को दिया, प्रेम में
आने और मरने को,
कि हम वारिस के रूप में,
कई पुत्र बन जायें।

4. उसके द्वारा जीवन मिला
तू हमारा पिता;
अपना स्वभाव और स्वयं को,
हम में प्रदान किया।

5. तेरी आत्मा हम में आई
हम पुकारे "अब्बा";
आत्मा से जन्म, आत्मा से छाप,
ताकि हो रूपान्तरण।

6. कई पुत्र महिमा में लायें
तेरा अनन्त लक्ष्य,
तेरे पुत्र के स्वरूप में,
तू अनुरूप बनायें।

7. सम्पूर्ण रूपान्तरण कार्य में,
सब का निर्देश करें,
महिमा से महिमा तक
जब तक पूरा ना हो।

8. क्या प्रेम पिता ने दे दिया;
सदा कृतज्ञ होंगे;
करें नित्य आराधना
और स्तुति लगातार।

3. Thou gavest Thy beloved Son
In love to come and die,
That we may be Thy many sons,
As heirs with Him, made nigh.

4. Through Him we have Thy very life
And Thou our Father art;
Thy very nature, all Thyself,
Thou dost to us impart.

5. Thy Spirit into ours has come
That we may "Abba" cry;
Of Spirit born, with Spirit sealed,
To be transformed thereby.

6. The many sons to glory brought
Is Thine eternal goal,
And to Thy Son's own image
wrought,
Thou wilt conform the whole.

7. Throughout Thy transformation work
Thou dost direct each one,
From glory unto glory bring
Until the work is done.

8. What love Thou, Father, hast bestowed;
We'll ever grateful be;
We'll worship Thee forevermore
And praise unceasingly.

पिता की आराधना – उसका प्रेम

16

1. हम जो भी थे पापी, दुखी
मौत थी हमारी ही य
जो भी हम है तुझसे लिया
बस तू ही है खुदा
2. तेरी दया ने ही धुंधा
और दिया विश्वास को
तब विश्वास में, पाई शांति
और मसीह, में जीये
3. हम जो भी, संतो कि तरह
जो हम चहते बनना
जब यीशु आया महिमा साथ
हमने लिया तुझसे
4. ओ खुदा, तेरा धन और प्रेम
कौन वापस दे सके
तेरा प्रेम, मानव को धुंधना
और तेरा अनुग्रह
5. पर प्रभु मैं करूँ प्रार्थना,
और साफ में देखे सकूँ
ताकि और जानु अच्छे से
कलिसिया कितना है
6. अगर मानव सोचे देने
कि वो वापस दे प्रेम
इसका मतलब वो जाने ना
प्रेम को, सबसे बड़े

Worship of the Father - His Love

31

1. All that we were—our sin, our guilt,
Our death—was all our own:
All that we are we owe to Thee,
Thou God of grace alone.
2. Thy mercy found us in our sins,
And gave us to believe;
Then, in believing, peace we found,
And in Thy Christ we live.
3. All that we are, as saints on earth,
All that we hope to be,
When Jesus comes and glory dawns,
We owe it all to Thee.
4. O God, how rich, how vast Thy love,
Whoe'er can Thee repay?
Thy love is past man's finding out,
Thy grace no man can say.
5. But Lord, to me I pray Thee grant,
More clearly may I see,
That I may e'er more fully know
How much I owe to Thee.
6. But if man's heart should e'er suppose
He could repay Thy love,
It only means he nothing knows
Of love, all loves above.

7. तो कभी न नपे अब
तेरे उस प्रिय प्रेम को य
प्रेम जिसने तोदा हृदय थाय
कौन जीत सके वो प्रेम ?

8. तो कभी ना सोचे देना
उसका प्रेम बहुत ही
पर होने दो हृदय को कैद
कि वो रहे हममें

9. ओ पिता खुदा, तुझसे सब !
जो भी हम, हमारा !
हृदय धन्यवाद तुझे
यही बस दे सकते

7. So may we never bargains make
With that dear love of Thine:
The love that made Thine heart once
break,
Whoe'er that love could win?

8. Then nevermore suggest return,
His love is far too high;
But let our hearts with rapture burn
That He for us should die.

9. O Father God, we owe Thee all!
All that we are and have!
With grateful thanks before Thee fall,
'Tis all that we can give.

पिता की आराधना – उसका छुटकारा

17

1. हम स्तुति करें
प्रिय पुत्र के लिए
बचाने को जो मरा
गया वो स्वर्ग

हालेलूयाह तेरी महिमा
हालेलूयाह आमीन
हालेलूयाह तेरी महिमा
फिर स्तुति करें

2. हम स्तुति करें
ज्योति की आत्मा की
दिखाया उद्धारक को
और हटायी रात

Worship of the Father - His Redemption

40

1. We praise Thee, O God,
For the Son of Thy love,
For our Savior who died and
Is now gone above.

Hallelujah! Thine the glory,
Hallelujah! Amen;
Hallelujah! Thine the glory,
We praise Thee again.

2. We praise Thee, O God,
For Thy Spirit of light,
Who has shown us our Savior,
And scattered our night.

3. पूर्ण महिमा स्तुति
प्रेमी पिता तुझे
यीशु के उद्धार के द्वारा
जाना तेरा दिल

3. All glory and praise
To Thee, Father of love,
For through Jesus' redemption
Thy heart we may prove.

4. फिर स्तुति दे हम
भरे तेरे प्रेम से
अब हर हृदय प्रज्ज्वलित
स्वर्ग की आग से

4. We praise Thee again;
We are filled with Thy love,
And each heart is rekindled
With fire from above.

पिता की आराधना – उसका छुटकारा

18

1. हम गाते नहीं ऊबते वो अनंत गान
महिमा प्रभु को, हालेलुयाह
हमेशा प्रबल आत्मा से ही स्तुति गाएं
महिमा प्रभु को, हालेलुयाह

कोरस
ओह! प्रभु के पुत्रो पास गाने को अद्भुत
गान है
पुत्रों को प्रभु अनुग्रह से लाए महिमा में
हम जा रहे उस दिन में राजा के
सम्मुख
महिमा प्रभु को, हालेलुयाह

2. हम उसकी उद्धार के प्रेम के बीच खो गए
महिमा प्रभु को, हालेलुयाह
हर समय ही खोजते हैं हम अनुग्रह को
महिमा प्रभु को, हालेलुयाह

Worship of the Father - His Redemption

41

1. We are never weary singing our eternal
song:
Glory to God, hallelujah!
We would sing His praise forever with
our spirit strong: Glory to God,
hallelujah!

Chorus

O the children of the Lord have a
wondrous song to sing,
For the Lord will by His grace
many sons to glory bring.
We are going in that day to the
presence of the King: Glory to
God, hallelujah!

2. We are lost amid the rapture of
redeeming love: Glory to God,
hallelujah!
We are seeking every moment all its
grace to prove: Glory to God,
hallelujah!

3. हम जा रहे महिमा में जैसा कहा प्रभु ने;
महिमा प्रभु को, हालेलुयाह
जहाँ राजा का सौंदर्य है निहार्ने को
महिमा प्रभु को, हालेलुयाह

4. वहाँ गायेंगे अनुग्रह, दया का नव गान
महिमा प्रभु को, हालेलुयाह
हम सब वहाँ करेंगे स्तुति उद्धारकर्त्ता की
महिमा प्रभु को, हालेलुयाह

3. We are going on to glory as the Lord
has told:

Glory to God, hallelujah!

Where the King in all His beauty we
shall soon behold: Glory to God,
hallelujah!

4. There we'll sing His grace and mercy
in a glad new song: Glory to God,
hallelujah!

There we'll praise our glorious Savior
with the blessed throng: Glory to God,
hallelujah!

पिता की आराधना — पुत्रत्व में उसका अनुग्रह

19

1. दे स्तुति, खुदा पिता
आनंद करते सामने
अन्धेरे और मृत्यु से .
हम पुत्र कि कृपा में
वो जीया मानव जैसा
उजाले में ऊपर
तेरी भरपूर चाहत में
तेरे अनंत प्रेम में
2. उसका खुदा, और पिता
और हमारा तू है
और वो तेरा प्रिय है
हृदय का आनंद है
हम सब उसके आनंद में
बांटने को भाग और स्थान
जानने को तेरा प्रेम चाह
तेरे मुख का प्रकाश

Worship of the Father - His Grace in Sonship

48

1. We bless Thee, God and Father,
We joy before Thy face;
Beyond dark death for ever,
We share Thy Son's blest place.
He lives a Man before Thee,
In cloudless light above,
In Thine unbounded favor,
Thine everlasting love.
2. His Father and our Father,
His God and ours Thou art;
And He is Thy Beloved,
The gladness of Thy heart.
We're His, in joy He brings us
To share His part and place,
To know Thy love and favor,
The shining of Thy face.

3. तेरा प्रेम जो ढंके अब
ना ठंड बढ़े, घटे
उसमें है यह प्रेम केंद्रित
और उससे पाया प्रेम
उसमें तेरा प्रेम, महिमा
पाए उसमें विश्राम
कई पुत्र-भाई उसके
उसमें हम कितने धन्य

प्रभु की स्तुति – उसकी मानवता

20

1. प्रिय यीशु करते प्रेम हम
"स्त्री का बीज" तू बना
कुंवारी से ही आया तू
नाम दिया है मानव सा
तूने लिया मानव स्वभाव
मानवता से सर्प रौंदा
क्रूस से उसका सर है कुचला
और हुयी पुरी योजना

प्रभु हमने देखी
महिमा मानव रूप में
मानवता में प्रकट हुआ
पूर्ण वैभव के साथ

2. मानव रूप में देहधारण
लहू शरीर में आया
खत्म करने दुष्ट शैतान को
हमारी जगह आया
यीशु नाम दिया गया और
इममानुएल कहलाया
तू बना उद्धारकर्त्ता
हम तक लाए उद्धार सच्चा

3. Thy love that now enfolds us
Can ne'er wax cold or dim;
In Him that love doth center,
And we are loved in Him.
In Him Thy love and glory
Find their eternal rest;
The many sons-His brethren-
In Him, how near, how blest!

Praise of the Lord-His Humanity

62

1. Dear Lord Jesus, we adore Thee,
"Seed of woman" Thou became;
Of the virgin wast begotten,
Called e'en with a human name.
Taking thus the human nature,
Thou as man the serpent trod;
By the Cross his head Thou bruised
And fulfilled the plan of God.

Lord, we see Thy glory,
Shown in human beauty,
Full of splendor,
manifested in humanity.

2. As a man, by incarnation,
Flesh and blood didst Thou partake
To destroy the devil, Satan,
In our stead and for our sake.
With the name of Jesus given
And Emmanuel called too,
Thou becam'st our precious Savior,
Bringing us salvation true.

3. "अन्तिम आदम" से भी नामित
और कहा "दूसरा मानव"
नई सृष्टि में सिर तू ही
बेहतर पहले मानव से
इस धरती के जीवन में तू
वाकई मानव का पुत्र था
अब स्वर्ग में इस स्वभाव के साथ
तू अब भी मानव सा है

4. परमेश्वर निश्धारित समय
में तू आएगा प्रभु
पिता की महिमा के साथ
मानव सा प्रकट होगा
यहां तक कि न्याय गद्दी पर
मानव पुत्र ही रहेगा
और इसके साथ मानव स्वभाव
रहेगा सबका सदा

प्रभु की स्तुति — उसका नाम

21

1. कितना मधुर यीशु का नाम
लगता विश्वासी के कानों में
चंगा करता वो घावों को,
दुःख और भय दूर करता

2. घायल आत्मा को ठीक करता
व्याकुल मन को शान्ति देता
भूखे प्राण को मन्ना देता
और थके को विश्राम

3. प्रिय नाम, हमारा चट्टान
आश्रय, ढाल और छुपने का स्थान
न कोई कमी भण्डार में
भरता अनुग्रह अपार

3. Thou, "Last Adam" wast entitled,
And wast called the "second man",
Head of all the new creation,
Better than the first man.
On this earth in life and conduct
Thou indeed wast Son of man;
Now in heaven with this nature
Thou dost still appear as man.

4. In the time which God appointed
Thou wilt come, dear Lord, again,
With the glory of the Father,
Still appearing as a man.
Even on the throne of judgment
Son of man Thou still wilt be;
And with this, our human nature,
Thou forevermore wilt be.

Praise of the Lord - His Name

66

1. How sweet the Name of Jesus sounds
In a believer's ear!
It soothes his sorrow, heals his
wounds,
And drives away his fear.

2. It makes the wounded spirit whole,
And calms the troubled breast;
'Tis manna to the hungry soul,
And to the weary rest.

3. Dear Name! the Rock on which we
build;
Our shield and hiding-place;
Our never-failing treasury, filled
With boundless stores of grace.

4. यीशु उद्धारक, चरवाहा,
मित्र, नबी, याजक, राजा
प्रभु, जीवन, मार्ग, और अन्त
करो स्तुति स्वीकार

5. हमारे हृदय का बल कम
और ठण्डी हर जोशीली सोच
पर जब देखे जो तू है वो
तो स्तुति करना चाहे

6. तब तक उसके प्रेम की घोषणा
करेंगे हरएक साँसों से
विजय गायेंगे धन्य नाम की
जो मृत्यु पर प्रबल

4. Jesus, our Savior, Shepherd, Friend,
Our Prophet, Priest, and King;
Our Lord, our Life, our Way, our End,
Accept the praise we bring.

5. Weak is the effort of our heart,
And cold our warmest thought;
But when we see Thee as Thou art,
We'll praise Thee as we ought.

6. Till then we would Thy love proclaim
With every fleeting breath;
And triumph in that blessed Name
Which quells the pow'r of death.
(Repeat the last two lines of each stanza)

प्रभु की स्तुति – उसका नाम

22

1. यीशु के ही नाम पर
हर घटना झुके
जुबां गवाही दे
राजा महिमा का
वो है पिता का हर्ष
हम कहे प्रभु
जो है आदि से ही
शक्तिमान वाचन

2. उसके बोलसे सृष्टि
दृष्टि में प्रकट
सब स्वर्गदूतों का मुख
समूह ज्योति के
गद्दी और शासन
तारे रास्ते में
सारी स्वर्गिक आज्ञा
महान शृंखला में

Praise of the Lord - His Name

76

1. In the Name of Jesus
Every knee shall bow,
Every tongue confess Him
King of glory now;
'Tis the Father's pleasure
We should call Him Lord,
Who from the beginning
Was the Mighty Word.

2. At His voice creation
Sprang at once to sight:
All the angel faces,
All the hosts of light,
Thrones and dominations,
Stars upon their way,
All the heav'nly orders,
In their great array.

3. ऋतु में हुआ नम्र
 नाम कि प्रप्ति को
 पापियों के मुख से
 जिस के लिए वह आया
 सहने में विश्वासी रहा
 बेदाग आखरी तक
 लाया वापस विजयी
 मृत्यु से गुजर कर

4. उठाया वो जयवान सा
 मानव ज्योति सा
 सारी सृष्टि से ही
 मुख्यतः उँचा
 खुदा कि गद्दी तक
 पिता गोदतक
 भरा महिमा से वो
 वो पूर्ण शांति से

5. नाम दो भाइयों नाम दो
 मृत्यु सा प्रबल प्रेम से
 पर धाक और आश्चर्य से
 और स्वासों थाम कर
 वो है उद्धार खुदा
 वो मसीह प्रभु
 हमेशा आराधनीय
 विश्वस्त पुज्यित

6. हृदयों में बिठाओ
 जो भी ना हो सच
 वश में करने दो
 जो भी ना हो पवित्र
 बनाओ अपना कप्तान
 प्रलोभित समय में
 ज्योति बल में—उसकी
 इच्छा से ढाकने दे

3. Humbled for a season,
 To receive a Name
 From the lips of sinners
 Unto whom He came,
 Faithfully He bore it
 Spotless to the last,
 Brought it back victorious,
 When from death He passed;

4. Bore it up triumphant,
 With its human light,
 Through all ranks of creatures,
 To the central height;
 To the throne of Godhead,
 To the Father's breast,
 Filled it with the glory
 Of that perfect rest.

5. Name Him, brothers, name Him,
 With love strong as death,
 But with awe and wonder,
 And with bated breath;
 He is God the Savior,
 He is Christ the Lord,
 Ever to be worshiped,
 Trusted, and adored.

6. In your hearts enthrone Him;
 There let Him subdue
 All that is not holy,
 All that is not true;
 Crown Him as your Captain
 In temptation's hour;
 Let His will enfold you
 In its light and power.

7. भाइयों प्रभु येषु
 आएगा फिर वापस
 पिता कि महिमा से
 दूतगणों के साथ
 सारा धन राज्यों का
 उसकी ललाट पे
 दे हृदय गवाही
 राजा महिमा का

7. Brothers, this Lord Jesus
 Shall return again,
 With His Father's glory,
 With His angel train;
 For all wreaths of empire
 Meet upon His brow,
 And our hearts confess Him
 King of glory now.

प्रभु की स्तुति – उसका देहधारण

23

1. महिमा से आया वह
 कहानी जीवन का
 आया खुदा मेरा
 यीशु था नाम उसका
 जन्मा गौशाले में
 अपनो में बेगाना
 दुखों, अशकों और वेदना से भरा

कैसे मैं चाहूँ, कैसे निहारूँ
 मेरी श्वास, रोशनी, मेरा सब कुछ
 महान रचेता, बना उद्धारकर्त्ता
 खुदा की पूर्णता, बसे उसमें

2. कैसी रिहायत है,
 लाया उद्धार जब
 मौत के अंधेरे में
 आशा की ज्योत न थी
 रेहमद खुदा का
 त्यागा स्वर्ग को
 मेरे प्राण बचाने को मनुष्य बना

Praise of the Lord - His Incarnation

82

1. Down from His glory,
 Ever living story,
 My God and Savior came,
 And Jesus was His name.
 Born in a manger,
 To His own a stranger,
 A Man of sorrows, tears and agony.

O how I love Him! How I adore
 Him!
 My breath, my sunshine, my all
 in all!
 The great Creator became my
 Savior,
 And all God's fulness dwelleth
 in Him.

2. What condescension,
 Bringing us redemption;
 That in the dead of night,
 Not one faint hope in sight,
 God, gracious, tender,
 Laid aside His splendor,
 Stooping to woo, to win, to save my
 soul.

3. बिना संकोच के
लहू और मांस बना
पहन के मनावता
दिया गुप्त योजना
रहस्य महिमा का
क्लवरी पे कुर्बान
अब मैंने जाना, वह महान मैं हूँ

प्रभु की स्तुति – उसका कष्ट

24

1. गान मेरा प्रेम अनजान
उद्धारकर्ता का प्रेम
प्रेम दिया अप्रिय को
ताकि वो प्रिय बने
ओ कौन हूँ मैं
मेरे लिए
प्रभु लेगा
मांस और मरे ?
2. आया गद्दी से वो
उद्धार देने के लिए
पर मानव बना अनजान
ना ढूँढे मसीह ना ज्ञान
पर मेरे दोस्त
दोस्त वास्तव में
जो जरूरत में
दिया जीवन
3. कभी उसकी राह बिखेरते
मधुर स्तुति गए
गूँजे प्रतिदिन ही
होसना राजा को
फिर "चढ़ाओ!"
है उनके श्वास
और उसकी मौत
के लिए प्यासे, चीखें

3. Without reluctance,
Flesh and blood His substance
He took the form of man,
Revealed the hidden plan.
O glorious myst'ry,
Sacrifice of Calv'ry,
And now I know Thou art the great "I
AM."

Praise of the Lord - His Suffering

86

1. My song is love unknown,
My Savior's love to me;
Love to the loveless shown,
That they might lovely be.
O who am I,
That for my sake
My Lord should take
Frail flesh, and die?
2. He came from His blest throne
Salvation to bestow;
But men made strange, and none
The longed-for Christ would know:
But oh, my Friend,
My Friend indeed,
Who at my need
His life did spend.
3. Sometimes they strew His way,
And His sweet praises sing;
Resounding all the day
Hosannas to their King:
Then "Crucify!"
Is all their breath,
And for His death
They thirst and cry.

4. बड़े व चाह होगी
प्रिय प्रभु दूर करे
एक कातिल उसने बचा
मारा जीवन कुमार
फिर भी खुशी से
उसने दुख उठा
और करे बैरी
को बहां से मुक्त

5. जीवन में ना ही घर
प्रभु को पृथ्वी पर होगा
मौत में ना अच्छी कब्र
जो अजनबीदिया
क्या मैं कहूँ ?
स्वर्ग उसका घर
पर मेरा कब्र
जहां वो है

6. यहां रहूँ गाऊँ
कथा कोई ना दिव्य
कभी ना प्रेम, राजा
ना कोई खेद ऐसा
ये मेरा दोस्त
जिस के स्तुति में
मेरा हर दिन
बीते अच्छे

4. They rise and needs will have
My dear Lord made away;
A murderer they save,
The Prince of life they slay.
Yet cheerful He
To suffering goes,
That He His foes
From thence might free.

5. In life, no house, no home
My Lord on earth might have;
In death, no friendly tomb,
But what a stranger gave.
What may I say?
Heav'n was His home;
But mine the tomb
Wherein He lay.

6. Here might I stay and sing,
No story so divine;
Never was love, dear King,
Never was grief like Thine.
This is my Friend,
In whose sweet praise
I all my days
Could gladly spend.

प्रभु की स्तुति – उसका छुटकारा

25

1. खुदको बचा ना सका
कूस पर मरना जरूरी
या कृपा ना मिलें
ना कोई भी बचे
खून बहना आवश्यक पुत्र का
ताकि छुटकारा पापी को

Praise of the Lord - His Redemption

105

1. Himself He could not save,
He on the cross must die,
Or mercy could not come
To ruined sinners nigh;
Yes Christ, the Son of God, must
bleed,
That sinners might from sin be freed.

2. खुदको बचा ना सका
ताकि सबका न्याय हो
पाप हमारे गिरे
उसपे जो पापी ना
क्यूँकि कुछ कम ना ले खुदा
बदले में उस भयंकर ऋण के

3. खुदको बचा ना सका
वह ज़ामिन ठहरा
उनको जो निर्भर है
उसके ही लहू पर
उसने अपराध को उठा
जब क्रूस पे वह लहू बहा

4. खुदको बचा ना सका
कितना अद्भुत ये प्रेम
प्रेम में दिया उसने
कोई प्रेम वैसा ना
ऐसा प्रेम पिघलाये हृदय
जबतक बस उसको दु स्तुति

2. Himself He could not save,
For justice must be done;
Our sins' full weight must fall
Upon the sinless One;
For nothing less can God accept
In payment of that fearful debt.

3. Himself He could not save,
For He the Surety stood
For all who now rely
Upon His precious blood;
He bore the penalty of guilt
When on the cross His blood was
spilt.

4. Himself He could not save,
What wondrous love is this!
In love Himself He gave,
There ne'er was love like His!
Such love should melt a heart of stone,
Till praise flows forth to Him alone!

प्रभु की स्तुति – उसका छुटकारा

26

1. ना लहू ना वेदी
अब बलिदान खत्म
ना लौ, ना धुआँ उठे अब
मेमना अब ना कटे
समृद्ध लहू बहा श्रेष्ठ नसों से
धोने को पाप प्राणों से और फिर साथ
हर गन्दे दाग

Praise of the Lord - His Redemption

106

1. No blood, no altar now,
The sacrifice is o'er!
No flame, no smoke ascends on high,
The lamb is slain no more,
But richer blood has flowed from nobler
veins,
To purge the soul from guilt,
and cleanse the reddest stains.

2. धन्यवाद दिया खून
 खून उसका, खुदा पुत्र
 लहू जिससे शांतिबने
 उद्धार महान मिला
 बाहर लाए नरक, पाप और दुखों से
 ताकि वो अनंत जीवन खुदा हमे दे

2. We thank Thee for the blood,
 The blood of Christ, God's Son:
 The blood by which our peace is made,
 Redemption great is won,
 Delivering us from hell, and sin, and
 woe;
 That His eternal life God may to us
 bestow.

प्रभु की स्तुति – उसका छुटकारा

107

27

1. ना पशुओं का लहू
 वेदी पर जो कटे
 अंतरआत्मा को शांति दे
 या धोये इसके दाग

2. पर मसीह स्वर्गिक मेमना
 ले सारे पापों को
 बना उत्तम नाम का बलि
 और धनी खून उनसे

3. मेरा विश्वास उसके हाथ
 उस प्रिय सिर पे उसके
 मैं अनुतापी सा खड़ा
 और माने पापों को

4. प्राण मेरे देखे पीछे
 बोझ जो लिया तूने
 जब लटका उस शापित काठ पे
 जाने उसका पाप था

5. विश्वास हम आनंद करे
 देख के जो शाप हटा
 आनंदित आशीष मेमने का
 गायेंगे बहता प्रेम

1. Not all the blood of beasts,
 On Jewish altars slain,
 Could give the guilty conscience
 peace,
 Or wash away its stain.

2. But Christ, the heavenly Lamb,
 Takes all our sins away;
 A sacrifice of nobler name,
 And richer blood than they.

3. My faith would lay her hand
 On that dear head of Thine,
 While like a penitent I stand,
 And there confess my sin.

4. My soul looks back to see
 The burdens Thou didst bear
 When hanging on the cursed tree,
 And knows her guilt was there.

5. Believing, we rejoice
 To see the curse remove;
 We bless the Lamb with cheerful
 voice,
 And sing His bleeding love.

प्रभु की स्तुति – उसका छुटकारा

28

1. कितना अद्भुत छुटकारा,
मेरे कृपालु, प्रभु
ना देखा, सुना, ना जाना,
क्या तुमने किया हैं!
तू दिव्य और रहस्यमय,
श्रेष्ठ शब्दों से परे!
छुटकारा कितना आश्चर्य,
प्रशंसा से परे!
2. क्रूस पर बेधा मेरे लिए,
लहू और जल बहा;
दिव्य जीवन हमें दिया,
कि हम मुक्ति पाए,
अनमोल लहू ने साफ किया,
हम होंगे ग्रहण योग्य;
जीवन से नया जन्म पाया,
अब हम एक तेरे साथ।
3. तू दिव्य गेहूं जो मरा
कई गेहूं आये,
और जो मिलकर देह बन गई,
तेरे स्वभाव में भाग लें।
हम उसकी हैं बढ़ोतरी,
तू हैं हमारा सार;
हमारे द्वारा तू जीये
और प्रकट हो जाए।
4. हम तेरी देह, तू हम में आ
और हम में निवास कर;
हम में अपने घर को प्राप्त कर
कि भरोसा बनें।
हृदय को सन्तुष्ट करने को,

Praise of the Lord - His Redemption

116

1. How wonderful redemption is,
My gracious Lord, in Thee!
Not seen, nor heard, nor e'er conceived
What Thou hast done for me!
Thou art divine, mysterious,
Beyond my grandest phrase!
Redemption is so marvellous,
Beyond all pow'r to praise!
2. For us Thou on the Cross wast pierced,
And blood and water streamed;
That life divine be giv'n to us,
That we may be redeemed.
Thy precious blood has made us
clean,
That we accepted be;
Regenerated by Thy life,
We now are one with Thee.
3. Thou art the grain divine that died
The many grains to bear,
Which, blent and formed, Thy Body
are,
And all Thy nature share.
We are the increase of Thyself,
And Thou our content art;
Through us Thou livest and dost move
And manifested art.
4. Since we're Thy Body, Thou may come
And settle down in us;
In us Thou may obtain Thy home
And we become Thy trust.
Thy heart to satisfy and please,

हम तेरा प्रतिरूप,
तेरे साथ एक देह में हम,
सबको आनन्द करें।

We are Thy counterpart,
Now in one Body with Thyself,
Enjoying all Thou art.

5. तेरी याद में हम मिलते हैं
और देखते चिन्हों को,
महान छुटकारे के लिए
हम स्तुति से भरें।
हम बने तेरी देह, प्रभु,
निवासस्थान, दुल्हन,
हम करते हैं आराधना
और स्तुति में रहें।

5. While in remembrance now we meet
And here the symbols see,
For Thy redemption great and full
We're filled with praise to Thee.
Since we are made Thy Body, Lord,
Thy dwelling place and bride,
We would give thanks and worship
Thee
And in Thy praise abide.

प्रभु की स्तुति – उसका विजय

Praise of the Lord - His Victory

29

124

1. स्तुति स्तुति मसीह विजयी हैं
उसने जय को जीता हैं
पाप का न्याय, पूर्व आदम समाप्त,
पूर्ण छुटकारे को देखते
बुरी शक्ति परास्त हुई है,
क्रूस के द्वारा विजयी।
2. स्तुति मसीह पुनरुत्थित हैं
मुर्दों में से जिलाया
मौत की शक्ति निगल गई हैं
मानव जीवन में आया
टूट गया नरक, अन्धकार
बल को दिखाया गया।
3. स्तुति मसीह आरोहित हैं
उठ गया सिंहासन तक
सारी शक्तियों के ऊपर
उसका सर्व श्रेष्ठ नाम है
सब अधिकार प्राप्त करने को
जब तक शत्रु नाश न हो।

1. Praise Him! Praise Him! Christ is Victor!
He has won the victory!
Sin is judged, old Adam finished,
Full redemption now we see!
Vanquished all the evil powers
Thru the Cross triumphantly!
2. Praise Him! Christ is resurrected!
God hath raised Him from the dead!
All the pow'r of death is swallowed,
Man from death to life is led!
Broken through are hell and darkness
And His pow'r exhibited!
3. Praise Him! Christ hath now ascended!
God hath raised Him to the throne!
Far above all rule and power,
He the highest Name doth own!
All authority receiving
Till His foe is overthrown!

4. हालेलूयाह, मसीह विजयी हैं
कलवरी पर जय हुआ!
हालेलूयाह, पुनरुत्थित हैं,
अपने जय को दिखाया!
हालेलूयाह, अब आरोहित,
शासन करेगा सदा!

4. Hallelujah, Christ the Victor
Triumphed on Mt. Calvary!
Hallelujah, resurrected,
He displays His victory!
Hallelujah, now ascended,
He shall reign eternally!

प्रभु की स्तुति – उसकी प्रशंसा

30

1. सुनो दस हजार कहते
"खुदा के मेमने!" एक साथ
हजार हजार संत दोहराते
गुंजते स्वर को उठाते
2. स्तुति मेमने की सब करते
स्वर्ग में सब जमा होकर
जोर से दूर तक कहते रहते
गीत जो कभी खत्म न हो
3. सुखद धूप ऊपर को जाता
पिता के सिंहासन तक
घुटना झुकता यीशु में ही
हरेक मन स्वर्ग में एक है
4. पिता के दास दावा करते
बराबर आदर दे पुत्र को
सभी पुत्र से प्रकाश पाते
पिता की महिमा जानते
5. आत्मा के द्वारा सब फैलते
मेमने के चारो ओर
ज्योति की मुकूट पहनाते
पुकारते महान मैं हूँ

Praise of the Lord - His Exaltation

127

1. Hark! ten thousand voices crying,
"Lamb of God!" with one accord;
Thousand thousand saints replying,
Wake at once the echo'ng chord.
2. "Praise the Lamb!" the chorus waking,
All in heav'n together throng;
Loud and far each tongue partaking
Rolls around the endless song.
3. Grateful incense this, ascending
Ever to the Father's throne;
Every knee to Jesus bending,
All the mind in heav'n is one.
4. All the Father's counsels claiming
Equal honors to the Son,
All the Son's effulgence beaming,
Makes the Father's glory known.
5. By the Spirit all pervading,
Hosts unnumbered round the Lamb,
Crowned with light and joy unfading,
Hail Him as the great "I AM."

6. आनंदित अब नई सृष्टि
स्थिरी अब बधारहित
आशीषित पूर्ण उद्धार में
शोक और गुलामी गया

7. सुनो स्वर्गीय गान दुबारा
तेज सुरो से स्तुति गाते
सृष्टि की आमीन की गूंज पर
आनंद से उठकर कहते आमीन

प्रभु की स्तुति – उसकी प्रशंसा

31

1. देखो यीशु स्वर्ग में बैठा
मसीह प्रभु विराजमान;
मनुष्य की तरह प्रभु ऊँचा,
साथ खुदा के मुकुट पाया।

2. उसने मानव स्वभाव पहना
मरा खुदा की योजनानुसार
पुनरुत्थान में देह के साथ
आरोहित हुआ मानव जैसा।

3. खुदा उसमें पूर्ण नम्र था
मनुष्य के साथ निवास की;
मनुष्य ऊँचा उठाया गया,
मनुष्य खुदा का मेल हुआ।

4. वह खुदा मनुष्य साथ मिश्रित,
मनुष्य में गवाह ठहरा;
वह मनुष्य खुदा साथ मिश्रित,
मानव खुदा में महिमावित।

5. स्वर्ग में महिमावित की ओर से
सर्व-सम्मिलित आत्मा आया;
यीशु का कार्य और व्यक्ति
आत्मा घोषणा करता है।

6. Joyful now the new creation
Rests in undisturbed repose,
Blest in Jesus' full salvation,
Sorrow now nor thralldom knows.

7. Hark! the heavenly notes again!
Loudly swells the song of praise;
Through creation's vault, Amen!
Amen! responsive joy doth raise.

Praise of the Lord - His Exaltation

132

1. Lo! In heaven Jesus sitting,
Christ the Lord is there enthroned;
As the man by God exalted,
With God's glory He is crowned.

2. He hath put on human nature,
Died according to God's plan,
Resurrected with a body,
And ascended as a man.

3. God in Him on earth was humbled,
God with man was domiciled;
Man in Him in heav'n exalted,
Man with God is reconciled.

4. He as God with man is mingled,
God in man is testified;
He as man with God is blended,
Man in God is glorified.

5. From the Glorified in heaven
The inclusive Spirit came;
All of Jesus' work and Person
Doth this Spirit here proclaim.

6. स्वर्ग में महिमावित के साथ
कलीसिया भी एक हुई;
यीशु की आत्मा के द्वारा
उसके अंग सिद्ध हो गये।

7. देखो स्वर्ग में अब एक मनुष्य
सबका प्रभु विराजमान;
यह हैं यीशु उद्धारकर्ता,
महिमा मुकुट पहना हुआ।

प्रभु की स्तुति – उसकी महिमा

32

1. महिमा में प्रभु को निहारें
आराधना में झुके हृदय
वहां पढ़े अद्भुत कथा
क्रूस का – शर्म और विलाप

2. बदनामी के सारे दाग
कांटा ताज पहनाया
तेरा हृदय पूर्णतः खोदित
बोला उत्तर प्राप्त महिमा में

3. क्रूस पे अकेले ही परित्यक्त
थी ना कोई दयावान नैन
अब उठाया दाहिने हाथ तक
स्तुति से स्वर्ग गुंजित

4. क्या परमेश्वर तब भी त्यागा
छुपाया मुख जरूरत से ?
उसके बिगड़े रूप में
अब उसकी महिमा हम पढ़े

5. अवलोकन तेरा ही सदा कर
आशीषित अमूल्य प्रभु
तू मेम्ना है सिर्फ माननीय
यह धरती स्वर्ग को सहमति

6. With the Glorified in heaven
Is the Church identified;
By the Spirit of this Jesus
Are His members edified.

7. Lo! A man is now in heaven
As the Lord of all enthroned;
This is Jesus Christ our Savior,
With God's glory ever crowned!

Praise of the Lord - His Glory

136

1. Gazing on the Lord in glory,
While our hearts in worship bow,
There we read the wondrous story
Of the cross—its shame and woe.

2. Every mark of dark dishonor
Heaped upon the thorn-crowned brow
All the depths of Thy heart's sorrow
Told in ans'ring glory now.

3. On that cross, alone, forsaken,
Where no pity'ng eye was found;
Now, to God's right hand exalted,
With Thy praise the heavens resound.

4. Did Thy God e'en then forsake Thee,
Hide His face from Thy deep need?
In Thy face once marred and smitten,
All His glory now we read.

5. Gazing on it we adore Thee,
Blessed, precious, holy Lord;
Thou the Lamb, alone art worthy—
This be earth's and heaven's accord.

6. खोला हृदय आशीष पिता को
अविरत गान शुरु हुआ
अनंत स्तुति और आराधना
हो पिता और पुत्र की

6. Rise our hearts, and bless the Father,
Ceaseless song e'en here begun,
Endless praise and adoration
To the Father and the Son.

प्रभु की स्तुति — उसका प्रेम

Praise of the Lord - His Love

33

152

1. ओ कितना गहरा, कितना विशाल
तेरा प्रेम मेरे लिए!
मेरी सामर्थ से बहुत परे,
समुद्र से भी गहरा!
इसके लिए मृत्यु सही
स्वयं को हम में प्रदान किया,
कि मैं तुझमें लगाया जाऊँ
उसमें एक भाग बन जाऊँ।

1. O how deep and how far-reaching
Is Thy love, dear Lord, to me!
Far beyond my pow'r to fathom,
Deeper than the deepest sea!
It has caused Thee death to suffer
And to me Thyself impart,
That in Thee I might be grafted
And become of Thee a part.

2. कौन कह सकता सारे अद्भुत को
तेरा प्रेम हम में रचा,
इन सब से भी महान अद्भुत
है कि तू हम में आया।
ओ अपना प्रेम मुझे दिया
आप जो हैं मेरी पूर्ति;
सच्चा जीवन जैसे मैं बांटू
तेरी समृद्धि आनन्द करूँ।

2. Who can tell of all the wonders
Which Thy love for me has wrought,
Yet the greatest of these wonders
Is that Thou to me art brought.
Oh! To me Thy love has given
All Thou art as my supply;
As true life I now may share Thee
And Thy riches e'er enjoy.

3. प्रभु तेरा प्रेम प्रकट करता
प्यारी दिव्य स्वयं को,
जीवन को अर्थपूर्ण बनाया,
तेरे रूप में सुसंगत किया
जीवन की कृपा, सर्व पर्याप्त,
मेरा भाग दिन प्रति दिन;
मैं तेरी कृपा पात्र बना
तेरी मधुरता सदा चखता।

3. Lord, Thy love is the expression
Of Thy loving self divine,
Making life so full of meaning,
Harmonized with God's design.
Grace of life, how all-sufficient,
Is my portion day by day;
I'm the object of Thy favor
And Thy sweetness taste away.

4. कौन हमें अलग कर सकता?
 तू प्रेम करे अनन्तता तक!
 और तेरा प्रेम कितना प्रबल है
 तू मेरे साथ जुड़ गया है
 हम दो एक होंगे हमेंशा
 मैं तेरा और तू मेरा है
 यही होगी मेरी गवाही
 तेरे प्रेम में लिपटेंगे।

प्रभु की स्तुति – उसकी सुन्दरता

34

1. प्रभु यीशु लगे मन को प्यारा
 सोचूं जो मैं तुझे
 प्रिय उपस्थिति को मैं तरसु
 कि जल्द उठाया जाऊं

तू मंहदी के फूलों सा है सुन्दर
 दाख की बारी में खिलता
 तेरी खूबसूरती अतुलनीय
 तारीफ व प्रेम करे मन

2. कोई संगीत नहीं जो करे
 अनुग्रह की पूर्ण स्तुति
 न मन कोई जो आनंद करे
 तेरे प्रेम को हर पहलु में

3. मन को जो आनंदित करे
 वो प्रेम न ही अनुग्रह
 पर तेरा ही प्रेमपूर्ण जी
 संतुष्ट करता है सदा

4. What from Thee can separate me?
 Thou wilt love me to the end!
 Oh! Thy love is so prevailing,
 E'en Thyself with me to blend!
 We two one will be for ever;
 I am Thine and Thou art mine!
 This will be my testimony:
 In Thy love we'll ever twine!

Praise of the Lord - His Beauty

171

1. Lord Jesus Christ, our heart feels
 sweet
 Whene'er we think on Thee,
 And long that to Thy presence dear
 We soon might raptured be!

Lord, like the pretty henna-
 flower*,
 In vineyards blossoming Thou
 art;
 Incomp'able Thy beauty is,
 Admires and loves our heart!

2. There is no music adequate
 Thy grace in full to praise,
 Nor there a heart which could enjoy
 Thy love in every phase.

3. Yet, what delights our heart the most
 Is not Thy love, Thy grace;
 But it is Thine own loving Self
 That satisfies always.

4. तू सुन्दर से परम सुन्दर
मधुर से भी मीठा
स्वर्ग, धरा पर सिवा तेरे
चाहे न कुछ मेरा मन

4. Oh, Thou art fairer than the fair,
And sweeter than the sweet;
Beside Thee, none in heaven or earth
Our heart's desire could meet.

प्रभु की स्तुति – उसकी सर्व सम्मिलिता

Praise of the Lord - His All-Inclusiveness

35

189

1. तू ही सर्वप्रिय पुत्र
परमेश्वर का स्वरूप
तू ही संतो का प्रिय भाग
तेरे लहू से प्रदान
खुदा की सब सृष्टि में
तू ही है पहला पुत्र
तुझसे ही सबकी सृष्टि
सब तेरे लिए है

1. Thou art the Son beloved,
The image of our God;
Thou art the saints' dear portion,
Imparted thru Thy blood.
Among all God's creation
Thou art the firstborn One;
By Thee all was created,
All for Thyself to own.

2. तू पहले सब सृष्टि से
तुझ में सब रहता
सब का ही है तू केन्द्र
तुझसे ही सब निर्वाह
तू एकमात्र प्रारंभ
मृतकों में से पहला
देह, कलीसिया का
तू ही महिमामय सिर

2. Thou art before all creatures,
In Thee all things consist;
Of all Thou art the center,
By Thee all things subsist.
Thou art the sole beginning,
The Firstborn from the dead;
And for the Church, Thy Body,
Thou art the glorious Head.

3. पिता की प्रसन्नता तुझमें
परिपूर्णता वास करे
ताकि तेरा पहला स्थान
हो सब में जो दिखे
सबकुछ मिलाया तूने
खुदा तक, लहू से
कि करे प्रस्तुत हमें
पवित्र, निर्दोष उसको

3. Because it pleased the Father,
All fulness dwells in Thee,
That Thou might have the first place
In all we ever see.
All things Thou reconciledst
To God by Thy shed blood,
To thus present us holy
And blameless unto God.

4. तुझमें खुदा की पूर्णतः
तू खुदा का रहस्य
धन संपूर्ण ही समझ का
और ज्ञान तुझमें ही है
तू ही है महिमा की आशा
और हममें वास करता
और तुझमें हम सिद्ध होते
परमेश्वर संतुष्ट है

5. सब कुछ ही बस छाया है
जो हम को प्रकट हुई
तुझमें हम जड़ पकड़कर
एक जन जो सच्चा है
आनंद लेकर धनो का
होंगे तेरी पूर्णता
पकड़ेंगे, देह के रूप में
और बढ़ेंगे तेरे साथ

6. तेरे साथ खुदा में छुपे
तू ही हममें जीवन
शांति हममें राज्य करता
आराम अब दुखों से
नया मनुष्य, देह में
तू ही सब में सबकुछ
सर्वसम्मिलित उद्धारक
सदा हम पुकारेंगे

4. In Thee God's fulness dwelleth,
Thou art God's mystery;
The treasures of all wisdom
And knowledge are in Thee.
Thou art the hope of glory,
In us Thou dost abide;
In Thee we are perfected
And God is satisfied.

5. All things are but a shadow
Which unto us reveal
Thyself, in whom we're rooted,
The only One that's real.
Enjoying all Thy riches,
Thy fulness we will be;
We'll hold Thee, as Thy Body,
And grow with God in Thee.

6. With Thee in God we're hidden,
Thou art in us our life;
Thy peace in us presiding,
We rest from all our strife.
In the new man, Thy Body,
Thou art all in all;
Our all-inclusive Savior,
Thyself we'll ever call.

प्रभु की स्तुति – उसकी सर्व सम्मिलिता

36

Praise of the Lord - His All-Inclusiveness

190

1. हे प्रभु, जब विचारू तुझे
आराधना करू तेरी
तू है समृद्ध, कितना अद्भुत
कितना प्रिय और अनमोल

1. O Lord, as we consider Thee,
We worship Thee for all Thou art;
Thou art so rich, so wonderful,
So dear and precious to our heart.

जरूरतों को पूरी करता
हृदय स्तुति को उमड़ता
तू हमारी चाहतों के परे
और निरंतर संतुष्ट करे

What Thou art meets our every
need!
Our hearts o'erflow with praise to
Thee!
All our desires Thou dost exceed
And satisfy continually.

2. तू है सत्य में परमेश्वर
जो प्रेम और ज्योति दोनों है
जो हमारे लिए जीवन है
खुदा जिसमें प्रसन्न है
3. तू वाकई एक मनुष्य है
कितना बारीक, अच्छा और शुद्ध
मनुष्य जिसमें खुदा प्रसन्न है
रक्षा करे हमारा प्रेम
4. तू एक दीन हीन दास भी है
सेवा करता दास खुदा का
कूस की मृत्यु तक आज्ञाकारी
कि हम छुड़ाए जाएं
5. छोड़ इनको तू एक राजा है
जीवन और प्रेम में राज्य करता
सामर्थ के साथ अभिषिक्त है
हमारे साथ राज करने को
6. प्रिय प्रभु याद करूं तुझे
भाग लूं जो सबकुछ तू है
प्रेम में तुझको जब आनंद करूं
प्रतिरूप सा तुझे बांटूं

2. Thou art the very God in truth,
The God who is both love and light;
The God who is to us our life,
The God in whom we all delight.
3. Thou also art a man indeed,
A man so fine, so good, so pure;
A man in whom our God delights,
A man who can our love secure.
4. Thou even art a lowly slave,
A slave of God to serve for us;
Obedient to the cross's death
That we might be delivered thus.
5. Thou art, beside all these, a King,
A King in life and love to reign,
By God anointed with His pow'r
To rule with us in His domain.
6. Dear Lord, as we remember Thee,
We thus partake of all Thou art;
As we enjoy Thyself in love,
We share Thee as Thy counterpart.

1. पिता के गोद में, पूर्व
युग की शुरुआत हुई
तू पिता की महिमा में था
खुदा का एकलौता बेटा
जब पिता ने हमको दिया
व्यक्तित्व में तू समान था
पिता की सारी भरपूरी
आत्मा में घोषणा हुई।
2. उसकी मृत्यु पुनरुत्थान से
बना तू पहिलौटा पुत्र
उसका जीवन प्रदानता से
उसकी प्रतिलिपि बने
हम उसमें नया जन्म पाकर
खुदा के बहुत पुत्र बने
सच में उसके बहुत भाई
हम सब उसके समान हैं।
3. तू था एक गेहूँ का दाना
गिरा पृथ्वी पर मरने
उसकी मृत्यु पुनरुत्थान से
उसका जीवन हम में बढ़ता
हम लाये गये स्वभाव में
और बहुत गेहूँ बने
जैसे रोटी में सब मिलकर
भरपूरी की घोषणा करते।
4. हम सब उसके प्रतिरूप, हैं
उसकी प्रिय देह दुलिन
उसका प्रकटन, भरपूरी,
हमेशा बने रहते
हम सब उसके हैं विस्तार
उसका जीवन बढ़ता, फैलाव
उसकी बहुतायत बढ़ोतरी
उसके साथ महिमामय सिर।

1. In the bosom of the Father,
Ere the ages had begun,
Thou wast in the Father's glory,
God's unique begotten Son.
When to us the Father gave Thee,
Thou in person wast the same,
All the fulness of the Father
In the Spirit to proclaim.
2. By Thy death and resurrection,
Thou wast made God's firstborn Son;
By Thy life to us imparting,
Was Thy duplication done.
We, in Thee regenerated,
Many sons to God became;
Truly as Thy many brethren,
We are as Thyself the same.
3. Once Thou wast the only grain, Lord,
Falling to the earth to die,
That thru death and resurrection
Thou in life may multiply.
We were brought forth in Thy nature
And the many grains became;
As one loaf we all are blended,
All Thy fulness to proclaim.
4. We're Thy total reproduction,
Thy dear Body and Thy Bride,
Thine expression and Thy fulness,
For Thee ever to abide.
We are Thy continuation,
Thy life-increase and Thy spread,
Thy full growth and Thy rich surplus,
One with Thee, our glorious Head.

1. ओ यीशु यीशु प्यारे प्रभु
माफ करो यदि मैं कहूँ
तेरा नाम पवित्र और प्रेम
दिन में हजारों बार लूँ
हे प्रभु यीशु मुझमें बनों
करुं विश्राम जो मुश्किल पड़े
तेरी अनुग्रह मुस्कान है मेरा इनाम
मैं प्रेम, मैं प्रेम करुं
2. मैं प्रेम करुं न जाने क्यों
आवेग को कैसे रोकूँ
तेरा प्रेम है जैसे जलती लौ
मेरे प्राण के अंदर
3. तू मेरे लिए, सब में सब
मेरा सम्मान और मेरा धन
मेरे हृदय की चाह, देह का बल
मेरे प्राण का अनंत स्वास्थ्य
4. जल जल प्रेम मेरे हृदय में
जल भीषण दिन और रात
जब तक सारी संसारिक प्रेम
जल जल के होवे खाक
5. अंधकार में ज्योति, दुख में सुख
पृथ्वी पर स्वर्ग का जीवन
यीशु मेरा प्रेम और धन, कौन
बता सके तेरा मूल्य
6. क्या सीमा है इस प्रेम का?
तेरी उड़ान कहां ठहरे?
पास और दूर प्रभु है मधुर
कल से भी ज्यादा आज

1. O Jesus, Jesus, dearest Lord!
Forgive me if I say,
For very love, Thy sacred name
A thousand times a day.
O Jesus, Lord, with me abide;
I rest in Thee, whate'er betide;
Thy gracious smile is my reward;
I love, I love Thee, Lord!
2. I love Thee so I know not how
My transports to control;
Thy love is like a burning fire
Within my very soul.
3. For Thou to me art all in all;
My honor and my wealth;
My heart's desire, my body's strength,
My soul's eternal health.
4. Burn, burn, O love, within my heart,
Burn fiercely night and day,
Till all the dross of earthly loves
Is burned, and burned away.
5. O light in darkness, joy in grief,
O heaven's life on earth;
Jesus, my love, my treasure, who
Can tell what Thou art worth?
6. What limit is there to this love?
Thy flight, where wilt Thou stay?
On, on! our Lord is sweeter far
Today than yesterday.

1. उसी रात प्रभु यीशु
जब सब पास के जुड़े
हटाने को परछाई
पास पवित्र मन के
सुना उद्धारकर्त्ता को
“कि याद रखना मुझे”
आभारी हृदय से ही साथ
याद रखेंगे तुझे
2. सारे कष्टों की गहराई
हृदय ना रख सका
प्याला भर कोप बहे अब
पीया मेरे बदले
और खुदा से परिव्यक्त
शापित काठ के ऊपर
आभारी हृदय से यीशु
हम याद करते तुझे
3. सोचते उस अंधकार को हम
खत्म किया आत्मा ने
वो सारी लहरे हवाएं
जो आयी चारों ओर
ओ, वहां महिमा खुली
और पूर्ण प्रेम को देखा
आनंद और दुःख परस्पर
हम रखते याद तुझे
4. हम जानते तू जी उठा
मृतको से पहिलौटा
हम देखते तुझे चढ़ते
कलिसिया का सिर तू
तुझमें अनुग्रह पाया
हृदय और मन छुड़ा
सोचकर तेरे कष्टों को
हम करे याद तुझे

1. On that same night, Lord Jesus,
When all around Thee joined
To cast its darkest shadow
Across Thy holy mind,
We hear Thy voice, blest Savior,
“This do, remember me”,
With grateful hearts responding,
We do remember Thee.
2. The depth of all Thy suffering
No heart could e'er conceive,
The cup of wrath o'erflowing
For us Thou didst receive;
And, oh, of God forsaken
On the accursed tree;
With grateful hearts, Lord Jesus,
We now remember Thee.
3. We think of all the darkness
Which round Thy spirit pressed,
Of all those waves and billows,
Which rolled across Thy breast.
Oh, there Thy grace unbounded
And perfect love we see;
With joy and sorrow mingling,
We would remember Thee.
4. We know Thee now as risen,
The Firstborn from the dead;
We see Thee now ascended,
The Church's glorious Head.
In Thee by grace accepted,
The heart and mind set free
To think of all Thy sorrow,
And thus remember Thee.

5. तेरी महिमा में आने तक
और हमे बुलाने तक
रोशनी में विश्राम करने
उस पूर्ण खुले दिन में
दिखाते मृत्यु यीशु
और बनने की है चाह
तेरी मृत्यु में ढलते हैं
जब याद करते तुझे

प्रभु की स्तुति – उसकी याद में

40

1. यीशु प्रभु तू उपस्थित
तेरी बिछायी मेज पर
बैठे अमूल्य दावत में हम
झण्डा उंचा फहराता
तेरी मेज पर किमती समय
करे शंका, डर से मुक्त
यहां पर मधुर आराम है
अकेले तुझसे भरा
2. आनंद करते तेरे निकट
आत्मा की चलाई चलते
शांति में धन्य स्मरण करतें
तेरा लहू जो बहा
प्रभु लेते हर एक प्रतीक
तेरी प्रिय याद में
ध्यान करते टूटे शरीर पर
पेड़ जिस पर लहू बहा
3. ओ क्या आनंद तुझे देखना
इन सब चुने चिन्हों में
रोटी और दाख रस में जो
शक्ति और आनंद देता
देखो हम मिले इकसाथ
तू हमारा उदित सिर
तो लेते अशीष का प्याला
और बाँटते टूटी रोटी

5. Till Thou shalt come in glory,
And call us hence away,
To rest in all the brightness
Of that unclouded day,
We show Thy death, Lord Jesus,
And here would seek to be
More to Thy death conformed,
While we remember Thee.

Praise of the Lord - Remembrance of Him

215

1. Jesus, Lord, we know Thee present
At Thy table freshly spread,
Seated at Thy priceless banquet
With Thy banner overhead.
Precious moments at Thy table,
From all fear and doubt set free;
Here to rest, so sweetly able,
Occupied alone with Thee.
2. Here rejoicing in Thy nearness,
Gladly by Thy Spirit led;
Calmly in the blest remembrance
Of Thyself, Thy blood once shed.
Lord, we take each simple token
In fond memory of Thee,
Muse upon Thy body broken
And Thy blood shed on the tree.
3. Oh, what joy it is to see Thee,
In these chosen emblems here;
In the bread and wine of blessing—
Bread to strengthen, wine to cheer!
Lord, behold us met together,
One in Thee, our risen Head,
Thus we take the cup of blessing,
Thus we share the broken bread.

4. प्रभु सच्चा तेरा वादा
होना साथ जहां हम हो
जब प्यारे नाम में हम जुटे
मधुर एकता आनंद करते
प्रिय उस वादे की राह
देखे उत्सुक हृदय से
कि तेरे साथ होंगे प्रभु
हां हमेशा जहां तू

4. Lord, we know how true Thy promise
To be with us where we meet,
When in Thy loved name we gather
To enjoy communion sweet;
Dearer still that looked-for promise
To each waiting, yearning heart,
That with Thee we soon shall be, Lord,
Yes, "forever" where Thou art.

प्रभु की स्तुति – उसे याद करना

41

1. प्रभु धन्यवाद मेज के लिए
रोटी और दाखरस के साथ
दिव्य प्रेम के भोज के रूप में
तेरा आनन्द करते हैं
रोटी में भाग लेते जैसे
उसकी देह हमें दी गई
हम भाग लेते दाखरस में
जो हमारे लिए बहाया।

देखो, पवित्र मेज को
पवित्र चिन्हों के साथ
इसके महत्व प्रतिरूप में
अखोजनीय हैं!

2. छुटकारे की मृत्यु द्वारा
अपना जीवन प्रदान किया
तू ने अपने आप को दिया
कि हम उसको बांट सकें
रोटी और दाखरस के द्वारा
मृत्यु को प्रदर्शन करते
तुझे खाने पीने से हम
प्रेम के साथ याद करते हैं।

Praise of the Lord - Remembrance of Him

221

1. Lord, we thank Thee for the table,
With the bread and with the wine;
At this table we enjoy Thee
As the feast of love divine.
We partake the bread, the emblem
Of Thy body giv'n for us;
And we share the wine, the symbol

Of Thy blood Thou shedd'st for us.
Lo, the holy table!
With the sacred symbols;
Its significance in figure
Is unsearchable!

2. By the death of Thy redemption,
That Thy life Thou may impart,
E'en Thyself to us Thou gavest
That we share in all Thou art.
By the bread and wine partaking,
We Thy death display and prove;
Eating, drinking of Thyself, Lord,
We remember Thee with love.

3. तेरी एक रहस्यमय देह को
रोटी सूचित करती हैं
हम एक समान बन्धन में सब
उसके साथ एक होते हैं।
आशीष के प्याले के द्वारा
जिसे हम आशीष देते हैं।
सब विश्वासियों के साथ लहू
के द्वारा सम्मिलित हैं।

4. हमारा अनन्त भाग हैं तू?
पूर्वस्वाद को हम लेते हैं
इतजार करते राज्य का
आगमन शीघ्र करता
राज्य में तेरे आगमन में
सारे जयवन्तों के साथ।
नये ढंग से भोज करेंगे
प्यारी दुल्हिन बन जायेंगे।

प्रभु की स्तुति – उसे याद करना

42

1. क्या चमत्कार मेरे प्रभु
मैं तुझमें और तू मुझमें हैं
ताकि मैं और तुम सच में एक
क्या ही अद्भुत रहस्य हैं।
2. मेरे लिए देह को दिया
ताकि उसमें भाग ले सकूँ
मेरे लिए लहू बहा
ताकि मैं पाप से मुक्त हो जाऊँ।
3. पुनरुत्थान में आप का रूप
आत्मा की तरह बदल गया
ताकि मैं उससे भर जाऊँ
उसका सारा धन मेरा हो।

3. By this bread which signifieth
Thy one body mystical,
We commune with all The members
In one bond identical.
By this holy cup of blessing,
Cup of wine which now we bless,
Of Thy blood we have communion
With all those who faith possess.

4. Thou art our eternal portion,
Here we take a sweet foretaste;
We are waiting for Thy kingdom,
And Thy coming now we haste.
At Thy coming, in Thy kingdom,
With all saints that overcome,
We anew will feast upon Thee
And Thy loving Bride become.

Praise of the Lord - Remembrance of Him

233

1. O what a miracle, my Lord,
That I'm in Thee and Thou in me,
That Thou and I are really one;
O what a wondrous mystery!
2. For me Thy body Thou didst give,
That I may ever share in Thee;
For me Thy precious blood was shed,
That from my sins I might be free.
3. By resurrection Thou didst change
Thy form and as the Spirit come;
Thou wouldst that I be filled with Thee
That all Thy riches mine become.

4. चिन्ह के रूप हम देखते हैं,
नये सिर से आप का प्रेम
धन्यवाद तेरी इच्छा के लिए
हम आप की मेहनत याद करते।

5. खाते रोटी पीते दाखरस
मधुरता से हम भरते हैं
आत्मा में उसको ग्रहण करते
आत्मा से पोषण प्राप्त करते।

6. और खाना पीना चाहता हूँ
आप को हम आत्मा में लेते
जब तक उससे न भर जाए
और सच्ची तरह याद करें।

4. Now as the symbols we behold,
Thy loving self we see anew;
We thank Thee for Thy heart's desire
As all Thy travail we review.

5. We eat the bread and drink the wine,
And to Thy sweetness we are led;
In spirit each receiving Thee,
Our spirits with Thyself are fed.

6. We long to eat and drink e'en more,
To take Thyself in spirit thus,
Till Thou shalt all our being fill
And true remembrance have from us.

आत्मा की भरपूरी — सांस की तरह

43

1. हे प्रभु आत्मा फूंक मुझमें
मुझे सांस लेना सिखा
कि तेरी गोद में उण्डेलूँ
अहम् और पाप, जीवन की

अपने दुखों की सांस छोड़ता
अपने पाप छोड़ता
मैं सांस लेता, सांस लेता हूँ
भरपूरी अंदर

2. अपने जीवन की सांस छोड़ता
कि तुझसे मैं भर जाऊँ
कमजोरी को जाने देता
लेता तेरा जीवन दिव्य

3. पापी स्वभाव की सांस छोड़ता
तू सहा मेरे लिए
सांस लेता हूँ शुद्ध पूर्णता
तुझमें जीवन को पाता

Fulness of the Spirit - The Filling

255

1. O Lord, breathe Thy Spirit on me,
Teach me how to breathe Thee in;
Help me pour into Thy bosom
All my life of self and sin.

I am breathing out my sorrow,
Breathing out my sin;
I am breathing, breathing,
breathing,
All Thy fulness in.

2. I am breathing out my own life,
That I may be filled with Thine;
Letting go my strength and weakness,
Breathing in Thy life divine.

3. Breathing out my sinful nature,
Thou hast borne it all for me;
Breathing in Thy cleansing fulness,
Finding all my life in Thee.

4. अपने दुखों को सांस छोड़ता
तेरे स्नेही सीने पर
हर्ष, आराम की सांस लेता
लेता शांति और विश्राम

5. अपने रोगों को सांस छोड़ता
बोझ जो तूने उठाया
चंगाई को मैं सांस लेता
नया रहे सर्वदा

6. अपने आहों को सांस छोड़ता
तेरी सुनती कानों पर
सांस लेता जवाबों को मैं
जो संदेह, भय दूर करता

7. हर पलों को मैं सांस लेता
तुझसे मैं जीवन खींचता
हर सांस पर तुझमें मैं जीता
प्रभु, आत्मा फूंक मुझमें

आत्मा की भरपूरी — भरना

44

1. भर मुझे कृपा आत्मा से,
मेरे आत्मा की इच्छा भर;
अपनी पवित्र उपस्थिति में,
आ प्रभु और मुझे भर!

भर दे अभी! भर दे अभी!
अपनी आत्मा से भर मुझे!
छीन लो पूरा, कर दो खाली,
अपनी आत्मा से भर मुझे!

2. वह भरता अपनी आत्मा से,
कैसे भरता ना कह सकता;
पर मुझे हैं उसकी जरूरत;
आ प्रभु और मुझे भर!

4. I am breathing out my sorrow,
On Thy kind and gentle breast;
Breathing in Thy joy and comfort,
Breathing in Thy peace and rest.

5. I am breathing out my sickness,
Thou hast borne its burden too;
I am breathing in Thy healing,
Ever promised, ever new.

6. I am breathing out my longings
In Thy listening, loving ear;
I am breathing in Thy answers,
Stilling every doubt and fear.

7. I am breathing every moment,
Drawing all my life from Thee;
Breath by breath I live upon Thee,
Lord, Thy Spirit breathe in me.

Fulness of the Spirit - The Filling

267

1. Fill me with Thy gracious Spirit,
Fill my longing spirit now;
Fill me with Thy hallowed presence,
Come, dear Lord, and fill me now!

Fill me now! Fill me now!
Fill me with Thy Spirit now!
Strip me wholly, empty throughly,
Fill me with Thy Spirit now!

2. Thou can't fill me with Thy Spirit,
Though I cannot tell Thee how;
But I need Thee, greatly need Thee;
Come, dear Lord, and fill me now!

3. मैं कमजोर हूँ पूरा कमजोर;
आपके पावन पाँव टेंकू;
अपनी अनन्त आत्मा के द्वारा,
सामर्थ के साथ भर दे मुझे!

4. साफ करों मुझे दो आशीष;
भर दे टूटी आत्मा को!
आप करते हैं हमें सन्तुष्ट,
मधुरता से भरता अभी।

3. I am weakness, full of weakness;
At Thy sacred feet I bow;
By Thy blest, eternal Spirit,
Fill with strength, and fill me now!

4. Cleanse and comfort, bless and save
me;
Fill my broken spirit now!
Thou art comforting and saving,
Thou art sweetly filling now.

आत्मा की भरपूरी – कूस के द्वारा

45

1. प्रभु शुद्ध कर लहू से
मेरे सब पाप धो
पवित्र आत्मा से ही
मुझे अभिषेक कर
मेरी सेवा, मैं मानता
पराजय और कमजोर
तेरी आत्मा का भरना
मांगता जीने हेतु

ओ ! खुद से मुझे मुक्त कर
और उसकी दुर्गति से
कि अब मैं हमेशा ही
भरा रहूँ तुझसे

2. कितना सूखा मेरा दिल
तेरे लिए तरसता
तेरी आत्मा का भरना
है बस मेरी चाहत
तेरी चट्टान के अंदर
प्रभु मैं छुप जाऊँ
उंडेलो जीवन जल को
जब तक संतुष्ट ना हो

Fulness of the Spirit - By the Cross

280

1. Lord, may Thy blood now cleanse me,
Wash all my sins away,
That with Thy Holy Spirit
Thou may anoint, I pray.
My service, I confess, Lord,
Is failure-full and weak;
The filling of Thy Spirit
To live for Thee I seek.

Oh, from myself deliver,
From all its misery;
I'd henceforth be forever
Completely filled with Thee.

2. Oh, Lord, how dry my heart is,
It yearns and pants for Thee;
The filling of Thy Spirit
Is now my fervent plea.
Within the smitten Rock, Lord,
I would entirely hide;
Pour thru Thy living water,
Till I am satisfied.

3. मेरा मन कितना ठंडा
धीमा आज्ञा मानने में
तो भर अपनी आत्मा से
मैं न विद्रोह करूँ
पड़ा तेरी वेदी पर
और मैं ना हट सकूँ
ओ, तेरी ज्वाला आए
नष्ट कर मेरा सबकुछ

4. ओ, तेरा क्रूस जो मुझमें
करे काम और जले
विस्तार करें तेरी मात्रा
और बदले राखों में
ओ, भर दे अपनी आत्मा
प्रतिदिन और अधिक
और तेरे जीवन का जल
मुझ पर, मुझसे बहे

**उद्धार की सुनिश्चितता और आनन्द –
प्रभु द्वारा प्रेम किया जाना**

46

1. आओ करे आनंद
पहले हृदय दीन था
और मैंने पाया खजाना
प्रेम का, असीम संग्रह
2. आओ करे आनंद
पहले मन रोगी था
मिला उससे जो जाने दुःख
और जाने चंगाई
3. आओ करे आनंद
पहले दुखी कलांत था
और मैंने पाया बलवंत हाथ
जो थामे हमेशा

3. How cold my heart has been, Lord,
How slow obeying Thee;
So fill me with Thy Spirit,
I'll ne'er rebellious be.
I lie upon Thy altar
And dare not move away;
Oh, may Thy flame descending
Consume my all, I pray.

4. Oh, may Thy Cross within me
Deepen its work and burn,
In me enlarge Thy measure,
And me to ashes turn.
Oh, may Thy Spirit fill me
Each day more than before,
And may Thy living water
On me and thru me pour.

**Assurance and Joy of Salvation -
Loved by the Lord**

285

1. Come and rejoice with me!
For once my heart was poor,
And I have found a treasury
Of love, a boundless store.
2. Come and rejoice with me!
I, once so sick at heart,
Have met with One who knows my
case,
And knows the healing art.
3. Come and rejoice with me!
For I was wearied sore,
And I have found a mighty arm
Which holds me evermore.

4. आओ करे आनंद
पहले भटकता था
और एक लाया उन सब से दूर
पाने को घर उसमें

5. आओ करे आनंद
मैंने पाया एक दोस्त
जो जाने मन की गहराई
तब भी करे बस प्रेम

6. मैं ना जाना वो प्रेम
वो प्रेम करता रहा
प्रेम के साथ सच्चा और गहरा
बहुत नर्म और बलवान

7. और अब मैं जानूं सब
सुनी जानी आवाज
और सुनु उसे प्रतिदिन
हूँ मैं पूर्ण आनंदित

4. Come and rejoice with me!
My feet so wide did roam,
And One has brought me from afar,
To find in Him my home.

5. Come and rejoice with me!
For I have found a Friend
Who knows my heart's most secret
depths,
Yet loves me without end.

6. I knew not of His love;
And He had loved so long,
With love so faithful and so deep,
So tender and so strong.

7. And now I know it all,
Have heard and known His voice,
And hear it still from day to day.
Can I enough rejoice?

**उद्धार की सुनिश्चितता और आनन्द - Assurance and Joy of Salvation -
प्रभु द्वारा प्रेम किया जाना Loved by the Lord**

47

1. यीशु, यीशु, यीशु
सबसे मधुर नाम
कैसे मुझसा पापी
जाने उसका मूल्य ?

2. ओह ! ये पाप भरा दुःख
ओह ! ये अजीब शर्म
ना देखा सुन्दरता
उस पावन नाम में

287

1. Jesus, Jesus, Jesus!
Sweetest Name on earth,
How can I, a sinner,
Come to know its worth?

2. Oh! the sinful sorrow,
Oh! the strangest shame,
That I saw no beauty
In that sacred Name.

3. चखा ना मधुरता
ना जाना कृपा
ना देखा प्यार का दर्द
उस घायल मुख पे

4. ना मिला रहस्य
सरल वचन में —
यीशु, यीशु, यीशु
रक्षक, प्रेमी, प्रभु

5. अब वो सब बीत गया
मेरा दुःख व शर्म
यीशु, ने ही करा
महिमा, उसके नाम

6. अद्भुत दया भाव
आए मुझ तक भी
नमन मेरी आत्मा
अधीनता में

7. यीशु, यीशु, यीशु
करा प्रेम बदनामी में
उठाए जाने की आनंद
उस पावन नाम का

3. Never felt the sweetness!
Never knew the grace,
Never saw the love-pain
In that wounded face!

4. Never found the mystery
In that simple word—
Jesus, Jesus, Jesus,
Savior, Lover, Lord.

5. Now 'tis past and over.
Gone my guilt and shame;
Jesus, Jesus did it,
Glory to His Name!

6. Wonderful compassion,
Reaching even me;
Bows my humbled spirit
In captivity.

7. Jesus! Jesus! Jesus!
Loved me in my shame.
Oh! the joy and rapture
Of that sacred Name.

उद्धार की सुनिश्चितता और आनन्द — परमेश्वर से मेल

48

1. संपूर्ण शांति खुदा के साथ
ओ क्या वचन है ये !
पापी का मेल हुआ खून से
हां, है यही शांति

Assurance and Joy of Salvation - Reconciled to God

299

1. A mind at perfect peace with God;
O what a word is this!
A sinner reconciled through blood;
This, this indeed is peace.

2. स्वभाव से और अभ्यास से दूर
खुदा से दूर इतना
कृपा से लाया उसके पास
लहू पर विश्वास से

3. पास, बहुत ही पास खुदा के
मैं ना आ पाऊँ पास
उसके पुत्र के व्यक्ति में
मैं पास जितना पास वो

4. प्रिय, बहुत ही प्रिय खुदा को
प्रिय और ना हो सकूँ
प्रेम जिससे पुत्र को करा प्रेम
वैसे मेरे लिए भी

5. क्यों मैं कभी व्याकुल होऊ
जब ये खुदा मेरा ?
वो देखे दिन और रात मुझे
कहे मैं हूँ यीशु का ही

2. By nature and by practice far,
How very far from God;
Yet now by grace brought nigh to Him,
Through faith in Jesus' blood.

3. So nigh, so very nigh to God,
I cannot nearer be;
For in the person of His Son
I am as near as He.

4. So dear, so very dear to God,
More dear I cannot be;
The love wherewith He loves the Son,
Such is His love to me.

5. Why should I ever anxious be,
Since such a God is mine?
He watches o'er me night and day,
And tells me "Mine is thine."

उद्धार की सुनिश्चितता और आनन्द - लहू द्वारा छुड़ाया जाना

49

1. मैं हूँ यीशु का ही
मैं अपना नहीं
जो मेरा और जो मैं हूँ
है बस उसका ही

2. मैं हूँ यीशु का ही
वो प्रभु राजा
राज्य करता हृदय में
हमारा सबकुछ

Assurance and Joy of Salvation - Redeemed by the blood

306

1. I belong to Jesus;
I am not my own;
All I have and all I am
Shall be His alone.

2. I belong to Jesus;
He is Lord and King,
Reigning in my inmost heart
Over everything.

3. मैं हूँ यीशु का ही
क्या दे दर्द और कष्ट
जब वो मेरे प्राणों को
बाहों में लेते है

4. मैं हूँ यीशु का ही
आशीषित धन्य विचार!
उसके अमूल्य लहू से
किया प्राण को प्राप्त

5. मैं हूँ यीशु का ही
मेरे लिए मरा
मैं उसका और वो मेरा
अनंतता तक

6. मैं हूँ यीशु का ही
वो रखेगा प्राण
अगर मृत्यु का पानी
घेरेगा मुझे

7. मैं हूँ यीशु का ही
रहूँगा यहां
मेरे उद्धार कर्त्ता के साथ
राज्याधिकार में

3. I belong to Jesus;
What can hurt or harm,
When He folds around my soul
His almighty Arm?

4. I belong to Jesus;
Blessed, blessed thought!
With His own most precious blood
Has my soul been bought.

5. I belong to Jesus;
He has died for me;
I am His and He is mine
Through eternity.

6. I belong to Jesus;
He will keep my soul,
If the deathly waters dark
Round about me roll.

7. I belong to Jesus;
And ere long I'll be
With my precious Savior there
In His royalty.

उद्धार की सुनिश्चित और आनन्द – आत्मा से जन्म

50

Assurance and Joy of Salvation - Freed by the Lord

308

1. धन्य आश्वासन यीशु मेरा
दिव्य तेज का ये क्या ही पूर्व स्वाद
उद्धार का वारिस, खुदा का मोल
आत्मा से जन्मा, खून में धुला

1. Blessed assurance, Jesus is mine;
Oh, what a foretaste of glory divine!
Heir of salvation, purchase of God,
Born of His Spirit, washed in His blood.

ये मेरी कथा, ये मेरा गीत
करुं मैं स्तुति उद्धारकर्त्ता की
ये मेरी गाथा, ये मेरा गीत
स्तुति करुं मैं जिन्दगी भर

This is my story, this is my song,
Praising my Savior all the day
long.
This is my story, this is my
song,
Praising my Savior all the day
long.

2. सम्पूर्ण अधीनता, पूर्ण आनंद
उठा ले जाने का दर्शन मुझमें
स्वर्गदूत उतरते, स्वर्ग से लाते
दया की गूँजन, प्रेम की भेंटे
3. सम्पूर्ण अधीनता, विश्राम में है
खुश और आशीषित हूँ मैं उसमें
रुकता और देखता उपर ताकता
भलाई में डूबा, प्रेम में खोया

2. Perfect submission, perfect delight,
Visions of rapture now burst on my
sight;
Angels descending, bring from above
Echoes of mercy, whispers of love.
3. Perfect submission, all is at rest,
I in my Savior am happy and blest;
Watching and waiting, looking above,
Filled with His goodness, lost in His
love.

उद्धार का सुनिश्चित और आनन्द – प्रभु से खिलाया जाना

Assurance and Joy of Salvation - Freed by the Lord

310

51

1. एक बार बन्धा था पाप के बन्धन में,
दास था व्यर्थ थी कोशिश मेरी;
पर मैंने पाई अद्भुत मुक्ति,
यीशु ने तोड़ी बेड़ी मेरी।

महिमामय मुक्ति, अद्भुत मुक्ति,
पाप के बंधन में, मैं न रहूँ
यीशु हैं महत्व मुक्तिदाता,
सदा उसे मैं अपना कहूँ।

1. Once I was bound by sin's galling
fettters,
Chained like a slave I struggled in vain;
But I received a glorious freedom,
When Jesus broke my fetters in twain.

Glorious freedom, wonderful
freedom,
No more in chains of sin I repine!
Jesus the glorious Emancipator,
Now and forever He shall be
mine.

2. दैहिक प्रेम से मिली हैं मुक्ति,
मुक्ति द्वेष, इर्ष्या, और झगड़ों से;
संसार की इच्छाओं से मुक्ति है,
मुक्ति सब प्राण के दुखदाईयों से।

3. गर्व और पापमय जीवन से मुक्ति,
मुक्ति सोने के प्रेम व चाह से;
दुष्ट गुस्सा और क्रोध से हैं मुक्ति,
गौरवी मुक्ति अपार सबसे।

4. छलके सारे भयों से हैं मुक्ति
मुक्ति वेदना की चिंताओं से;
यीशु मुक्तिदाता में है मुक्ति,
आज़ाद वह करता बेड़ियों से।

2. Freedom from all the carnal affections,
Freedom from envy, hatred and strife;
Freedom from vain and worldly
ambitions,
Freedom from all that saddened my
life.

3. Freedom from pride and all sinful
follies,
Freedom from love and glitter of gold;
Freedom from evil temper and anger,
Glorious freedom, rapture untold.

4. Freedom from fear with all of its
torments
Freedom from care with all of its pain;
Freedom in Christ my blessed
Redeemer,
He who has rent my fetters in twain.

उद्धार का सुनिश्चित और आनन्द — अनुग्रह से बचना

52

1. प्रिय यीशु, तू मेरा
कितना मीठा खयाल
फिर से कहूँ ये नाम
उठाऊ मन तुझ तक
मेरा, मेरा, मेरा
मैं जानूँ तू मेरा
यीशु, प्रिय, यीशु
मैं जानूँ तू मेरा

2. तू पापी का है दोस्त
तो मैं मांगू दोस्ती
बचा कृपा से मैं
जब सुना ये संदेश

Assurance and Joy of Salvation - Saved by Grace

317

1. Dear Savior, Thou art mine,
How sweet the thought to me;
Let me repeat Thy name,
And lift my heart to Thee.
Mine! Mine! Mine!
I know Thou art mine;
Savior, dear Savior,
I know Thou art mine.

2. Thou art the sinner's friend,
So I Thy friendship claim,
A sinner saved by grace,
When Thy sweet message came.

3. कठोर मन को छुआ
जब सुना तेरा स्वर
आनंद शांति आती
जब सुनता वचन को

4. गाऊँ तेरी स्तुति
कहूँ तुझे मेरा
कोई संदेह नहीं
मैं जानु मैं तेरा

उद्धार का सुनिश्चित और आनन्द — मसीह से संतुष्ट

53

1. कई साल झरने को व्यर्थ मैं खोजा,
जो कभी सुख ना सकें
जो कुछ धरती से मिला, सब निष्फल था,
कुछ भी तृप्त नहीं करता

पीते हैं झरने से, जो सुखता नहीं
पीते हैं जीवन के झरने से
बहुतायत से हम
हर्ष और खुशी पाते,
हम पीते जीवन के झरने से

2. पाप की मरभुमि में अब ना भटकूँ
जीवन के झरने को पाया
मेरा हर्ष का प्याला उमड़ रहा है
यीशु मेरा राजा प्रभु।

3. My hardened heart was touched;
Thy pard'ning voice I heard;
And joy and peace came in
While list'ning to Thy word.

4. So let me sing Thy praise,
So let me call Thee mine.
I cannot doubt Thy word,
I know that I am Thine.

Assurance and Joy of Salvation - Satisfied with Christ

322

1. Many weary years I vainly sought a
spring,
One that never would run dry;
Unavailing all that earth to me could
bring,
Nothing seemed to satisfy.

Drinking at the Fountain that
never runs dry,
Drinking at the Fountain of life
am I;
Finding joy and pleasure
In abounding measure,
I am drinking at the Fountain of
life.

2. Through the desert land of sin I roam
no more,
For I find a living Spring
And my cup of gladness now is running
o'er,
Jesus is my Lord and King.

3. है यहाँ मधुर सन्तुष्टि हर एक दिन
है पवित्र शान्ति आराम
मिलता है हर पल आश्वासन यहाँ
हृदय आशीषित है यहां।

3. Here is sweet contentment as the days
go by,
Here is holy peace and rest;
Here is consolation as the moments
fly,
Here my heart is always blest.

4. पाया मैंने यहाँ अनन्त पूर्ति को,
जबकी युग बितते हैं
चंगाई के झरने को मैं जाऊँगा
थकें प्राण को धोऊँगा।

4. Here I find a never ending, sure supply,
While the endless ages roll;
To this healing Fountain I would ever
fly,
There to bathe my weary soul.

उद्धार का सुनिश्चित और आनन्द — मसीह से संतुष्ट

Assurance and Joy of Salvation - Satisfied with Christ

54

324

1. दूर से एक शोर है जो मेरे कानों में पड़ती
है,
मालूम पड़ा कि पृथ्वी की पाप, हर हाथ घेरे
हैं;
शोक और डर और पृथ्वी की व्यर्थ चीज़ मुझे
पूकारती,
पर मसीह की भूमि से हटा न पायेगी।

1. Far away the noise of strife upon my
ear is falling,
Then I know the sins of earth beset on
every hand;
Doubt and fear and things of earth in
vain to me are calling,
None of these shall move me from
Beulah Land.

पहाड़ों पर जीता हूँ, रहता अंबर तले,
सोते से पीता हूँ जो कभी न सूखे,
ओ हाँ मैं तो खाता हूँ मन्ना, बहुतायत
के दान से,
कि मैं तो रहता हूँ मसीह की भूमि पर

I'm living on the mountain,
underneath a cloudless sky,
I'm drinking at the fountain that
never shall run dry;
O yes, I'm feasting on the manna
from a bountiful supply,
For I am dwelling in Beulah Land.

2. दूर खड़ी संदेह की तूफान थपेड़ती है
संसार को
मनुष्यो के पुत्र, लंबे युद्ध में, शत्रु को
रोकते
परमेश्वर के वचन के गढ़ में, मैं तो हूँ
सुरक्षित
कुछ भी न मुझ तक पहुँचे, इस भूमि पर

3. तूफानी ठंडी हवा मुझको न डरा सकती
है
मुझको तो परमेश्वर के, हाथों ने थामा
है
सूर्य हमेशा है चमकता, कुछ न चोट
पहुँचाता है
मैं हमेशा सुरक्षित मसीह की भूमि में

4. देख परमेश्वर के कार्य को मैं तो सोच
में डूबा जाता
सुन आवाज उसकी मैं योजना को
देखता हूँ
रह आत्मा में, पूर्ण उद्धार को उसके, ये
मैंने ने सीखा
मग्न होकर रुकूँगा, मसीह की भूमि में

2. Far below the storm of doubt upon the
world is beating,
Sons of men in battle long the enemy
withstand;
Safe am I within the castle of God's
word retreating,
Nothing then can reach me, 'tis Beulah
Land.

3. Let the stormy breezes blow, their cry
cannot alarm me,
I am safely sheltered here, protected
by God's hand;
Here the sun is always shining, here
there's naught can harm me,
I am safe forever in Beulah Land.

4. Viewing here the works of God, I sink
in contemplation,
Hearing now His blessed voice, I see
the way is planned;
Dwelling in the spirit, here I learn of
full salvation,
Gladly will I tarry in Beulah Land.

चाह— मसीह के लिए

55

1. ज्योतियों के ज्योति चमक
हटा पापों की रात
ला दीन अंतर मन में
ज्योतियों की ज्योति चमक
ज्योति, बढ़ हर ज्योति से
हृदय को बना घर
ओ आनंद, हटे सब दुःख
छोटे हृदय में आ

Longings - For Christ

359

1. O Light of light, shine in!
Cast out this night of sin,
Create true day within:
O Light of light, shine in!
O Light, all light excelling,
Make my heart Thy dwelling;
O Joy, all grief dispelling,
To my poor heart come in!

2. खुशियों की खुशी आ
अंत कर पापों दुख
बना शांति अन्दर
खुशियों की खुशी आ
3. जीवन का जीवन आ
हटा इस मृत पाप को
जगा सच्चा जीवन
जीवन का जीवन आ
4. प्रेमो का प्रेम बह अंदर
ये दुष्ट पापों की जड़
निपट और नवीन कर
प्रेमो का प्रेम बह अब
5. स्वर्गो का स्वर्ग उतर
इस पर्दा को फाड़ो
धरती का दुःख को खत्म
स्वर्गो का स्वर्ग उतर
6. खुदा प्रभु अब आ
हर्ष और सार का हर्ष
हृदय को तू घर बना
खुदा प्रभु अब आ

चाह— मसीह के लिए

56

1. ओ अनंत ज्योति
चमके अन्दर मन में
उज्ज्वलता से पृथ्वी पर चमक
आ, चमका पापों को
2. ओ अनंत सत्य
सत्य हर सत्य से
सच्चा मार्ग तू पापी युग में
ले चल और सीखा भी

2. O Joy of joys, come in!
End Thou this grief of sin,
Create calm peace within:
O Joy of joys, come in!
3. O Life of life, pour in!
Expel this death of sin,
Awake true life within:
O Life of life, pour in!
4. O Love of love, flow in!
This hateful root of sin
Deal with, renew, within:
O Love of love, flow in!
5. O Heaven of heavens, descend!
This cloudy curtain rend,
And all earth's turmoil end:
O Heaven of heavens, descend!
6. My God and Lord, O come!
Of joys the Joy and Sum,
Make in this heart Thy home:
My God and Lord, O come!

Longings - For Christ

360

1. O Everlasting Light,
Shine graciously within;
Brightest of all on earth that's bright,
Come, shine away my sin.
2. O Everlasting Truth,
Truest of all that's true,
Sure guide of erring age or youth,
Lead me, and teach me too.

3. ओ अनंत शक्ति
उठा मुझे राह में
मुझे ले इस पापी युग से
आनंद, उजले दिन तक

4. ओ तू अनंत प्रेम
अनुग्रह शांति स्रोत
उण्डेल स्वर्ग से अपनी पूर्णता
सारी शंका हटा

5. ओ अनंत आराम
उठा बोझ जीवन का
आराम अब, ले तू इस भार को
और हर दुःख उठाएँ

6. तू स्वर्ग में मेरा सब
धरती पे है तू सब
तेरा महिमामय नाम कहे
प्रभु तू दे आशीष

3. O Everlasting Strength,
Uphold me in the way;
Bring me, in spite of foes, at length
To joy and light of day.

4. O Everlasting Love,
Wellspring of grace and peace,
Pour down Thy fulness from above,
Bid doubt and trouble cease.

5. O Everlasting Rest,
Lift off life's load of care;
Relieve, revive this burdened breast
And every sorrow bear.

6. Thou art in heaven our all,
Our all on earth art Thou;
Upon Thy glorious Name we call,
Lord Jesus, bless us now.

चाह— मसीह के लिए जीवन की तरह

57

1. यीशु मेरा जीवन तू ही
लू पवित्र आत्मा को
मेरी खाली चाह क्रुसीकृत
कर अपनी मृत्यु में
2. जीता नरक, धरती और पाप
अभी भी बागी साथ
आ प्राणों में कर काम अन्दर
मार और जीवित कर
3. तेरा जीवन और मेरे पास
जैसे मरा आदम
उद्धारकर्त्ता दे मृत्यु अब
ताकि उदूँ साथ साथ

Longings - For Christ as Life

364

1. Jesus, my life, Thyself apply;
Thy Holy Spirit breathe;
My vile affections crucify;
Conform me to Thy death.
2. Conqu'ror of hell and earth and sin,
Still with the rebel strive;
Enter my soul and work within,
And kill and make alive.
3. More of Thy life, and more I have,
As the old Adam dies;
Bury me, Savior, in Thy grave,
That I with Thee may rise.

4. मुझमें प्रभु तेरा सब
कौन ना चाहे राज्य
तेरा स्वरूप दे प्राणों में
चमके संपूर्ण दिन तक
5. हटा दे बचे पापों को
मुझे छाप अपने साथ
बना महिमामय अन्दर से
खुदा निर्मित मंदिर

4. Reign in me, Lord; Thy foes control,
Who would not own Thy sway;
Diffuse Thine image through my soul;
Shine to the perfect day.
5. Scatter the last remains of sin,
And seal me Thine abode;
O make me glorious all within,
A temple built by God!

चाह— मसीह के लिए जीवन की तरह

Longings - For Christ as Life

58

365

1. यीशु जीवन मेरा
बसे मुझमें सदा
और मैं देखूँ
कि अलग ना करे
जीवन मुझमें
2. जीवन मुझसे दिखे
प्रभु अब मैं दुदू
सोचूँ बोलु
बस तेरी सोच वचन
अपना कुछ ना
3. प्रेम आनंद और शांति
आये अंदर पूर्णतः
हृदय में अब
सोता जो सूखे ना
पर बस बड़े
4. महिमावित सच्चाई
पुनरुत्थान की शक्ति
कलीसिया भेंट
जीवन अधिक भरपूर
प्रभु दिया

1. Jesus, Thy life is mine,
Dwell evermore in me;
And let me see
That nothing can untwine
Thy life from mine.
2. Thy life in me be shown,
Lord, I would henceforth seek
To think and speak
Thy thoughts, Thy words alone,
No more my own.
3. Thy love, Thy joy, Thy peace,
Continuously impart
Unto my heart,
Fresh springs that never cease,
But still increase.
4. The blest reality
Of resurrection power,
Thy Church's dower,
Life more abundantly,
Lord, give to me.

5. तेरा तोहफ़ा प्रभु
तेरे वचनों से
तेरे नाम से
सुनु हर्षित ध्वनि
स्तुति भरपूर

6. जीवन मेरा तुझे
और हमेशा तुझे
छुपा तुझमें
अलग कर सके ना
जीवन मेरा

5. Thy fullest gift, O Lord,
Now at Thy word I claim,
Through Thy dear Name,
And touch the rapturous chord
Of praise forth-poured.

6. Jesus, my life is Thine,
And evermore shall be
Hidden in Thee,
For nothing can untwine
Thy life from mine.

चाह— मसीह को प्रेम के लिए

Longings - For Love to Christ

59

368

1. और प्रेम तुझे, प्रभु
और प्रेम तुझे
सुन तू मेरी प्रार्थना
जो घुटनों पर
ये मेरा अनुनय
और प्रेम प्रभु तुझे
और प्रेम तुझे
और प्रेम तुझे !

2. जब चाह सांसारिक सुख
ढूँढ़ूँ शांति
अब बस तुझे ढूँढ़ूँ
दे जो अच्छा
यही मेरी प्रार्थना
और प्रेम प्रभु तुझे
और प्रेम तुझे
और प्रेम तुझे !

3. करने दे गम को काम
दे क्लेश और दर्द
है मधुर दूतगण
मधुर है राग

1. More love to Thee, O Lord,
More love to Thee!
Hear Thou the prayer I make
On bended knee;
This is my earnest plea:
More love, O Lord, to Thee,
More love to Thee,
More love to Thee!

2. Once earthly joy I craved,
Sought peace and rest;
Now Thee alone I seek,
Give what is best;
This all my prayer shall be:
More love, O Lord, to Thee,
More love to Thee,
More love to Thee!

3. Let sorrow do its work,
Send grief and pain;
Sweet are Thy messengers,
Sweet their refrain,

जब वो गए साथ साथ
और प्रेम प्रभु तुझे
और प्रेम तुझे
और प्रेम तुझे !

When they can sing with me,
More love, O Lord, to Thee,
More love to Thee,
More love to Thee!

4. तब मेरी हर श्वांस ही
करे स्तुति
ये हो विरह पुकार
हृदय बड़े
यही हो बस प्रार्थना
और प्रेम प्रभु तुझे
और प्रेम तुझे
और प्रेम तुझे !

4. Then shall my latest breath
Whisper Thy praise;
This be the parting cry
My heart shall raise;
This still its prayer shall be:
More love, O Lord, to Thee,
More love to Thee,
More love to Thee!

चाह— मसीह को प्रेम के लिए

Longings - For Love to Christ

60

369

1. प्रेम करने दे, तू चहता है
हर भावना मेरे प्राण की;
उस प्रेम को जिसमें है शक्ति,
बदले मुझे पूर्णतः
जीवन का भार है वो आसान
और जीवन के दुःख छूटे,
वो है बस तेरे लिए ही,
अगर दे कष्ट मुस्कान तो,
प्रेम करुं उद्धारक को
ले हृदय हमेशा
कुछ ना बस तेरी चाह करे
प्राण को संतुष्ट

1. Let me love Thee, Thou art claiming
Every feeling of my soul;
Let that love in pow'r prevailing,
Render Thee my life, my all;
For life's burdens they are easy,
And life's sorrows lose their sting,
If they're carried, Lord, to please Thee,
If their pain Thy smile should win.
Let me love Thee, Savior,
Take my heart forever;
Nothing but Thy favor
My soul can satisfy.

2. प्रेम करने दे, आ और दिखा
सब कुछ जो प्रेम ने किया;
मदद कर, हूं अविश्वासी,
प्रकट कर के क्लवरी;
देखना तेरी प्रेम प्रदानता
सारी शर्म मेरे पाप लाए;
तेरी रोशनी से जानता मैं
क्या मोल मेरी माफी लाई

2. Let me love Thee, come revealing
All Thy love has done for me;
Help my heart, so unbelieving,
By the sight of Calvary:
Let me see Thy love despising
All the shame my sins had brought;
By Thy torments realizing
What a price my pardon bought.

3. प्रेम करने दे, मैं सबसे खुश
जब करुं मैं तुझे प्रेम;
कि धूप में या निराशा में
मैं पाउं तुझमें आराम;
पर तेरे बिन जीवन व्यर्थ,
मोल कोई फूलो का;
लिया है अनंत तोहफे को;
छोड़ा खाली समय को

4. प्रेम करने दे, सर्वशक्तिमान
छोड़ अपनी चाह, सोच को य
कि अब चल सकु सीधे मै
दूँ सेवा जैसा वचन
प्रेम करेगी जोत तुझमे
प्रेम ना सवाल करता कोई ,
प्रेम आगे, प्रेम ही शक्ति

चाह— मसीह के साथ संगति

61

1. तेरी चाह हर समय
अनुग्रही प्रभु
तुझसा ना मधुर स्वर
जो दे शांति

तेरी चाह, ओ, तेरी चाह
हर समय तेरी चाह
अब तेरे पास आता
तू आशीष दे

2. तेरी चाह हर समय
रह मेरे पास
प्रलोभन खत्म होती
जब हो तू पास

3. Let me love Thee, I am gladdest
When I'm loving Thee, the best;
For in sunshine or in sadness
I can find in Thee a rest;
But without Thee life is fading,
Treasureless its choicest flowers;
Taken are its gifts eternal;
Left, its empty passing hours.

4. Let me love Thee, love is mighty,
Swaying realms of deed and thought;
By it I shall walk uprightly,
I shall serve Thee as I ought:
Love will soften every sorrow,
Love will lighten every care,
Love unquestioning will follow,
Love will triumph, love will dare.

Longings - For Fellowship with Christ

371

1. I need Thee every hour,
Most gracious Lord;
No tender voice like Thine
Can peace afford.

I need Thee, oh, I need Thee;
Every hour I need Thee;
Oh, bless me now, my Savior!
I come to Thee.

2. I need Thee every hour,
Stay Thou near by;
Temptations lose their power
When Thou art nigh.

3. तेरी चाह हर समय
आनंद या दर्द
आ जल्दी और कर वास
या जीवन व्यर्थ

4. तेरी चाह हर समय
इच्छा सिखा
और धनी वचनों को
मुझमें कर पूर्ण

5. तेरी चाह हर समय
परम पवित्र
अपना बना मुझे
अशीषित पुत्र

3. I need Thee every hour,
In joy or pain;
Come quickly and abide,
Or life is vain.

4. I need Thee every hour,
Teach me Thy will;
And Thy rich promises
In me fulfill.

5. I need Thee every hour,
Most Holy One;
Oh, make me Thine indeed,
Thou blessed Son.

चाह— मसीह के साथ संगति

62

1. अगर जिस पथ मैं चलूं
ले जाएँ क्रूस तक
जो मार्ग तूने चुना
ले जाएँ दुःख तक
हो अब प्रतिकरण
हर दिन हर समय
छायारहित, मेल हो
तेरे साथ प्रभु

2. जब भौतिक सुख हो कम
दे अधिक स्वर्ग का
करे आत्मा स्तुति
चाहे हृदय चीरे
सांसारिक बंधनें
टूटे आज्ञा पे
गाँठ लगा जो बाँधे
करीब, मधुर हो

Longings - For fellowship with Christ

377

1. If the path I travel
Lead me to the cross,
If the way Thou choosest
Lead to pain and loss,
Let the compensation
Daily, hourly, be
Shadowless communion,
Blessed Lord, with Thee.

2. If there's less of earth joy,
Give, Lord, more of heaven.
Let the spirit praise Thee,
Though the heart be riven;
If sweet earthly ties, Lord,
Break at Thy decree,
Let the tie that binds us,
Closer, sweeter, be.

3. गर पथ हो तनहा
 भर दे मुस्कान से
 हो मेरा हमराही
 धरती पर कुछ पल
 निस्स्वार्थ मैं जीउंगा,
 तेरी कृपा से
 हो मैं शुद्ध माध्यम
 तेरे जीवन की

3. Lonely though the pathway,
 Cheer it with Thy smile;
 Be Thou my companion
 Through earth's little while;
 Selfless may I live, Lord,
 By Thy grace to be
 Just a cleansed channel
 For Thy life through me.

चाह— मसीह के साथ निकटतम चाल

Longings - For obedience to Christ

63

384

1. यीशु जैसा चाहे
 ओ, मेरी इच्छा हो
 तेरे प्रेम के हाथ में
 दूं अपना सब कुछ ही
 दुःख से या आनंद से
 अपनो सा कर व्यवहार
 कर मदद कहने को
 प्रभु इच्छा पूर्ण हो

1. My Jesus, as Thou wilt!
 Oh, may Thy will be mine!
 Into Thy hand of love
 I would my all resign;
 Through sorrow, or through joy,
 Conduct me as Thine own,
 And help me still to say,
 My Lord, Thy will be done!

2. यीशु, जैसा चाहे
 तूने देखे आंसु
 उम्मीद के तारे
 न हो धुंध ना हो ओझिल
 तू रोया धरती पर,
 अक्सर अकेले दुःखी
 अगर मैं रोउं साथ
 प्रभु इच्छा पूर्ण हो

2. My Jesus, as Thou wilt!
 Though seen through many a tear,
 Let not my star of hope
 Grow dim or disappear;
 Since Thou on earth hast wept,
 And sorrowed oft alone,
 If I must weep with Thee,
 My Lord, Thy will be done!

3. यीशु, जैसा चाहे
 सब हो जा ठीक मुझमें
 हर बदलती भविष्य
 है मेरा विश्वास तू
 अब तेरी शांति में
 मैं चलता रहूं बस
 गान, जीवन या मृत्यु
 प्रभु इच्छा पूर्ण हो

3. My Jesus, as Thou wilt!
 All shall be well for me;
 Each changing future scene
 I gladly trust with Thee.
 Straight to Thy rest above
 I travel calmly on,
 And sing, in life or death,
 My Lord, Thy will be done!

1. प्रभु तेरा हूँ, सुनी तेरी वाणी,
तेरा प्रेम को जिसने बताया।
लालसा है कि तेरे विश्वास की बाहों में,
तेरे पास खींचा चला आऊँ।

मुझ को खींच कर रख ले,
अपने कूस के पास, जहां तूने मृत्यु
सही।
मुझ को खींच कर रख ले,
अपने हाथ में ले,
हाथ जो घायल हुआ था।

2. दिव्य अनुग्रह की सामर्थ्य से
खुद की सेवा में अर्पण कर।
मेरा प्राण तुझको, आशा से देखे
और इच्छा तुझमें खो जाए।
3. अपनी प्रार्थना में, जैसे मित्र से
वैसे तुझ से बात करूँ।
जो एक घड़ी भी तेरे सम्मुख रहूँ।
तो महा आनन्दित हूँ।
4. सब से गहरा प्रेम अब तक जानूँ न,
जब तक तुझे न देखूंगा।
आनन्द की उंचाई को न पहुँचा हूँ
जहां करूँ शान्ति आराम।

1. I am Thine, O Lord, I have heard Thy
voice,
And it told Thy love to me;
But I long to rise in the arms of faith,
And be closer drawn to Thee.

Draw me nearer, nearer, blessed
Lord,
To the cross where Thou hast
died;
Draw me nearer, nearer, nearer,
blessed Lord,
To Thy precious, bleeding side.

2. Consecrate me now to Thy service,
Lord,
By the pow'r of grace divine;
Let my soul look up with a steadfast
hope,
And my will be lost in Thine.
3. O the pure delight of a single hour
That before Thy throne I spend,
When I kneel in prayer, and with Thee,
my God,
I commune as friend with friend!
4. There are depths of love that I yet may
know
Ere Thee face to face I see;
There are heights of joy that I yet may
reach
Ere I rest in peace with Thee.

1. हे प्रभु यीशु बढ़ मुझमें
बाकी सब कुछ घटे
नित्य हो हृदय के करीब
पाप से होउं रोज मुक्त

हर दिन सहायक सामर्थ से
मेरी कमजोरी से लिपट
अंधकार हटती रोशनी में
जीवन से मृत्यु नष्ट

2. तेरी पड़ती रोशनी मुझ पर
खत्म करती बुरे विचार
मैं कुछ नहीं, पर तू सब कुछ
मुझको रोज तू सिखा
3. अधिक महिमा मुझे दिखा
तू पवित्र, धर्मी, सत्य
मैं तेरो स्वरूप बनूँगा
आनंद और शोक में भी
4. भर मुझको खुशीयों से
दिव्य सामर्थ से सम्भाल
तेरे महान प्रेम की चमक
मुझ पर चमकने दे
5. मुझ गरीब को और घटने दे
तू हो मेरा जीवन, लक्ष्य
अनुग्रह से मुझे नित्य सम्भाल
ज्यादा मिले उसको नाम

1. O Jesus Christ, grow Thou in me,
And all things else recede;
My heart be daily nearer Thee,
From sin be daily freed.

Each day let Thy supporting
might
My weakness still embrace;
My darkness vanish in Thy light,
Thy life my death efface.

2. In Thy bright beams which on me fall,
Fade every evil thought;
That I am nothing, Thou art all,
I would be daily taught.
3. More of Thy glory let me see,
Thou Holy, Wise, and True;
I would Thy living image be,
In joy and sorrow too.
4. Fill me with gladness from above,
Hold me by strength divine;
Lord, let the glow of Thy great love
Through all my being shine.
5. Make this poor self grow less and less,
Be Thou my life and aim;
Oh, make me daily through Thy grace
More meet to bear Thy name.

1. तेरे समान बनूं, उद्धारकर्त्ता
ये मेरी निरंतर चाह, बिनती
मैं छोड़ता संसार की दौलतो को
यीशु की परिपूर्णता डालता

तेरे समान, तेरे समान बनूं
उद्धारकर्त्ता, तेरी तरह शुद्ध
मधुरता में आ, भरपूरी में आ
छाप मेरे हृदय में प्रतिमा

2. तेरे समान बनूं, करुणामय
प्रेमी, क्षमावान, कोमल, उदार
दुर्बल को मदद, मुर्छित को ढाढ़स
भटके पापीयों को ढुढ़ मैं
3. तेरे समान बनूं, आत्मा मेंदिन
पवित्र और निर्देश, धैर्यवान, निडर
नर्म, धैर्य, कठोर, तिरस्कार
मुसीबत उठने से दुसरे बचे
4. तेरे समान बनूं, मैं अब आता
ग्रहण मैं करता द्विव्य अभिषेक
सब कुछ जो मैं हूं और है पास लाता
प्रभु अभी से मैं तेरा हूँ

1. O to be like Thee! blessed Redeemer;
This is my constant longing and prayer;
Gladly I'll forfeit all of earth's treasures,
Jesus, Thy perfect likeness to wear.

O to be like Thee! O to be like
Thee!
Blessed Redeemer, pure as
Thou art;
Come in Thy sweetness, come
in Thy fullness;
Stamp Thine own image deep on
my heart.

2. O to be like Thee! full of compassion,
Loving, forgiving, tender and kind,
Helping the helpless, cheering the
fainting,
Seeking the wand'ring sinners to find.
3. O to be like Thee! lowly in spirit,
Holy and harmless, patient and brave;
Meekly enduring cruel reproaches,
Willing to suffer, others to save.
4. O to be like Thee! Lord, I am coming,
Now to receive th' anointing divine;
All that I am and have I am bringing;
Lord, from this moment all shall be
Thine.

5. तेरे समान बनूं, याचना करता
भर दे आत्मा से, भर दे प्रेम से,
बना हमें मन्दिर, निवास स्थान
जीवन योग्य जो तुझे मंजूर

चाह- ज्योति की

67

1. हटा आवरण प्रभु
ताकि देखूं ज्योति
और फिर धोखा ना हो
पर हो सब कुछ सही

तेरी जीवित ज्योत प्रभु
हटाये मेरी रात
और सबकुछ स्पष्ट हो प्रभु
बस यही है प्रार्थना

2. मैं जानू ना खुदको
घमंड से धोखे में
सोचता था सही मैं
और होता खुद संतुष्ट

3. जानू तुझे कम ही
सिद्धांत में हूं कच्चा
प्रकाशन की कमी
तेरी सच्चाई की

4. तेरा जीवन अन्दर
अन्धेर में की गलती —
कि आत्मा या शरीर
अदल बदल दी

5. O to be like Thee! While I am pleading
Pour out Thy Spirit, fill with Thy love.
Make me a temple meet for Thy
dwelling,
Fit for a life which Thou wouldst
approve.

Longings - For Light

426

1. Remove my covering, Lord,
That I may see Thy light,
And be deceived no more,
But all things see aright.

Oh, may Thy living light, Lord,
Scatter all my night, Lord,
And everything make bright,
Lord,
For this I pray to Thee.

2. I hardly know myself;
Deceived so much by pride,
I often think I'm right
And am self-satisfied.

3. I know Thee even less;
In doctrine, shallowly;
True revelation lack
Of Thy reality.

4. As for Thy life within,
In darkness I mistake-
If spirit or the flesh,
One for the other take.

5. तेरी राह, हे प्रभु
हमेशा ना साफ था
विरक्ता कि ओर मन
सही राह से मुड़ता

6. तेरी चाह को मैंने
ना जाना अच्छे से
अपनी चाह को रखा
अक्सर विरोध किया

7. कलीसिया के लिए
चाहूँ मैं और प्रकाश
देह का जीवन जानूँ
तेरी बुद्धि में अब

8. मैं खुलना चाहूँ अब
सब कुछ मैं होऊँ साफ
अब और ना हो धोखा
और ना हो घमंड

समर्पण—प्रभु के प्रेम में विवश

68

1. परमेश्वर प्रेम तेरा विवश करे
जैसे कोई प्रबल लहर बाध्य करती
ढूँढ़े नहर मेरे सीमित प्राण में
इच्छुक हटाने को सारी बाधाएं

2. क्या मैं ना मानूँ प्रेम को तेरे
क्या मैं ना कहूँ प्रेम की लहर बह
मुझे जीती तेरी विनम्रता
अब ये जीवन न हो पहले जैसा

5. As for Thy way, O Lord,
I often am not clear;
I toward seclusion tend
And from the pathway veer.

6. As for Thy will for me,
I do not know it well;
I substitute my own
And often would rebel.

7. As for the church, I need
Thy revelation more,
The Body-life to know,
Thy wisdom to explore.

8. I long to be unveiled,
In everything made clear,
No more to be deceived
Or to my pride adhere.

Consecration- constrained by the Lord's Love

431

1. Thy mighty love, O God, constraineth
me,
As some strong tide it presseth on its
way,
Seeking a channel in my self-bound
soul,
Yearning to sweep all barriers away.

2. Shall I not yield to that constraining
power?
Shall I not say, O tide of love, flow in?
My God, Thy gentleness hath
conquered me,
Life cannot be as it hath hither been.

3. तोड़ मेरा स्वभाव, हे सामर्थी प्रेम
साफ कर सभी मार्ग मेरे मन के
भर मेरा स्नेह, शुद्ध कर मेरी इच्छा
तेरा जीवन बस और कुछ ना हो

4. पूर्णतः तेरे स्वामित्व में अधीन
स्वतः ही मुक्त अपने इस जीवन से
धारा बहे करुणा, महिमा की
प्रेमी क्योंकि तेरा प्रेम अनंत

समर्पण—प्रभु के प्रेम में विवश

69

1. क्या तुमने देखा, जाना है ?
क्या हृदय ना हुआ आकर्षित
दस हजारों में वो मुख्या
आनंद से चुन बेहतर भाग

मंत्र मुग्ध उसके सौंदर्य से
योग्य भेंट जल्द है लाना
करने दे कैद अतुल्यनीय को
ताज अद्वितीय राजा को

2. मूर्तियों ने जीता, खींचा
प्यारी वस्तु समय की
भव्य पापों ने निर्बल की
मधुर न लगे वो अब

3. Break through my nature, mighty,
heavenly love,
Clear every avenue of thought and
brain,
Flood my affections, purify my will,
Let nothing but Thine own pure life
remain.

4. Thus wholly mastered and possessed
by God,
Forth from my life, spontaneous and
free,
Shall flow a stream of tenderness and
grace,
Loving, because God loved, eternally.

Consecration- constrained by the Lord's Love

437

1. Hast thou heard Him, seen Him, known
Him?
Is not thine a captured heart?
Chief among ten thousand own Him;
Joyful choose the better part.
Captivated by His beauty,
Worthy tribute haste to bring;
Let His peerless worth constrain
thee,
Crown Him now unrivaled King.

2. Idols once they won thee, charmed
thee,
Lovely things of time and sense;
Gilded thus does sin disarm thee,
Honeyed lest thou turn thee thence.

3. किसने छीना सुंदरता को
पृथ्वी की मूर्तियों से ?
न सही या धर्म का कोई बोध
बस है दृश्य अतुल्य का
4. ना उन मूर्तियों को तोड़ना
उसकी चतुर शून्यता
पर दीप्तिमान सौंदर्य उसका
अनावरण करे हृदय
5. किसने बुझायी रोशनी
जब उगते सूर्य को देखा
किसने त्यागा शीतलता को
जब तक ग्रीष्म ऋतु न आयी
6. झलक जो पतरस को पिघला
मुख जो स्टीफन ने देखा
हृदय जो मरियम संग रोया
अकेले मूर्त से खींचे
7. खींचो, जीतो, भरो पूर्णतः
जब तक प्याला न उमड़े
हमें क्या करना मूर्ति से?
जो प्रभु संग चल दिये?

समर्पण — प्रभु को सब दे देना

70

1. यीशु को मैं सब कुछ देता,
सब कुछ छोड़कर तेरे लिए;
प्रति दिन संगति उस से,
प्रेम विश्वास से करता हूँ।
सब मैं देता हूँ,
सब मैं देता हूँ।
तेरे लिए प्यारे यीशु;
सब मैं देता हूँ।

3. What has stripped the seeming beauty
From the idols of the earth?
Not a sense of right or duty,
But the sight of peerless worth.
4. Not the crushing of those idols,
With its bitter void and smart;
But the beaming of His beauty,
The unveiling of His heart.
5. Who extinguishes their taper
Till they hail the rising sun?
Who discards the garb of winter
Till the summer has begun?
6. 'Tis that look that melted Peter,
'Tis that face that Stephen saw,
'Tis that heart that wept with Mary,
Can alone from idols draw:
7. Draw and win and fill completely,
Till the cup o'erflow the brim;
What have we to do with idols
Who have companied with Him?

Consecration - Surrendering all to the Lord

441

1. All to Jesus I surrender,
All to Him I freely give;
I will ever love and trust Him,
In His presence daily live.
I surrender all,
I surrender all.
All to Thee, my blessed Savior,
I surrender all.

2. यीशु को मैं सब कुछ देता,
झुकता तेरे चरणों पर,
छोड़ता हूँ संसारिक इच्छा;
मुझे ले और अपना कर।

3. यीशु को मैं सब कुछ देता,
मुझे अपना, कर प्रभु;
हो पवित्र आत्मा साक्षी,
तेरा हूँ और मेरा तू।

4. यीशु को मैं सब कुछ देता,
तुझ से मैं न रहूँ दूर;
मुझ में भर दे प्यार और शक्ति,
कर आशीषों से भरपूर।

5. यीशु को मैं सब कुछ देता,
आत्मिक आग अब दिल में है।
पूरी मुक्ति का है आनन्द!
उस के नाम की होवे जय!

2. All to Jesus I surrender,
Humbly at His feet I bow,
Worldly pleasures all forsaken;
Take me, Jesus, take me now.

3. All to Jesus I surrender,
Make me, Savior, wholly Thine;
Let me feel Thy Holy Spirit,
Truly know that Thou art mine.

4. All to Jesus I surrender,
Lord, I give myself to Thee;
Fill me with Thy love and power,
Let Thy blessing fall on me.

5. All to Jesus I surrender,
Now I feel the sacred flame.
Oh, the joy of full salvation!
Glory, glory to His name!

समर्पण — प्रभु को स्वीकृति

71

1. शांत लेट उसे ढालने दे
प्रभु मैं मनुंगा
बन तू ही निपुण कुम्हार
और मैं बनू मिट्टी
झुका मुझे इच्छा से झुका
जब तक तेरे हाथ में लेटा

2. तेरे प्रिय हाथ में आराम,
ओ, रोक मुझे वहीं;
तब कर कोमल और गड तू,
और तेरी चाह ही पुन

Consecration - Yielding to the Lord

450

1. Lie still, and let Him mould thee!
Oh, Lord, I would obey;
Be Thou the skillful Potter,
And I the yielding clay.
Bend me, oh, bend me to Thy
will,
While in Thy hand I'm lying still.

2. In Thy dear hand I'm resting,
Oh, hold me quiet there;
Then soften me and mould me,
And for Thy will prepare.

3. ना दर्ना बस विश्वास तू
तेरा प्रेम, काम ऐसा ,
नया पाठ तू पढाये
जब तक चाहूं स्पर्श

4. दिखा खुदको तू मुझसे,
पूर्ण कर अपनी कृति,
जब दूसरे देखे मुझे
दिखे बस तेरा मुख

3. I need not fear to trust Thee,
Thy love and skill are such,
New lessons Thou wilt teach me,
While yielding to Thy touch.

4. Impress Thine image on me,
Fulfil Thy blest design,
Till others see upon me
That beauteous face of Thine.

मसीह के साथ एकता – उसके साथ एकता

72

1. मैं एक हूँ, प्रभु तेरे साथ
एक आत्मा में तेरे साथ;
तेरा सब मेरा हो गया
तू अब मुझ में जीता है।

मैं एक हूँ, तेरे साथ,
मैं एक हूँ, तेरे साथ;
रोज बाँटता तेरे धनों को
तू सब कुछ मेरे लिए।

2. मैं बाँटता मानव जीवन को,
भरता मानवता के साथ,
तेरी पूर्ण आज्ञाकारिता
उपलब्ध मेरे लिए।

3. एक हूँ तेरे क्रूसीकरण में,
क्रूस पर तेरे साथ मरा;
संसार के साथ मैं मर चुका,
संसार भी मेरे लिए।

4. एक हूँ तेरे पुनरुत्थान में,
उठा तेरे साथ जीने को,
वह जीवन जो तू है प्रभु,
अब मुझ में, प्रभु मुझ में।

Union with Christ - One with Him

474

1. I am one with Thee, Lord Jesus,
One in spirit now with Thee;
All Thyself I now possess, Lord,
All Thou art now lives in me.

One with Thee, one with Thee,
One with Thee, one with Thee;
Day by day I share Thy riches,
Thou art everything to me.

2. Now I share Thy human life, Lord,
Filled with Thy humanity,
All of Thy complete obedience
Is available to me.

3. One with Thee in crucifixion,
On the cross I died in Thee;
I am dead unto the world, Lord,
And the world is dead to me.

4. One with Thee in resurrection,
Risen now to live in Thee,
With that life which is Thyself, Lord,
Now in me, Lord, even me.

5. एक हूँ तेरे स्वर्गारोहण में
स्वर्ग में अब तेरे साथ
यहाँ मैं एक प्रदेशी हूँ
जीवन मेरा छिपा उसमें।

6. सिंहासनरोहण में एक हूँ
अधिकार को हम बांटते हैं
जैसे बाँटता तेरा जीवन
मैं तुझमें और तू मुझ में।

5. One with Thee in Thine ascension,
In the heavens now with Thee;
Here a pilgrim and a stranger,
My true life is hid in Thee.

6. One with Thee in Thine enthronement,
Sharing Thine authority,
Even as I share Thy life, Lord,
I in Thee and Thou in me.

मसीह के साथ एकता — उसके साथ एक Union with Christ - One with Him

73

475

1. तेरे साथ एक अनन्त पुत्र
विश्वास के द्वारा जुड़ा
सर्व—सम्मिलित मृत्यु और
जीवन में सहभागी हुआ।
तेरे साथ एक प्रिय पुत्र
भाग हुआ कृपा के द्वारा
तेरे साथ वारिस भी हुआ
हम आत्मा के निवास स्थान।

2. देहधारी पुत्र के साथ एक
तेरे साथ जन्म लिया
हम हैं तेरी देह के अंग
पृथ्वी में हम परदेसी
अभिषिक्त पुत्र के साथ एक
आत्मा की शक्ति बाँटते
हम संपूर्ण सहयोग में
तेरे साथ परिश्रम करें।

3. त्यागे हुए पुत्र के साथ एक
न्याय और शाप से गुजरा
पाप के लिए मरा हमेशा
नरक हमारे पाँव के तले
पुनरुत्थान में तेरे साथ एक
मृत्यु हमें दबा न पाई

1. One with Thee, Thou Son eternal,
Joined by faith in spirit one,
Share we in Thy death inclusive
And Thy life, O God the Son.
One with Thee, Thou Son beloved,
Part of Thee become thru grace,
Heirs with Thee of our one Father,
We're Thy Spirit's dwelling pace.

2. One with Thee, Thou Son incarnate,
Born with Thee, the Man of worth,
We, the members of Thy body,
Sojourn with Thee here on earth.
One with Thee, Thou Son anointed,
Sharing too the Spirit's power,
We in full cooperation
Labor with Thee hour by hour.

3. One with Thee, Thou Son forsaken,
Judgment and the curse we've passed;
We to sin are dead forever,
Hell beneath our feet is cast.
One with Thee in resurrection,
Death can never us oppress;

नया सृष्टि में हम जीयेगे
धार्मिकता का फल लायें।

Live we in Thy new creation,
Bearing fruits of righteousness.

4. आरोहित पुत्र के साथ एक
साथ बैठाया सिंहासन पर?
तेरे अधिकार को बाँटने
तेरे साथ शासन करें
आगमन पुत्र के साथ एक
उसके साथ महिमाविन्त होंगे
तेरे सौन्दर्य को सदा
हम अभिव्यक्त करेंगे।

4. One with Thee, Thou Son ascended,
Seated with Thee on the throne,
Thine authority we share and
Rule with Thee, Thy rank our own.
One with Thee, Thou Son returning,
Glorified with Thee we'll be,
E'er to manifest Thy beauty,
One with Thee eternally.

मसीह के साथ एकता – उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के साथ पहचान

Union with Christ - Identified with His Death and Resurrection

74

482

1. मैं मसीह के साथ क्रूसीकृत
क्रूस ने मुझे किया मुक्त
मैं जी उठा मसीह के साथ
और वह मुझमें जीता है

1. I am crucified with Christ,
And the cross hath set me free;
I have ris'n again with Christ,
And He lives and reigns in me.

कितना मधुर, मसीह संग मरना
संसार, स्वयं और पाप से कितना मधुर,
मसीह के साथ जीना
जो अब मुझमें जीता है

Oh! it is so sweet to die with
Christ,
To the world, and self, and sin;
Oh! it is so sweet to live with
Christ,
As He lives and reigns within.

2. युगों से गुप्त रहस्य
पर विश्वास से योजना बनी
मसीह मुझमें महिमा की आशा
हम कहें फिर बार बार

2. Mystery hid from ancient ages!
But at length to faith made plain:
Christ in me the Hope of Glory,
Tell it o'er and o'er again.

3. कुदरत में राज छुपा है कि
दफन बीज से फसल बढ़ती
मामूली पेड़ के कलम से
पौष्टिक, मीठा जीवन पाते

3. This the secret nature hideth,
Harvest grows from buried grain;
A poor tree with better grafted,
Richer, sweeter life doth gain.

4. राज़ यही पवित्रता की
ना हमारी पर उसकी
हे प्रभु खाली कर, और भर
अपनी पूर्णता से हमें

5. यह मरहम दर्द और रोग का
हमारी सामर्थ को मरने देता
उसमें पाते हम जीवन और भरपूरी
हमोर जीवन की पूर्ति करता

6. यही कहानी स्वामी की
क्रूस से पहुँचा गद्दी तक
उसकी तरह महिमा का मार्ग
मृत्यु से होकर जाती

4. This the secret of the holy,
Not our holiness, but Him;
O Lord! empty us and fill us,
With Thy fulness to the brim.

5. This the balm for pain and sickness,
Just to all our strength to die,
And to find His life and fulness,
All our being's need supply.

6. This the story of the Master,
Thru the Cross, He reached the Throne,
And like Him our path to glory,
Ever leads through death alone.

मसीह का अनुभव — आत्मा की तरह

75

1. हे प्रभु आप अब आत्मा हैं।
देता जीवन करता सजीव
अपने धन से देता हैं बल
कितना दिव्य और तेजस्वी ।

2. हे प्रभु आप अब आत्मा हैं।
देता मुक्ति, अपने बल से
यह सच्ची मुक्ति के द्वारा
जीवन की व्यवस्था विधान करते ।

3. हे प्रभु आप अब आत्मा हैं।
बदलता हैं और सोखता हैं ।
तेरे रूप में अनुरूप करता
और प्रकाश से उजागर करता ।

4. हैं प्रभु आप अब आत्मा हैं
मेरी आत्मा में रहते हैं ।
मेरी आत्मा से मिश्रित करता
और एक आत्मा बन जाता हैं ।

Experience of Christ - As the Spirit

493

1. O Lord, Thou art the Spirit now
That gives us life and quickens us,
With all Thy riches strengthening,
O how divine and glorious!

2. O Lord, Thou art the Spirit now
That with Thy power liberates;
And by Thy liberation true
The law of life now regulates.

3. O Lord, Thou art the Spirit now
That transforms us and saturates,
And to Thine image true conforms
And with Thy light illuminates.

4. O Lord, Thou art the Spirit now
Who in my spirit makes His home;
He mingles with my spirit too,
And both one spirit thus become.

5. प्रभु आप मुझे सिखाओं
मेरे आत्मा का अभ्यास करना
तेरी आत्मा में चलने दें
तेरे सत्य में जीने दें।

5. Lord, teach me how to exercise
My spirit now to contact Thee,
That in Thy Spirit I may walk
And live by Thy reality.

मसीह का अनुभव – अनुग्रह की तरह

76

Experience of Christ - As Grace

497

1. अनुग्रह उत्तम परिभाषा में
पुत्र में खुदा को हम आन्नद करें
यह ऐसा न कुछ जो दिया जाए
पर खुदा हमारा महिमामय भाग!

1. Grace in its highest definition is
God in the Son to be enjoyed by us;
It is not only something done or giv'n,
But God Himself, our portion glorious.

2. खुदा शरीर में देहधारित हुआ
कि हम ग्रहण और अनुभव करें
यह अनुग्रह है जो हम प्राप्त करते
जो मसीह से आता, जो मसीह स्वयं

2. God is incarnate in the flesh that we
Him may receive, experience ourself;
This is the grace which we receive of
God,
Which comes thru Christ and which is
Christ Himself.

3. प्रेरित पौलुस ने समझा सब कूड़ा
खुदा में मसीह ही अनुग्रह हैं
अनुग्रह से प्रभु अनुभव हों
कि अन्य से आगे बढ़े दौड़ में

3. Paul the Apostle counted all as dung,
'Twas only God in Christ he counted
grace;
'Tis by this grace-the Lord experienced-
That he surpassed the others in the
race.

4. अनुग्रह ही— मसीह हमारा बल
जिसने पर्याप्ता से हमें भरा
यह अनुग्रह हमारी आत्मा में
यह पूरी करता खुदा की इच्छा

4. It is this grace-Christ as our inward
strength-
Which with His all-sufficiency doth fill;
It is this grace which in our spirit is,
There energizing, working out God's
will.

5. यह अनुग्रह जीवित मसीह स्वयं
है हमारी जरूरत, अनुभव
प्रभु इस अनुग्रह को जाने, जीये
स्वयं मुझमें बढ़े, अनुग्रह जैसे

5. This grace, which is the living Christ
Himself,
Is what we need and must experience;
Lord, may we know this grace and by
it live,
Thyself increasingly as grace to sense.

मसीह का अनुभव – जीवन की तरह

Experience of Christ - As Life

77

499

1. ओ, क्या जीवन! ओ, क्या शान्ति!
जो मसीह मुझमें जीवित हैं।
उसके साथ मैं कूस पर चढ़ गया
यह महिमामय सच, मुझे दिया,
अब मैं जीवित नहीं रहा,
पर मसीह मुझ में जीवित हैं।

1. Oh, what a life! Oh, what a peace!
The Christ who's all within me lives.
With Him I have been crucified;
This glorious fact to me He gives.
Now it's no longer I that live,
But Christ the Lord within me lives.

2. ओ, क्या खुशी! ओ, क्या आराम!
अब मसीह ने मुझ में आकार लिया
उसका स्वभाव और दिव्य जीवन
मेरे जीवन में रच गया,
जितना मैं हूँ, आया अन्त तक
मसीह मेरे लिए सब कुछ हैं।

2. Oh, what a Joy! Oh, what a rest!
Christ now is being formed in me.
His very nature and life divine
In my whole being inwrought shall be.
All that I am came to an end,
And all of Christ is all to me.

3. ओ, क्या विचार! ओ, क्या गौरव!
मसीह मुझ में प्रकट होगा,
किसी बात में ना लज्जित होगा
उसको सब में लागू करेंगे
पीड़ा आशीष, मृत्यु या जीवन
मेरे द्वारा वह प्रमाणित होगा।

3. Oh, what a thought! Oh, what a boast!
Christ shall in me be magnified.
In nothing shall I be ashamed,
For He in all shall be applied.
In woe or blessing, death or life,
Through me shall Christ be testified.

4. ओ, क्या इनाम! ओ, क्या लाभ हैं!
मसीह लक्ष्य जिसका मैं पीछा करूँ
किसी को मैं बहुमूल्य ना मानू
पर मसीह जो सर्व पर्याप्त हैं
मेरी आशा महिमा और मुकुट
मसीह हैं एक अतुल्यनीय

4. Oh, what a prize! Oh, what a gain!
Christ is the goal toward which I press.
Nothing I treasure, nor ought desire,
But Christ of all-inclusiveness.
My hope, my glory, and my crown
Is Christ, the One of peerlessness.

मसीह का अनुभव – जीवन की तरह

78

1. क्या ही सामर्थ्य! क्या ही बल हैं!
परमेश्वर ने मसीह को जिलाया
सबसे उपर दाहिने हाथ पर
हम सब के ऊपर वह सिर हैं
सारी सामर्थ कलीसिया के लिए
कि वह सारे शत्रु को कुचले।
2. क्या ही सच्चाई! क्या ही आशीष!
कि मैं मसीह का एक अंग हूँ।
सारे सन्तों के साथ मैं एक हूँ
नये मनुष्य के जीवन में भागी
चढ़े हुए सिर से जुड़ जाता
हम उसके निजि कलीसिया होंगे।
3. क्या ही चौड़ाई! क्या ही लम्बाई!
ऊँचाई गहराई अखोजनीय हैं।
मसीह प्रभु असीमित हैं
कितना विशाल, अमापनीय हैं
जो कुछ वह हैं जो कुछ उसके पास
अब हमारा जीवन हो गया।

मसीह का अनुभव – जीवन की तरह

79

1. ओह, महिमामय मसीह मेरा
तू है सचमुच दिव्य
अनंत में असीम खुदा
समय में तू सीमित मनुष्य

ओ मसीह, खुदा का प्रकटीकरण
अनंत, मधुर और धनी
मानवता में मिश्रित खुदा
सब होने को रहता मुझमें

Experience of Christ - As Life

500

1. Oh, what a might! Oh, what a strength!
God wrought to raise Christ from the
dead.
Far above all at His right hand,
O'er all to us He is the Head.
All this great pow'r is to the Church
That she o'er all her foes may tread.
2. Oh, what a fact! Oh, what a bliss!
That I of Christ a member am.
With all the saints I blend as one
And share the life of the new man.
Joined to our great ascended Head,
We'll be the Church of His own plan.
3. Oh, what a breadth! Oh, what a length!
The height, the depth unsearchable!
Christ the Lord is unlimited,
So vast, immense, immeas'urable.
All that He is and all He has
Is now our life unspeakable.

Experience of Christ - As Life

501

1. O glorious Christ, Savior mine,
Thou art truly radiance divine;
God infinite, in eternity,
Yet man in time, finite to be.

Oh! Christ, expression of God,
the Great,
Inexhaustible, rich, and sweet!
God mingled with humanity
Lives in me my all to be.

2. तुझमें खुदा की पूर्णता
महिमा को प्रकट करता
शरीर में छुटकारा लाया
आत्मा में, साथ एकता दूढ़ता

3. पिता का सबकुछ है तेरा
आत्मा में जो तू है मेरा
आत्मा सच्चाई बनाए तुझे
कि अनुभव करूं तुझे

4. जीवन की आत्मा, वचन से
मुझ तक तुझको पहुंचाती है
छूके आत्मा, वचन प्राप्त कर
जीवन मुझमें रूप लेती है

5. आत्मा में निहारूं तुझे
जैसे दर्पण प्रकट करता तेज
तेरे रूप में बदल जाऊं
कि प्रकट करूं तुझे

6. किसी भी प्रकार से हम
तेरे विजय में सहभागी हो
कि पवित्र और आत्मिक हो
और छूवे महिमा का जीवन

7. तेरा आत्मा करेगा संतृप्त
हर अंग में खुदा फैले
पुराने मनुष्य से छुड़ाए
निर्माण करे सब संतो साथ

2. The fulness of God dwells in Thee;
Thou dost manifest God's glory;
In flesh Thou hast redemption wrought;
As Spirit, oneness with me sought.

3. All things of the Father are Thine;
All Thou art in Spirit is mine;
The Spirit makes Thee real to me,
That Thou experienced might be.

4. The Spirit of life causes Thee
By Thy Word to transfer to me.
Thy Spirit touched, Thy word received,
Thy life in me is thus conceived.

5. In spirit while gazing on Thee,
As a glass reflecting Thy glory,
Like to Thyself transformed I'll be,
That Thou might be expressed thru me.

6. In no other way could we be
Sanctified and share Thy vict'ry;
Thus only spiritual we'll be
And touch the life of glory.

7. Thy Spirit will me saturate
Every part will God permeate,
Deliv'ring me from the old man,
With all saints building for His plan.

1. एक मनुष्य हैं महिमा में
जिसका जीवन मेरे लिए
वह शुद्ध और पवित्र
विजयी और स्वतंत्र
वह ज्ञानी और प्रिय
कितना वह करुणामय
महिमा में उसका जीवन
मेरा जीवन होना है ।
महिमा में मेरा जीवन
मेरा जीवन होना ।
2. एक मनुष्य हैं महिमा में
जिसका जीवन मेरे लिए
वह शैतान से जीता
बन्धन से किया मुक्ति
जीवन में शासन करता
कितना महान राजा
महिमा में उसका जीवन
मेरा जीवन होना हैं
महिमा में उसका जीवन
मेरा जीवन होना ।
3. एक मनुष्य हैं महिमा में,
जिसका जीवन मेरे लिए
उसमें कोई रोग नहीं
न कमजोरी कोई
वह प्रबल और बलवन्त
कितना वह प्रसन्नचित हैं
महिमा में उसका जीवन
मेरा जीवन होना हैं
महिमा में उसका जीवन
मेरा जीवन होना ।

1. There's a Man in the glory
Whose Life is for me.
He's pure and He's holy,
Triumphant and free.
He's wise and He's loving,
How tender is He!
His Life in the glory,
My life must be;
His Life in the glory,
My life must be.
2. There's a Man in the glory
Whose Life is for me.
He overcame Satan;
From bondage He's free.
In Life He is reigning;
How kingly is He!
His Life in the glory,
My life must be;
His Life in the glory,
My life must be.
3. There's a Man in the glory
Whose Life is for me.
In Him is no sickness;
No weakness has He.
He's strong and in vigor,
How buoyant is He!
His Life in the glory
My life may be;
His Life in the glory
My life may be.

4. एक मनुष्य हैं महिमा में
जिसका जीवन मेरे लिए
उसकी शांति बनी रहती
कितना वह धैर्यवान हैं
वह हर्ष पूर्ण और चमकदार
देखने की आशा करते।
महिमा में उसका जीवन
मेरे द्वारा जीता
महिमा में उसका जीवन
मेरे द्वारा जीता।

4. There's a Man in the glory
Whose Life is for me.
His peace is abiding;
How patient is He!
He's joyful and radiant,
Expecting to see
His Life in the glory
Lived out in me;
His life in the glory
Lived out in me.

मसीह का अनुभव — जीवन की तरह

Experience of Christ - As Life

81

507

1. परमेश्वर से हम दूर थे,
पाप में मरे हुए
लेकिन वचन में प्रकाश मिला
मसीह मुझ में जीवित हैं।
मसीह जीवित हैं
मुझमें जीवित है
हे क्या ही उद्धार हैं कि
मसीह मुझ में जीवित हैं।
2. जैसे सूरज की किरणें
उठाती धरती में फूल
प्रकाश जीवन और प्यार आते
मुझमें मसीह जीवित हैं।
3. ऐसे फूल बीज में जीते
बीज में पेड़ जैसे
सत्य और कृपा की आत्मा
मुझमें जीवित हैं।
4. आशा दिल में भरें हुए
मसीह जैसा होने
ये अद्भुत बात सोचते हुए कि
मसीह मुझमें जीवित हैं।

1. Once far from God and dead in sin,
No light my heart could see;
But in God's Word the light I found,
Now Christ liveth in me.
Christ liveth in me,
Christ liveth in me;
Oh! What a salvation this,
That Christ liveth in me.
2. As rays of light from yonder sun,
The flow'rs of earth set free,
So life and light and love come forth
From Christ living in me.
3. As lives the flow'r within the seed,
As in the cone the tree,
So, praise the Christ of truth and grace,
His Spirit dwelleth in me.
4. With longing all my heart is filled,
That like Him I may be,
As on the wondrous thought I dwell
That Christ liveth in me.

1. एक बहती नदी और एक वृक्ष
अदन की प्रमुख विशेषता
मानव को दे भोजन व जल
ताकि जीये सदा

खुदा मसीह में बने दाता
खुदा आत्मा से करे पोषित
अगर मसीह को आत्मा से खाऊँ
होऊ पूर्ण जीवन से

2. पेड़ दर्शाता मसीह को
जीवित भोजन करे पूर्ति
कि आनंद करे धनी खुदा
और पूर्णतः हो संतुष्ट

3. नदी दर्शाती आत्मा को
भरने आती मेरी आत्मा
ताकि हो खुदा धन से पूर्ण
और पवित्र हो जाएं

4. महिमा का मसीह मेरा जीवन
वो आत्मा सा रहे मुझमें
ताकि खुदा संग होऊ मिश्रित
और चमकूँ उसके रूप में

5. इस मसीह को उंचा उठाऊ
आत्मा ही का कहना मानूँ
सबको उसकी महिमा बताऊँ
उसकी कृपा से भर जाऊँ

1. A flowing river and a tree,
Eden's outstanding features are,
Man to supply with food and drink
That he may live fore'er.

God is in Christ to be my supply,
God as the Spirit nourisheth me;
If upon Christ in spirit I feed,
Filled with His life I'll be.

2. The tree the glorious Christ does show
As living food to man supplied,
That he God's riches may enjoy,
Thus to be satisfied.

3. The river does the Spirit show,
Coming man's spirit to supply,
That with God's riches he be filled,
Holy to be thereby.

4. The Christ of glory is my life,
He as the Spirit lives in mine,
That I with God be fully blent
And in His image shine.

5. I would exalt this glorious Christ,
Ever the Spirit I'd obey,
Making His glory fully known,
Filled with His grace for aye.

1. पाया मैंने, एक अतुल्य को
मेरा दिल खुशी से गाए;
और मसीह के लिए गाऊ
क्या मसीह हैं मेरे पास।
2. मेम्ना रब का मेरा मसीह
जो देता हैं मुक्ति,
वह धार्मिकता का सूर्य हैं,
शिफा से जो भरा,
3. जीवन का वृक्ष मेरा मसीह
बहुतायत का मिठा फल
मेरी भूख को सन्तुष्ट करता
उसे रोज मैं खाता हूँ।
4. मेरी चट्टान मेरा मसीह
जीवन जल का सोता
वह झरना हैं मेरे दिल में
बुझाता मेरी प्यास
5. मेरा जीवन, ज्योति और मार्ग
मेरा सहायक, स्वास्थ्य
मेरी शांति मेरा आराम
महिमा, मेरा धन
6. मेरा ज्ञान और मेरी शक्ति
बढ़ाई और धार्मिकता
मेरा विजय और छुटकारा
सत्य और पवित्रता।
7. उद्धारकर्ता चरवाह मसीह
मुखतार जो श्रेष्ठ हैं
सलाहाकार परमेश्वर, पिता
मेरा भाई मित्र और प्रेम

1. I've found the One of peerless worth,
My heart doth sing for joy;
And sing I must, for Christ I have:
Oh, what a Christ have I!
2. My Christ, He is the Lamb of God,
Who full salvation brings;
He is the Sun of Righteousness,
With healing in His wings.
3. My Christ, He is the Tree of Life
With fruit abundant, sweet;
My hunger He doth satisfy;
Of Him I daily eat.
4. My Christ, He is the smitten Rock
Whence living waters burst;
He is the fountain in my heart
Which quenches all my thirst.
5. Christ is my life, my light, my way,
My comfort and my health,
My peace, my rest, my joy, my hope,
My glory and my wealth.
6. Christ is my wisdom and my pow'r,
My boast and righteousness,
My vict'ry and redemption sure,
My truth and holiness.
7. Christ is my Savior, Shepherd, Lord,
My Advocate above,
My Counsellor, my Father, God,
My Brother, Friend, and Love.

8. मेरा कप्तान रक्षक मसीह
मेरा शिक्षक निर्देशक
मेरा दुल्हा स्वामी और सिर
जो मुझमें रहता है।

9. मेरा नबी राजा मसीह
वह दर्शन से भरा
याजक खुदा मेरे बीच में,
राजा कितना महान

10. मेरा विश्वास कर्ता मसीह
और पूर्ण सिद्ध करता
मेरा मध्यस्थ और प्रतिभू
और सत्य गवाही।

11. मेरा स्थायी घर हैं मसीह
मेरी सब-पर्याप्त भूमि
किला मीनार छिपने की जगह
मेरा अनन्त पड़ाव।

12. नया चाँद सब्बत मेरा मसीह
मेरी सुबह, नया दिन,
मेरी आयु और अनन्तता
जो खत्म कभी न हों।

13. मेरा यकीन, इच्छा मसीह,
सुन्दरता से भरा
मेरी तृप्ति, मेरी खुशी,
सब कुछ वह देता है।

14. मेरा मसीह सर्व सम्मिलित
मैं क्या उसे कहूँ
वह पहला है वह आखरी
वह सब में सब कुछ है।

8. Christ is my Captain and my Guard,
My Teacher and my Guide,
My Bridegroom, Master and my Head;
In me doth He reside.

9. Christ is my Prophet, Priest, and King;
My Prophet full of sight;
My Priest that stands 'twixt me and
God,
My King that rules with might.

10. Christ is the Author of my faith,
And its Perfecter too,
My Mediator, Guarantee,
And faithful Witness true.

11. Christ is my everlasting home,
My all-sufficient land;
My fortress, tower, hiding-place,
And my eternal stand.

12. Christ is my Sabbath and new moon,
My morning and my day,
My age and my eternity
That ne'er will pass away.

13. Christ is my trust and my desire,
In comeliness replete,
My satisfaction and delight,
Who all my need doth meet.

14. My Christ, the all-inclusive One,
My Christ what shall I call?
He is the first, He is the last,
My Christ is All in all.

15. जब ऐसा धन मेरे पास हैं
मेरा दिल खुशी से गाए
मुझे बार बार गाना हैं
क्या मसीह है मेरे पास ।

15. Since such a treasure I possess,
My heart doth sing for joy;
And I must sing, and sing again;
Oh, what a Christ have I!

मसीह का अनुभव — सब कुछ की तरह Experience of Christ - As Everything

84

513

1. कभी आशीष मांगी
अब है प्रभु खुद
कभी भावनायें थी
अब उसका वचन
कभी वरदान चाहा
अब दाता मेरा
कभी चंगाई चाही
अब केवल प्रभु
सब में सब कुछ सदा
सिर्फ मसीह को गाऊँ
मसीह में है सब कुछ
और मसीह है सब कुछ
2. कभी दर्दनाक कोशिश
अब भरोसा पूर्ण
कभी अपूर्ण उद्धार
अभी है संपूर्ण
कभी थामना चाहा
अब वह थामे है
कभी मैं था अस्थिर
अब मैं हुआ स्थिर
3. कभी व्यर्थ योजनाएँ थी
अब प्रार्थना, यकीन
कभी व्याकुल चिन्ता
अब वह सम्भाले
कभी मेरी चाहत
अब यीशु की चाह
कभी नित्य मांगे
अब नित्य खुशी

1. Once it was the blessing,
Now it is the Lord;
Once it was the feeling,
Now it is His Word;
Once His gift I wanted,
Now, the Giver own;
Once I sought for healing,
Now Himself alone.
All in all forever,
Only Christ I'll sing;
Everything is in Christ,
And Christ is everything.
2. Once 'twas painful trying,
Now 'tis perfect trust;
Once a half salvation,
Now the uttermost;
Once 'twas ceaseless holding,
Now He holds me fast;
Once 'twas constant drifting,
Now my anchor's cast.
3. Once 'twas busy planning,
Now 'tis trustful prayer;
Once 'twas anxious caring,
Now He has the care;
Once 'twas what I wanted,
Now what Jesus says;
Once 'twas constant asking,
Now 'tis ceaseless praise.

4. कभी मेरा कार्य था
लेकिन अब उसका
मेरा उपयोग था वो
अब मुझे करें
कभी सामर्थ्य चाहा
अब वह सामर्थी है
कभी अपनी सेवा
अब केवल उसकी

5. कभी यीशु में आशा
अब वह मेरा है
कभी मैं बुझता दिया
अब वह चमके है
कभी मौत की राह
अब उसका आना
मेरी आशा स्थिर है
पर्दे के अंदर

4. Once it was my working,
His it hence shall be;
Once I tried to use Him,
Now He uses me;
Once the pow'r I wanted,
Now the Mighty One;
Once for self I labored,
Now for Him alone.

5. Once I hoped in Jesus,
Now I know He's mine;
Once my lamps were dying,
Now they brightly shine;
Once for death I waited,
Now His coming hail;
And my hopes are anchored
Safe within the veil.

मसीह का अनुभव — सब कुछ की तरह Experience of Christ - As Everything

85

530

1. यीशु मेरा सम्पूर्ण संसार
जीवन आनन्द सब कुछ
वह मेरा बल दिन प्रति दिन
गिर जाऊँ उसके बिन
जब हो उदास, पास उसके जाऊँ
और कोई हर्षित न कर सकता
जब मैं उदास देता उल्लास
वह मेरा मित्र

2. यीशु मेरा सम्पूर्ण संसार
संकट में मेरा मित्र
मैं जाता आशीष पाने और
वह देता है भरपूर
भेजता है वह धूप और वर्षा
भेजता फसल स्वर्ण गेहूँ का
धूप वर्षा फसल गेहूँ का
वह मेरा मित्र

1. Jesus is all the world to me:
My life, my joy, my all.
He is my strength from day to day;
Without Him I would fall.
When I am sad, to Him I go;
No other one can cheer me so.
When I am sad, He makes me glad;
He's my Friend.

2. Jesus is all the world to me,
My Friend in trials sore.
I go to Him for blessings, and
He gives them o'er and o'er.
He sends the sunshine and the rain;
He sends the harvest's golden grain:
Sunshine and rain, harvest of grain—
He's my Friend.

3. यीशु मेरा सम्पूर्ण संसार
 रहूँ मैं निष्ठावान
 ऐसे मित्र को कैसे त्यागूँ
 जब इतना वह सच्चा
 जानूँ मैं सही अनुसरण कर
 दिन रात वह मेरा रखता ध्यान
 दिन रात मैं उसके पीछे चलूँ
 वह मेरा मित्र

4. यीशु मेरा सम्पूर्ण संसार
 न बेहतर मित्र की चाह
 भरोसा अब भरोसा जब
 अन्त होता क्षणिक जीवन
 सुन्दर जीवन ऐसे मित्र संग
 सुन्दर जीवन का कोई न अंत
 अन्नत जीवन अन्नत आनन्द
 वह मेरा मित्र

3. Jesus is all the world to me,
 And true to Him I'll be.
 Oh, how could I this Friend deny
 When He's so true to me?
 Following Him I know I'm right;
 He watches o'er me day and night.
 Following Him by day and night,
 He's my Friend.

4. Jesus is all the world to me,
 I want no better friend.
 I trust Him now; I'll trust Him when
 Life's fleeting days shall end.
 Beautiful life with such a Friend;
 Beautiful life that has no end!
 Eternal life, eternal joy,
 He's my Friend.

मसीह का अनुभव – अंतर्निवासी जन की तरह

Experience of Christ - As The Indwelling One

86

538

1. यह खुदा की इच्छा, कामना
 हो प्रकट मसीह मुझमें
 न कोई बाहरी धार्मिकता
 पर मसीह हो मेरे अंदर
 कोरस
 है खुदा की इच्छा, कामना
 कि मसीह गढ़े मुझमें
 न हो बाहरी प्रदर्शन
 पर मसीह मेरा सबकुछ

2. यह खुदा की इच्छा, कामना
 कि मसीह जीए मुझमें
 न हो कोई बाहरी प्रथा
 पर मसीह काम करता अंदर

1. It is God's intent and pleasure
 To have Christ revealed in me,
 Nothing outward as religion,
 But His Christ within to be.

Chorus

It is God's intent and pleasure
 That His Christ be wrought in me;
 Nothing outwardly performing,
 But His Christ my all to be.

2. It is God's intent and pleasure
 That His Christ may live in me;
 Nothing as an outward practise,
 But Christ working inwardly.

3. यह खुदा की इच्छा, कामना
कि मसीह रूप ले मुझमें
न बाहरी विधि का पीछा
पर मसीह बढ़ता अंदर

4. यह खुदा की इच्छा, कामना
मसीह मुझमें घर बनाए
न हो बाहरी रूप में सेवा
पर मसीह बसता अंदर

5. यह खुदा की इच्छा, कामना
मसीह मेरी आशा हो
न कोई बाहरी महिमा
पर मसीह व्यवहारिक हो

6. यह खुदा की इच्छा, कामना
कि मसीह सब हो मुझमें
न हो बाहरी नियंत्रण
पर मसीह अनंतकाल हो

3. It is God's intent and pleasure
That His Christ be formed in me;
Not the outward forms to follow,
But Christ growing inwardly.

4. It is God's intent and pleasure
That His Christ make home in me;
Not just outwardly to serve Him,
But Christ dwelling inwardly.

5. It is God's intent and pleasure
That His Christ my hope may be;
It is not objective glory,
But 'tis Christ subjectively.

6. It is God's intent and pleasure
That His Christ be all in me;
Nothing outwardly possessing,
But His Christ eternally.

मसीह का अनुभव – उपलब्ध जन की तरह

Experience of Christ - As The Available One

87

539

1. हे प्रभु तू मुझमें जीवन
और मेरा सब कुछ है
व्यवहारिक और उपलब्ध
तुझको अनुभव करूं
हे प्रभु तू है आत्मा
कितना प्रिय और निकट
कितना सराहूं मैं तेरी
अद्भुत उपस्थिती

2. बड़ी छोटी जरूरतों
की तू समृद्ध पूर्ति
तैयार और पर्याप्त भी
प्रयोग के लिए

1. O Lord, Thou art in me as life
And everything to me!
Subjective and available,
Thus I experience Thee.
O Lord, Thou art the Spirit!
How dear and near to me!
How I admire Thy marvelous
Availability!

2. To all my needs both great and small
Thou art the rich supply;
So ready and sufficient too
For me now to apply.

3. तेरा मीठा अभिषेक
दुर्बल को सम्मालता
तेरी ऊर्जा की पूर्ति
मुझे सामर्थ्य देता

4. जीवन का नियम दिल, मन में
आचरण नियंत्रित करता
उसके धन की सच्चाई
मुझे संतुष्ट करता

5. तू मेरे साथ एक सदा है
अनुठी एकता में
हर वक्त एक आत्मा में हम
अन्नता के लिये !

3. Thy sweet anointing with Thy might
In weakness doth sustain;
By Thy supply of energy
My strength Thou dost maintain.

4. Thy law of life in heart and mind
My conduct regulates;
The wealth of Thy reality
My being saturates.

5. O Thou art ever one with me,
Unrivalled unity!
One spirit with me all the time
For all eternity!

मसीह का अनुभव — उद्धारकर्ता की तरह

88

1. क्या रिहाई उद्धारक ने दी
मसीह ने मुझे मुक्त किया
पाप की शक्ति है टूटी
मृत्यु का डंक मुझ से गया

मसीह ने बनाया विजयी
सामर्थी विजय द्वारा
पुनरुत्थान की शक्ति उसकी
मेरी आत्मा से बल देती

2. व्यवस्था से छुड़ाया है
इसके दावों में मैं मृत
अब मुझे यह न बाँधेगी
पर मैं अनुग्रह से जीता

Experience of Christ - As The Emancipator

540

1. What release the Savior gave me!
Christ indeed has set me free!
All the pow'r of sin is broken,
All death's sting is passed from me!

Christ has made me more than
conqu'ror,
By His mighty victory,
Now His resurrection power
From my spirit strengthens me!

2. From the law Christ has delivered,
To its claims I'm ever dead;
Nevermore the law shall bind me,
But by grace I'll live instead.

3. कलवरी पर पाप हुआ दंडित
उसकी शक्ति खत्म हुई
अब न मुझमें कोई स्थान
मैं स्वतंत्र हर प्रभाव से

4. उसके द्वारा मृत्यु नष्ट
अविनाशी जीवन अब
मृत्यु के बंधन है टूटे
जाना पुनरुत्थान का जीवन

5. कुचला शैतान को मृत्यु से
संसार और दुष्ट की ताकत
अधियारे से निकाला
जीवन और ज्योति में लाया

6. सर्व पर्याप्त अनुग्रह देता
अपनी शक्ति से ढांकता
कमजोरी में महिमा बनता
और कमजोरी में बल देता

3. Christ has sin condemned at Calv'ry
And its power done away;
Now it has no ground within me,
I am freed from all its sway.

4. Death by Him has been abolished,
Incorrupted life is shown;
Death's enthralling bonds are broken,
Resurrection life is known.

5. Christ through death has crushed the
devil,
World and demons by His might,
From the pow'r of darkness brought me
To the realm of life and light.

6. All-sufficient grace He giveth,
With His pow'r He covers me,
Makes me glory in my weakness
And in weakness strengthens me.

मसीह का अनुभव — उसकी समृद्धि

89

1. मेरे उद्धारक की समृद्धि
कितना अखोजनीय हैं
परमेश्वर की पूर्णता
अब मैं अनुभव करूँ

ओ समृद्धि, ओ समृद्धि,
मेरे लिए मसीह रखता!
कितना अमापनीय हैं,
पर मेरी वास्तविकता!

Experience of Christ - His Riches

542

1. O the riches of my Savior,
So unsearchable, immense;
All the fulness of the Godhead
I may now experience.

O the riches, O the riches,
Christ my Savior has for me!
How unsearchable their
measure,
Yet my full reality!

2. मेरे उद्धारक की समृद्धि
मेरा जीवन और ज्योति,
ज्ञान, शक्ति, चंगाई और विश्राम
परमेश्वर की संतुष्टि ।

3. छुटकारा, संपूर्ण उद्धार
और पुनरुत्थान की शक्ति
पवित्रीकरण, महिमाकरण
हर समय श्रेष्ठ हैं ।

4. मेरे उद्धारक की समृद्धि
उससे कम कुछ नहीं हैं
उसका व्यक्ति और सब कुछ, अब
आत्मा का आनन्द बना ।

5. मेरे उद्धारक की समृद्धि
उसकी गहराई उँचाई को
कौन यह माप कर सकता है
ये मेरी खुशी और बल ।

6. क्या मैं इस धन को जान सकूँ
मसीह का पूर्ण अनुभव
दूसरों से बांट मैं सकूँ
उसकी समृद्धियों को ।

2. O the riches of my Savior,
All-embracing: life and light,
Wisdom, power, healing, comfort,
Treasures rich of God's delight;

3. God's redemption, full salvation,
And His resurrection pow'r,
Sanctifying, glorifying,
All transcending every hour!

4. O the riches of my Savior-
Nothing less than God as all!
All His person and possessions,
Now my spirit doth enthrall.

5. O the riches of my Savior!
Who can know their breadth and
length,
Or their depth and height unmeasured,
Yet they are my joy and strength.

6. May I know these boundless riches,
Christ experienced in full;
And with others may I share them
In their content bountiful.

मसीह का अनुभव — उसको समाहित करना

Experience of Christ - Containing Him

90

548

1. मैं मिट्टी का पात्र हूँ
मसीह मेरा खजाना हैं
मझे उसका पात्र होना है
वह मेरा अंतः सार हैं ।

1. Earthen vessel I was made,
Christ in me the treasure laid;
His container I must be,
As the content He in me.

2. मुझे बना उसके स्वरूप, में
मसीह पूरा फैल जाने के लिए
इस तरह पूरे सार के साथ, खुदा
ने पात्र को बनाया ।
3. रहता वह मेरी आत्मा में
उसकी सामर्थ्य से थामता
आत्मा में मेरे साथ एक हैं
वह मेरी सच्चाई हैं ।
4. कार्य करता मुझ में रोज़
पूर्ण रूप, से मिश्रित करता
सारे कदम नियंत्रण करता
सारे भाग वह सोखता हैं ।
5. प्रकट करना हैं अंदर से
दूसरों को दिखाने के लिए
मुझे पारदर्शी होना हैं
मेरे द्वारा दिख जाए ।
6. रूपांतरण मेरी जरूरत
और भी ज्यादा टूटना हैं
मिट्टी को बदल जाना हैं
निधि के समान होना हैं ।

मसीह का अनुभव – उसको समाहित करना

91

1. मैंने माना यह खबर
हाल्लेलूयाह मेमने की
बाहरी आँगन से बढ़ा
ओ महिमा खुदा की
मैं यीशु की ओर हूँ
वेदी पर हुआ पवित्र
संसार और पाप से मुक्त
हाल्लेलूयाह मेमने की!

2. In His image I was made,
Fit that Christ should all pervade;
Thus the vessel God did form
With the content uniform.
3. In my spirit He remains,
With His power He sustains;
As the Spirit one with me,
He is my reality.
4. Moving in me day by day,
Mingling with me all the way,
All my steps He regulates,
Every part He saturates.
5. Him expressing from within,
Making Him to others seen,
I transparent have to be
That He may be shown thru me.
6. Transformation is my need,
To be broken more indeed,
That the clay may change in form,
To the treasure to conform.

Experience of Christ - Containing Him

551

1. I've believed the true report,
Hallelujah to the Lamb!
I have passed the outer court,
O glory be to God!
I am all on Jesus' side,
On the altar sanctified,
To the world and sin I've died,
Hallelujah to the Lamb!

कोरस : हाल्लेलूयाह, हाल्लेलूयाह
मैं हूँ पर्दे के उस पार
यहाँ महिमा न ढलती
हाल्लेलूयाह, हाल्लेलूयाह
मैं जी रहा राजा की
उपस्थिती में

Chorus: Hallelujah! Hallelujah!
I have passed the riven veil,
Here the glories never fail,
Hallelujah! Hallelujah!
I am living in the presence
of the King.

2. मैं एक राजा और याजक
हाल्लेलूयाह मेंमने की
लहू द्वारा पाप धुलते
हो महिमा खुदा की
आत्मा की शक्ति, प्रकाश
से मैं जीता हूँ रात दिन
पवित्र जगह है उज्ज्वल
हाल्लेलूयाह मेंमने की !

2. I'm a king and priest to God,
Hallelujah to the Lamb!
By the cleansing of the blood,
O glory be to God!
By the Spirit's pow'r and light,
I am living day and night,
In the holiest place so bright,
Hallelujah to the Lamb!

3. बढ़ा बाहरी आँगन से
हाल्लेलूयाह मेंमने की
वहाँ खुदा का प्रकाश
हो महिमा खुदा की
पर लहु लाया अन्दर
स्वच्छ पवित्रता में
जहाँ पाप और स्वयं मरे
हाल्लेलूयाह मेंमने की

3. I have passed the outer veil,
Hallelujah to the Lamb!
Which did once God's light conceal,
O glory be to God!
But the blood has brought me in
To God's holiness so clean,
Where there's death to self and sin,
Hallelujah to the Lamb!

4. मैं हूँ पवित्र सीमा में
हाल्लेलूयाह मेंमने की
अन्दरूनी पर्दे के पार
हो महिमा खुदा की
मैं पवित्र खुदा में
लहु की शक्ति द्वारा
अब प्रभु मेरा घर
हाल्लेलूयाह मेंमने की!

4. I'm within the holiest pale,
Hallelujah to the Lamb!
I have passed the inner veil,
O glory be to God!
I am sanctified to God
By the power of the blood,
Now the Lord is my abode
Hallelujah to the Lamb!

1. तूने कहा तू दाख, प्रभु
और कि मैं उसकी डाल हूँ
पर मैं ना जानुं कारण क्यू
मैं बना इतना फलहीन्
2. देना फल है मेरी चाहत
और दिखे तेरा जीवन,
गद्दी को कि महिमा मिलें,
कि तेरी इच्छा दिखे
3. पर मैं हारा समझने में,
मतलब क्या — “मुझमें रहो”
जितना ही मै ढूँढूँ “रहना”
लगे और तुझमें हूँ ना
4. कैसे जाना मैं ना रहता;
प्रार्थना करता और इच्छा भी,
तब भी तू दिखे मुझसे दूर
और जीवन मेरा फलहिन्
5. हां तू है दाख, तूने कहा,
और मैं उसमें हूँ डाली;
जब तुझे उद्धारक सा लूँ,
तथ्य तब मुझमें गढ़े
6. अब मै तुझमें, मैं चाहूँ ना
ढूँढना तुझमें आने को
क्यूँकि मैं तो हूँ जुड़ा अब
तेरे शरीर, हड्डी से
7. “अन्दर जाना” है रहस्य ना
पर ये कि मैं “अन्दर हूँ” !
कि मैं ना छोड़ूँ कभी और,
ना कि मैं कैसे अन्दर

1. Thou hast said Thou art the Vine, Lord,
And that I'm a branch in Thee,
But I do not know the reason
Thy I should so barren be.
2. Bearing fruit is my deep longing,
More Thy life to manifest,
To Thy throne to bring more glory,
That Thy will may be expressed.
3. But I fail to understand, Lord,
What it means—"abide in me
For the more I seek "abiding,"
More I feel I'm not in Thee.
4. How I feel I'm not abiding;
Though I pray and strongly will,
Yet from me Thou seemest distant
And my life is barren still.
5. Yet Thou art the Vine, Thou saidst it.
And I am a branch in Thee;
When I take Thee as my Savior.
Then this fact is wrought in me.
6. Now I'm in Thee and I need not
Seek into Thyself to come,
For I'm joined to Thee already,
With Thy flesh and bones I'm one.
7. Not to "go in" is the secret.
But that I'm "already in"!
That I ne'er may leave I'd ask Thee.
Not how I may get within.

8. मैं अन्दर पहले से तुझमें !
 किस जगह में मैं आया हूँ !
 ना जरूरत प्रार्थना, संघर्ष कि
 खुदा ने खुद काम किया
9. अंदर पहले से, तो पूछना क्यों;
 ओ कितना अबोध था मैं !
 अब स्तुति और अधिक आनंद
 तेरा वचन, मैं तुझमें
10. ओ तुझमें मेरा पूर्ण आराम
 खुद साथ मैं लूं अब भाग;
 तू ही जीवन और तू शक्ति
 सब में सब कुछ तू मेरा

8. I am in, already in Thee!
 What a place to which I'm brought!
 There's no need for prayer or
 struggling,
 God Himself the work has wrought.
9. Since I'm in, why ask to enter;
 O how ignorant I've been!
 Now with praise and much rejoicing
 For Thy Word, I dwell therein.
10. Now in Thee I rest completely,
 With myself I gladly part;
 Thou art life and Thou art power,
 All in all to me Thou art.

मसीह का अनुभव — उसमें बने रहना

93

1. प्रभु में बने रहने का रहस्य
 हम ने सीखा है
 जीवन के सोते को चखा
 वचन से हम पीते हैं
 हमने पाई मधुरता और
 शक्ति लहू में
 यीशु में हम खो गये
 और उसमें हम डूबते हैं।

प्रभु में बने रहते हैं
 वचन में विश्वास करते
 उसके प्रेम की बाहों में
 हम छीपे जा रहें हैं
 हाँ, हम बने रहते हैं
 वचन में विश्वास करते
 उसके प्रेम की बाहों में
 हम छीपे जा रहें हैं

Experience of Christ - Abiding in Him

564

1. I have learned the wondrous secret
 Of abiding in the Lord;
 I have tasted life's pure fountain,
 I am drinking of His word;
 I have found the strength and
 sweetness
 Of abiding 'neath the blood;
 I have lost myself in Jesus,
 I am sinking into God.
 I'm abiding in the Lord
 And confiding in His word;
 I am hiding in the bosom of His
 love.
 Yes, abiding in the Lord
 And confiding in His word,
 I am hiding in the bosom of His
 love.

2. क्रूसीकृत हुआ यीशु के साथ
वह मुझ में जीता है
सारे प्रयत्न समाप्त किया
मैं, नहीं पर वह
मेरी इच्छा को अर्पित करूँ
आत्मा राज्य करें
बहुमूल्य लहू हर समय
पाप से शुद्ध करें।

3. सारे रोगों को मैं लाता
और वह सब को उठाएगा
दुखों भय, चिन्ताओं को
मैं उससे कहूँगा
सारा बल मैं खींचूँगा
उसके श्वास से जीऊँगा
देता हूँ उसको मन जीवना
उसका विश्वास और प्रेम।

4. बातों को लेता उसका ज्ञान
कामों को आत्मा का बल
मार्गों को उपस्थिति
जो अगुवाई करता है
मैंरे हृदय का भाग तू
आनन्द का विशाल सोता
रक्षक पवित्र रोगहर प्रभु
आने वाला राजा।

2. I am crucified with Jesus,
And He lives and dwells with me;
I have ceased from all my struggling,
'Tis no longer I, but He.
All my will is yielded to Him,
And His Spirit reigns within;
And His precious blood each moment
Keeps me cleansed and free from sin.

3. All my sicknesses I bring Him,
And He bears them all away;
All my fears and griefs I tell Him,
All my cares from day to day,
All my strength I draw from Jesus,
By His breath I live and move;
E'en His very mind He gives me,
And His faith, and life, and love.

4. For my words I take His wisdom,
For my works His Spirit's power;
For my ways His ceaseless presence
Guards and guides me every hour.
Of my heart, He is the portion,
Of my joy the boundless spring;
Savior, Sanctifier, Healer,
Glorious Lord, and coming King.

परमेश्वर का अनुभव – अनंत भाग की तरह

Experience of God-As the Everlasting Portion

94

600

1. मेरा खुदा, भाग और मेरा प्रेम
मेरा सदा सब कुछ
स्वर्ग में और पृथ्वी में बस तू
और तुझ सा कोई ना -2

1. My God, my Portion, and my Love,
My everlasting All,
I've none but Thee in heav'n above,
Or on this earthly ball - 2

2. क्या खाली है यह आसमान
और यह छोटी धरती
कुछ भी नहीं मेरा आनंद
प्रभु जैसा न कोई -2

3. मेरा मित्र स्वास्थ्य, दौलत
सब तेरा ही दान हैं
सब को मैं धन्यवाद करूँ
पर वह न मेरा खुदा -2

4. चमकता धन व्यर्थ हैं
जब तुझ से तुलना करूँ
क्या मेरा बचाव, मेरा स्वास्थ्य
ये कुछ भी नहीं हैं -2

5. पृथ्वी और तारों का मालिक
यदि मैं बन जाऊँ
उसके और कृपा के बिना
मैं अभागा मनुष्य - 2

6. दूसरे लोग, समुद्र के जैसे
सब को वश में करें
पर मुझे दे तेरा मिलन
और कोई चाह नहीं -2

2. What empty things are all the skies,
And this inferior clod!
There's nothing here deserves my
joys,
There's nothing like my God - 2

3. To Thee I owe my wealth, and friends,
And health, and safe abode;
Thanks to Thy name for meaner things,
But they are not my God - 2

4. How vain a toy is glittering wealth,
If once compared to Thee!
Or what's my safety, or my health,
Or all the friends to me - 2

5. Were I possessor of the earth,
And called the stars my own,
Without Thy graces and Thyself,
I were a wretch undone - 2

6. Let others stretch their arms like seas,
And grasp in all the shore;
Grant me the visits of Thy grace,
And I desire no more - 2

परमेश्वर का अनुभव — त्रिएकता के द्वारा Experience of God - By the Trinity

95

608

1. क्या ही रहस्य पिता, पुत्र और आत्मा
तत्त्व में तीन हैं सार में सब एक हैं
पुत्र में आत्मा के द्वारा हमारा
सब बनने के लिए प्रवेश किया।

1. What mystery, the Father, Son, &
Spirit,
In person three, in substance all are
one.
How glorious, this God our being enters
To be our all, thru Spirit in the Son!

त्रिएक परमेश्वर हमारा सब हैं
 कितना ही अद्भुत! महिमामय
 यह दिव्य उपहार थका न सकता
 कितना ही श्रेष्ठ आश्चर्य हैं।

The Triune God has now become
 our all!
 How wonderful! How glorious!
 This Gift divine we never can
 exhaust!
 How excellent! How marvelous!

2. पिता सोते के रूप में समृद्ध स्रोत हैं।
 सब धन वह चाहता हम आनन्द करें
 ओह सच्चाई! यह विशाल भाग हमको अब
 हमेशा लागू करने के लिए।

2. How rich the source, the Father as the
 fountain,
 And all this wealth He wants man to
 enjoy!
 O blessed fact, this vast exhaustless
 portion
 Is now for us forever to employ!

3. पुत्र परमेश्वर का प्रकटीकरण हैं
 शरीर में आया मानव साथ रहने
 छुटकारा हैं कितना ही प्रभावशाली
 खुदा के साथ पापी एकता पाये।

3. How wonderful, the Son is God's
 expression
 Come in the flesh to dwell with all
 mankind!
 Redemption's work, how perfectly
 effective,
 That sinners we with God might
 oneness find.

4. आत्मा पुत्र का देह परिवर्तन हैं
 हम में आया जीवन पूर्ति के रूप,
 अद्भुत सच्चाई आत्मा के साथ अब हम
 मिश्रित और एकता में जुड़ती हैं।

4. The Spirit is the Son's transfiguration
 Come into us as life the full supply.
 Amazing fact, our spirit with the Spirit
 Now mingles and in oneness joins
 thereby!

5. कितना वास्तविक, परमेश्वर अब आत्मा हैं।
 प्रति दिन उसको छूने के लिए
 अद्भुत सच्चाई उसके साथ हम एक हैं।
 किसी भी तरह अलग नहीं हैं।

5. How real it is that God is now the Spirit
 For us to touch, experience day by day!
 Astounding fact, with God we are one
 spirit,
 And differ not in life in any way!

परमेश्वर का अनुभव — आत्मा के अभ्यास Experience of God - By Exercising the Spirit

96

612

1. खुदा चाहता कि उसका जी
हो पूर्ति मेरी
उसके साथ जुड़ना होगा
एक आत्मा में
खुदा का जीवन, समृद्धियों
आत्मा में बहता
आत्मा का अभ्यास है करना
उसको जानने को

2. सारा धन उसके स्वभाव का
है दिया मुझे
आत्मा में है उसको छूना
इन्हे देखने को

3. उसे समझते है मन से
आत्मा से छूते
जो ना करे प्रयोग आत्मा का
हो खाली बहुत

4. जब मैं सुनुं संदेशो को
वो करना प्रार्थना
ताकि वचन पूर्णतः पचे
अन्दर से मेरे

5. जब पढ़ूं खुदा का वचन
छूना प्रभु को
अगर मन में, ना आत्मा में
वो मृत वचन

6. आह! क्या धन, क्या महिमा है
आत्मा में चमके
जब करूँ आत्मा का अभ्यास
सब कुछ हो मेरा

1. God intends that all His being
Be my full supply;
With Him I must be united,
In spirit nigh.
All God's being, all His riches
In the Spirit flow;
I must exercise my spirit
Him to know.

2. All the riches of His nature
He has given me;
I must touch Him in the spirit,
These to see.

3. With the mind we understand Him,
With the spirit touch;
Those who never use the spirit
Lack very much.

4. When to messages I listen,
I must pray them in;
Thus the word will be digested
From within.

5. When the Word of God I study,
I must touch the Lord;
If in mind and not in spirit,
Dead is the Word.

6. O what riches, O what glory
In the Spirit shine!
When I exercise my spirit,
All are mine.

1. निकट, खुदा, तेरे
और पास तेरे
अगर हो क्रुस तब भी
जो चढ़ना हो,
तब भी मेरे सब गीत
निकट, खुदा, तेरे
निकट, खुदा, तेरे
और पास तेरे
2. हां, एक यात्री सा,
सूर्य ढल गया,
अंधेरा मुझपर है
पत्थर है आराम
तब भी सपनों में मैं
निकट, खुदा, तेरे
निकट, खुदा, तेरे
और पास तेरे
3. वहां मैं देख सकु,
एक खुला स्वर्ग;
जो भी तुने भेजा,
दया में जो;
स्वर्ग दुतो का संकेत
निकट, खुदा, तेरे
निकट, खुदा, तेरे
और पास तेरे
4. तब फिर जागकर विचार
स्तुति से पूर्ण
संकटों से बाहर अब
बेतल में खड़ा,
तो मेरे विलाप से
निकट, खुदा, तेरे
निकट, खुदा, तेरे
और पास तेरे

1. Nearer, my God, to Thee,
Nearer to Thee;
E'en though it be a cross
That raiseth me,
Still all my song shall be
Nearer, my God, to Thee,
Nearer, my God, to Thee,
Nearer to Thee.
2. Though, like a wanderer,
The sun gone down,
Darkness comes over me,
My rest a stone;
Yet in my dreams I'd be
Nearer, my God, to Thee,
Nearer, my God, to Thee,
Nearer to Thee.
3. There let me see the sight,
An open heaven;
All that Thou sendest me,
In mercy given;
Angels to beckon me
Nearer, my God, to Thee,
Nearer, my God, to Thee,
Nearer to Thee.
4. Then, with my waking thoughts
Bright with Thy praise,
Out of my stony griefs
Bethel I'll raise,
So by my woes to be
Nearer, my God, to Thee,
Nearer, my God, to Thee,
Nearer to Thee.

**परमेश्वर का अनुभव — उसके साथ
संगति**

98

1. खुदा से शुरू दिन
वो है सुरज और दिन
वही है चमक सुबह की
उसके लिए ही गीत
2. नव गीत गाए सुबह !
जुड़े वन, पर्वत से
ताजी घटा, वादियों से
सुन्दर फूल, नालो से
3. पहला गीत खुदा को!
मानव को ना कोई;
ना उसके हाथ की सृष्टि को
पर उस महिमामय को
4. चलो खुदा के साथ
चलने दो उसको साथ;
नदी, नाला, सागर या पहाड़
दुंदो बस उसका साथ
5. तेरा पहला लेन देन
हो बस खुदा के साथ;
तो हो तेरा व्यवहार कुशल
और हर दिन हो प्यारा

कूस का मार्ग — जीवन का मार्ग

99

1. जानूँ जो मैं जी उठने की सामर्थ
कूस को सदा मैं प्रेम करूँगा
अकेला मृत्यु से जीवन है उठता
हानि के सिवाय लाभ नहीं

**Experience of God - Fellowship
with Him**

615

1. Begin the day with God!
He is thy Sun and Day!
His is the radiance of thy dawn;
To Him address thy lay.
2. Sing a new song at morn!
Join the glad woods and hills;
Join the fresh winds and seas and
plains,
Join the bright flowers and rills.
3. Sing thy first song to God!
Not to thy fellow men;
Not to the creatures of His hand,
But to the glorious One.
4. Take thy first walk with God!
Let Him go forth with thee;
By stream, or sea, or mountain path,
Seek still His company.
5. Thy first transaction be
With God Himself above;
So shall thy business prosper well
And all the day be love.

Way of the Cross - The Way of Life

631

1. If I'd know Christ's risen power.
I must ever love the Cross;
Life from death alone arises;
There's no gain except by loss.

मृत्यु बिना, जीवन नहीं
 मृत्यु बिना, जीवन नहीं
 अकेला मृत्यु से जीवन है उठता
 मृत्यु बिना, जीवन नहीं

If no death, no life,
 If no death, no life;
 Life from death alone arises;
 If no death, no life.

2. मसीह जो मुझमें आकार ले तो
 मैं अपनी अंतिम सांस लूंगा
 क्रूस की छाया में मैं जीउंगा
 प्राण जीवन को सदा मारुंगा, त्यागूंगा

2. If I'd have Christ formed within me,
 I must breathe my final breath,
 Live within the Cross's shadow,
 Put my soul-life e'er to death.

3. परमेश्वर जो अनंत आत्मा द्वारा
 क्रूस पर प्रभु संग मुझे चढ़ाए
 केवल जब मृत्यु कार्य है करती
 उसका जीवन मुझ से बहेगा

3. If God thru th' Eternal Spirit
 Nail me ever with the Lord;
 Only then as death is working
 Will His life thru me be poured.

क्रूस का मार्ग – विजय का मार्ग

100

1. ना कभी क्रूस से आगे
 और ना चरणों से ऊंचे
 धरती की चीजों का ना कोई मुल्य,
 यहां हो दुःख भी मधुर

2. देखा तो दिखे सब पाप
 सीखा प्रेम को तझे देखकर;
 पाप जो क्रूस पर तूने उठाए
 प्रेम जिसने उठाया क्रूस

3. यहां सीखे सेवा, और देन,
 आनंद कर, किया अहम् खत्म;
 बटोरे प्रेम जीने को;
 और विश्वास मरने को

4. चिन्ह सबकी आजादी का
 यहां जुड़े सबकी सेवा;
 बंदी, क्रूस से सब छूटे;
 फौजी तेरे क्रूस के, लड़े

Way of the Cross - The Way of Victory

632

1. Never further than Thy Cross,
 Never higher than Thy feet,
 Here earth's precious things seem
 dross,
 Here earth's bitter things grow sweet.

2. Gazing thus our sin we see,
 Learn Thy love while gazing thus;
 Sin which laid the Cross on Thee;
 Love which bore the Cross for us.

3. Here we learn to serve and give,
 And rejoicing, self deny;
 Here we gather love to live;
 Here we gather faith to die.

4. Symbols of our liberty
 And our service here unite;
 Captives, by Thy Cross set free;
 Soldiers of Thy Cross, we fight.

5. आगे बढ़े जैसे भी,
हो हृदय इसके लिए ही;
जहां से विश्वास हो शुरू,
वही पर आकांक्षा खत्म
6. जब तक ज्योति के बीच में
हम उसमें मुक्त, पूर्णतः,
क्रूस से हुए साफ और स्वच्छ
मुकुट डाले चरणों में तेरे

क्रूस का मार्ग — विजय का मार्ग

101

1. मसीह का क्रूस ! आगे ,
पवित्र युद्ध में;
इस चिन्ह से हम जीतते
अब और हमेशा
मानव को शक्ति ना,
ना मानव को यश य
बस हम है, विजयी
कप्तान के नाम से

मसीह का क्रूस ! आगे ,
पवित्र युद्ध में य
इस चिन्ह से हम जीते
अब और हमेशा

2. ना लीला, वैभव से,
ना संसारिक गर्व में;
हमको ही लड़ना है
जैसे क्रूसीकृत
जय सब कष्टों से,
हारने से जीते;
जांचा गया हर दिन
भीषण गरमी में

5. Pressing onwards as we can,
Still to this our hearts must tend;
Where our earliest hopes began,
There our last aspirings end.
6. Till amid the hosts of light
We in Thee redeemed, complete,
Through Thy Cross made pure and
white,
Cast our crowns before Thy feet.

Way of the Cross - The Way of Victory

634

1. Cross of Christ! lead onward,
Through the holy war;
In this sign we conquer
Now and evermore.
Not of man the power,
Not to man the fame;
We are victors only
In our Leader's name.

Cross of Christ! lead onward,
Through the holy war;
In this sign we conquer
Now and evermore.

2. Not with pomp and pageant,
Not in earthly pride;
We must fight our battles
Like the Crucified.
Overcome by suffering,
Conquer through defeat;
Tried and tested daily
In the furnace heat.

3. नम्र, हम तब भी लड़ते,
धृष्ट फिर भी विनम्र;
आराम जब काम करते;
शक्ति, पर कमजोर
कायर, पर साहस से,
पाते जो हम दे;
क्रूसीकृत यीशु साथ,
तब भी जीए उसमें

4. हां बादल छूटने से
गवाही दिखे,
संत, प्रेरित, नबी, अमुल्य
से हम प्रेम करते;
जब "पूर्व!" आवाज से ,
कांपे पूरा युद्ध
मसीह का क्रूस! आगे
जहां है कप्तान

5. कदमताल अब पथ पे
जो मालिक का पथ
चलते साथ प्रतिदिन
जैसे खुदा पुत्र
अंत के समय तक
ना रखना हथियार
जब तक क्रूस ऊपर से
खून से ताज मोल ले

क्रूस का मार्ग — फल लाने का मार्ग

102

1. "अगर वो मरे", सुन समाचार
गिरे प्रभु से
"अगर वो मरे", और फल लाए,
यह उद्धारक का वचन

3. Kind, yet we are fighting,
Bold, yet humbly meek;
Resting while we're working,
Strong, but ever weak.
Timid, though courageous,
Gaining as we give;
Crucified with Jesus,
Yet, in Him, we live.

4. By a cloud encompassed,
Witnesses to prove,
Saints, apostles, prophets,
Precious ones we love;
While "advance!" is sounding,
Mounts the battle thrille.
Cross of Christ! lead onward
Where the Captain will.

5. Marching in the pathway
That the Master trod,
Walks One daily with us
Like the Son of God.
To the end enduring,
Armor ne'er laid down,
Till the Cross leads upward
To the blood-bought crown.

Way of the Cross - The Way of Fruitfulness

636

1. "If it die," oh, hear the message
Falling from thy Lord,
"If it die," much fruit it beareth,
'Tis thy Savior's word.

2. देखना हो जो जीवन का काम,
तुझे खुद मरना होगा
धरती पे गिरकर दफन होना है
अंधकार में रहना

3. वो अन्धेरे में ना छोड़ेगा
दिखेगी ज्योति तुम्हें,
और नया जीवन महिमा में
वो उठाएगा

4. क्या तुम चलोगे पथ पे साथ
और जीवन बांटोगे ?
जब तुम मृत्यु द्वार से गुजरोगे
वो फिर मिलेगा

5. तुम जानो ये अद्भुत रहस्य
वो जिये जो मृत;
गुप्त में जीवन के उण्डेलने से
फसल पैदा हो

2. Would'st thou see life work in others,
Thou thyself must die.
Fall into the ground, be buried,
Low in darkness lie.

3. But He leaves thee not in darkness,
Light shall greet thine eyes,
And in glad new life and glory
He shall bid thee rise.

4. Dost thou crave to tread the pathway
And His life to share?
As thou passest thru death's gateway
He will meet thee there.

5. Thou shalt learn the blessed secret,
He shall live that dies;
From a life poured out in secret
Shall a harvest rise.

प्रोत्साहन- प्रभु के साथ संगति के लिए

103

Encouragement - For Fellowship with the Lord

643

1. निहारने को समय दो
बोलो उससे
उसमें बसो सदा
वचन को खाओ
उसके सम्मुख
अधीन और विनम्र रहो,
भूलें किसी में ना
आशीष पाओ

2. निहारने को समय दो
संसार भागता
गुप्त में समय बिताओ
बस यीशु के साथ

1. Take time to behold Him,
Speak oft with Thy Lord,
Abide in Him always,
And feed on His Word.
Wait thou in His presence,
Submissive and meek,
Forgetting in nothing
His blessing to seek.

2. Take time to behold Him,
The world rushes on;
Spend much time in secret
With Jesus alone.

यीशु को देखकर
उस सा होंगे तुम;
तुम्हारे मित्र देखे
उसकी समानता

By looking to Jesus
Like Him thou shalt be;
Thy friends, in thy conduct,
His likeness shall see.

3. निहारने को समय दो
दिखाए वो मार्ग;
जाओ ना तुम पहले
चाहे कुछ भी हो;
आनंद में व दुःख में
हो साथ प्रभु का ,
और देखे यीशु को
विश्वास वचन पे

3. Take time to behold Him,
Let Him be thy guide;
And run not before Him
Whatever betide;
In joy or in sorrow
Still follow thy Lord,
And, looking to Jesus,
Still trust in His Word.

4. निहारने को समय दो
रहो शांत प्राण में
हर सोच और हर भावना
हो उसके हाथ में
तो चलो आत्मा साथ
प्रेम के सोते तक
तो तुम उपयुक्त उसकी
दया सिद्ध करने

4. Take time to behold Him,
Be calm in thy soul,
Each thought and each temper
Beneath His control.
Thus led by His Spirit
To fountains of love,
Thou then shalt be fitted
His mercy to prove.

प्रोत्साहन— प्रभु के साथ संगति के लिए

Encouragement - For Fellowship with the Lord

104

644

1. देखते है यीशु को
ना चाहे कुछ फल !
सब कवच है ऊपर,
विश्वास युद्ध रक्षक;
उद्धार का जो है वर्ग,
हृदय में खुले,
करे उसका उत्कर्ष
संसार पर जय पाए

1. Looking unto Jesus,
Never need we yield!
Over all the armor,
Faith the battle-shield!
Standard of salvation,
In our hearts unfurled,
Let its elevation
Overcome the world.

देखते है यीशु को
ना चाहे कुछ फल !
सब कवच है ऊपर,
विश्वास युद्ध रक्षक

Looking unto Jesus,
Never need we yield!
Over all the armor,
Faith the battle-shield!

2. देखो बस यीशु को,
देखो सब कुछ छोड़!
तब ना ठोकर खाए
तब ना हम गिरे
हर जो फंदा लटके,
शत्रु, प्रेत, निर्दयी,
हम रहे संरक्षित
देखे बस उसे

2. Look away to Jesus,
Look away from all!
Then we need not stumble,
Then we shall not fall.
From each snare that lureth,
Foe or phantom grim,
Safety this ensureth,
Look away to Him.

3. देखते है यीशु में
हर तरह ढूँढा
शक्ति और महिमा को
प्रेम, अनुग्रह को
दृश्य दूर विकास का
पहले से ज्यादा
जब घूरें व ताके,
अधिक और अधिक

3. Looking into Jesus,
Wond'ringly we trace
Heights of power and glory,
Depths of love and grace.
Vistas far unfolding
Ever stretch before,
As we gaze, beholding,
Ever more and more.

4. देखते यीशु की ओर
मरकत गद्दी पे,
विश्वास छेदे स्वर्ग को,
जहां है राजा
प्रभु, तुझपे निर्भर;
अब और हमेशा
हृदय और मन उठाता;
हो अब उसके साथ

4. Looking up to Jesus
On the emerald throne,
Faith shall pierce the heavens,
Where our King is gone.
Lord, on Thee depending,
Now, continually,
Heart and mind ascending,
Let us dwell with Thee.

1. भरोसा कर यीशु पर
जब चेतना पापों की,
उसका हो भार तुमपे ही,
उसकी शक्ति अंदर;
तो है समय माँगने का
उसका पूर्ण काम
तब है समय गाने का
लहू बहाया उसने
2. भरोसा कर यीशु पर
जब प्रलोभन में हो
शब्दों से या गुस्से से
या सौच में कड़वापन;
तब है समय माँगने का
प्रभु को लड़ने को;
तब है समय गाने का
वो छुड़ाये मुझे
3. भरोसा कर यीशु पर
जब हर दिन घबराहट
और शत्रु दिखे बलवान
तेरे प्राण लेने को;
तब समय पकड़ने का
हाथ जो चला जल पे;
तब है समय गाने का
वह इसे शांत करे
4. भरोसा कर यीशु पर
जब तुम्हारा मन चिंतित;
जब सर या हाथ ना माने
सोचने, काम करने को;
तब है समय टेकने का
मालिक कि छाती पे
तब है समय गाने का
आराम दे उद्धारक

1. Oh, trust thyself to Jesus
When conscious of thy sin,
Its heavy weight upon thee,
Its mighty pow'r within:
Then is the hour for pleading
His finished work for thee:
Then is the time for singing,
His blood was shed for me.
2. Oh, trust thyself to Jesus
When tempted to transgress,
By word or look of anger,
Or thought of bitterness:
Then is the hour for claiming
Thy Lord to fight for thee:
Then is the time for singing,
He doth deliver me.
3. Oh, trust thyself to Jesus
When daily cares perplex,
And trifles seem so mighty
Thy inner soul to vex:
Then is the hour for grasping
His hand who walked the sea:
Then is the time for singing
He makes it calm for me.
4. Oh, trust thyself to Jesus
When thou art wearied sore,
When head or hand refuses
To think or labor more:
Then is the hour for leaning
Upon the Master's breast:
Then is the time for singing,
My Savior gives me rest.

1. कर भरोसा अगर चाह बहुत;
कर भरोसा जब मित्र कम;
और समय जब प्रलोभन का
है समय विश्वास का भी
2. कर भरोसा जब प्राण बोझिल
और हो पता पापों का;
वो बोलेगा शब्द माफी के,
वो करेगा साफ अंदर
3. कर भरोसा अनुग्रह की,
जरूरत के बराबर जोय
कर भरोसा वो दे जवाब,
जब पुकरोगे उसे
4. हो विश्वास कृपा की जय पे,
वो कर सकता वशीभूत
हो विश्वास जब चाह बल सेवा
हो विश्वास कृपा चाह जब
5. हो विश्वास मन संदेह पर,
हो विश्वास जब कम हो बल
हो विश्वास जब करना विश्वास
जब सबसे कठिन दिखे
6. हो विश्वास; वो सदा सच्चा;
हो विश्वास, उसकी चाह नेक;
हो विश्वास, हृदय यीशु का
बस जो दे सके आराम
7. हो विश्वास, जो हो सुख या दुख,
बस रखो मन उसपे ही
जब तक जीवन आँधी ना खत्म
और विश्वास के दिन हो पूर्ण

1. Trust Him when thy wants are many;
Trust Him when thy friends are few;
And the time of swift temptation
Is the time to trust Him too.
2. Trust Him when thy soul is burdened
With the sense of all its sin;
He will speak the word of pardon,
He will make thee clean within.
3. Trust Him for the grace sufficient,
Ever equal to thy need;
Trust Him always for the answer,
When in His dear name you plead.
4. Trust Him for the grace to conquer,
He is able to subdue;
Trust Him for the power for service;
Trust Him for the blessing too.
5. Trust Him when dark doubts assail
thee,
Trust Him when thy strength is small,
Trust Him when to simply trust Him
Seems the hardest thing of all.
6. Trust Him; He is ever faithful;
Trust Him, for His will is best;
Trust Him, for the heart of Jesus
Is the only place of rest.
7. Trust Him, then, through cloud or
sunshine,
All thy cares upon Him cast,
Till the storm of life is over,
And the trusting days are past.

1. कब समय विश्वास का ?
क्या वो जब सब हो शांत,
हिले विजयी हाथ,
और जीवन मगन गान ?
ना, पर विश्वास समय
है जब लहरे उठे
जब बादल भर तूफान,
हो प्रार्थना लम्बी पूकार
2. कब समय विश्वास का ?
क्या वो जब मित्र सच्चे?
क्या ये जब आराम ना
जो भी कहे करे ?
ना, पर विश्वास समय
है जब अकेले हो,
और सब संकट गए
और ना कोई आड़े
3. कब समय विश्वास का ?
क्या वो भविष्य का दिन
जब हो गया प्रयास,
सीखा विश्वास प्रार्थना ?
ना, पर विश्वास समय
है मांग इस समय की,
टूटी व आघात बेत
डर से प्राण चले !
4. कब समय विश्वास का ?
क्या जब विश्वास ऊँचा,
भरे आकाश किरण
आनंद और प्रहर्ष से ?
ना! पर विश्वास समय
जब आनंद ना हो,
जब दुःख झुकाये सिर
और सब ठंडा व मृत

1. When is the time to trust?
Is it when all is calm,
When waves the victor's palm,
And life is one glad psalm?
Nay! but the time to trust
Is when the waves beat high,
When storm clouds fill the sky,
And pray'r is one long cry.
2. When is the time to trust?
Is it when friends are true?
Is it when comforts woo
In all we say and do?
Nay! but the time to trust
Is when we stand alone,
And summer birds have flown,
And every prop is gone.
3. When is the time to trust?
Is it some future day,
When you have tried your way,
And learned to trust and pray?
Nay! but the time to trust
Is in this moment's need,
Poor, broken, bruised reed.
Poor, troubled soul, make speed!
4. When is the time to trust?
Is it when hopes beat high,
When sunshine gilds the sky
With joy and ecstasy?
Nay! but the time to trust
Is when our joy has fled,
When sorrow bows the head,
And all is cold and dead.

1. आराम दे हृदय को,
हटे शर्म व व्यथा;
लो उद्धारकर्त्ता से
अपनी शांति की मिरास
2. झुके उसके कदमों में,
है तू छोटा बहुत,
हां है यहीं शांति,
और यहीं आजादी
3. झुके अब, नीचे कर हाथ,
ना सवाल, ना बागी;
ताकि सुने ध्वनि
कि यह है ठीक
4. ना छुपा घाव कोई,
हो बड़ा या छोटा,
सोचा छुपा लेगा;
स्वीकारो, स्विकारोय
5. तेरा ही ना कुछ श्रेय
उसकी वेदी के पास य
सबकुछ बस मसीह का,
उत्तम अनुग्रह का
6. आराम दे हृदय को
हटे चिंता व्यथा;
लो उद्धकर्त्ता से
अपना शांति का मिरास

1. Rest, rest thee, weary heart,
Let toil and anguish cease;
Take from Thy Savior's hands
Thine heritage of peace.
2. Lie low before His feet,
Too low thou canst not be,
For sacred calm is here,
And here is liberty.
3. Submit, lay down thine arms,
Nor question, nor rebel;
So shalt thou hear erewhile
His whisper, It is well.
4. No secret wound of thine,
Though it be great or small,
Presume to hide from Him;
Confess, confess it all;
5. Nor merit of thine own
Upon His altar place;
All is of Christ alone,
And of His perfect grace.
6. Rest, rest thee, weary heart,
Let care and anguish cease;
Take from thy Savior's hands
Thine heritage of peace.

1. उसकी सत्यता पर रहना
जिसने चुना तुझे,
उठाएँ नाम तेरा प्रेम में
स्वर्गिक गद्दी के पास;
उसके पांव पे रख
डर, भार और सब चिंता,
गिरो लो अनुग्रह झरना
उसकी सत्यता है खाना
2. उसकी सत्यता पर रहना
कलवारी पे सहा
जिसकी विजय ऊपर सबसे,
तेरे लिए ही बस
तेरा ना ये युद्ध है,
तू पास जहां टकराव;
बस वही जिसका है मुकुट—
उसकी सत्यता पर रहना
3. उसकी सत्यता पर रहना
तब तुम घबरओगे ना;
वो है तो भले डर होवे
वो दिखयेगा राह
वो ऊँचे ना सोये,
सबको दे अनुग्रह य
अनंत गद्दी बस है उसकी —
उसकी सत्यता पर रहना
4. उसकी सत्यता पर रहना
तो देखोगे वो मुख,
अनुरूप जब तक सब ना देख्
महिमा अनुग्रह की
पास उसके हृदय के

1. Feed on His faithfulness, my soul,
Who chose thee for His own,
Who bears thy name in Love's pure
flame
Before the heav'nly throne;
Lay at His feet thy fear,
Thy burdens, thy distress,
Prostrate embrace thy Fount of
Grace—
Feed on His faithfulness.
2. Feed on His faithfulness, my soul,
Who suffered Calvary,
Who Victor rose o'er all thy foes,
Who lives, who prays, for thee!
Not thine the battle is,
Though close the conflict press:
'Tis His alone who wears the crown—
Feed on His faithfulness.
3. Feed on His faithfulness, my soul,
Then naught shall thee affright;
His perfect will all fear shall still,
His wisdom guide aright.
He slumbers not nor sleeps,
But waits His saints to bless;
Th' eternal Throne is His alone—
Feed on His faithfulness.
4. Feed on His faithfulness, my soul;
So shalt thou see His face,
Transforming thee till all shall see
The glory of His grace;

आनंद से सब छोड़ें य
ले प्राण तेरे अपने ऊपर—
उसकी सत्यता पर रहना

Closer to His great heart
In glad abandon press;
Fling thy soul down upon His own—
Feed on His faithfulness.

प्रोत्साहन— प्रभु की आज्ञा मानना

110

1. होंगे आज्ञाकारी
प्रभु से सबके
भले संसार रोके,
भले स्वर्ग गिरे ?
सामना हो संकट से
हृदय में विश्वास,
जाने कोई कष्ट ना
जो मसीह के साथ ?
2. होंगे आज्ञाकारी
जिसके सेवक हम
ना कभी हटे, मित्र,
ना कभी मुड़ें;
भले अगला कदम
दिखे मृत्यु की ओर ?
क्या मनोगे आज्ञा
बीना घबराये?
3. क्या है विश्वास उस पे
जब वो बोले तब
जाते सीधे युद्ध में
बलवान शत्रु साथ ?
क्या बढ़ोगे तेज से
और आनंद से साथ ?
क्या लड़ोगे युद्ध तुम,
जब तक दिन ना अंत ?

Encouragement - For Obedience to the Lord

657

1. Can you be obedient
To the Lord of all,
Though the earth should totter,
Though the heav'ns should fall?
Face e'en a disaster
With a faith-filled heart,
Knowing naught can harm him
Who with Christ will start?
2. Can you be obedient
To the Lord you serve,
Never even flinch, friend,
Never even swerve;
Though your next step onward
Seem to lead to death?
Can you then obey Him
Without bated breath?
3. Can you trust your Leader
When He bids you go
Right into a battle
With a mighty foe?
Can you step up briskly
And with joy obey?
Can you fight the battle,
Till the end of day?

4. क्या तुम ? तब प्रिय,
मसीह रुका है;
सुनो उसकी आज्ञा
उसकी चाह तब हो पूर्ण;
तब जब सैनिक संग्रह
सुर्यस्थ के समय,
आए नाम तुम्हारा
वह कहे, "शाबाश"

4. Can you? Then beloved,
Christ just waits for you;
Listen for His orders,
Glad His will to do;
Then when soldiers muster
At the set of sun,
And your name is mentioned,
Christ will say, "Well done."

प्रोत्साहन— ज्योति में चलना

111

1. चलो ज्योत में, तो जानोगे
वो संगति प्रेम की
उसकी आत्मा बस देती है
जो राज्य करे ज्योति में
2. चलो जोत में, तुम पाओगे
हृदय है बस उसका;
जो है ज्योति में चमकता,
जिसमें अंधेरा ना
3. चलो ज्योत में पाप से घृणा
ना दूषित हो फिर;
खून यीशु मसीह, प्रभु का
धोएगा सभी दाग
4. चलो जोत में, और कब्र भी
डरा सकेगी ना;
महिमा से हटे अंधेरा
क्योंकि मसीह विजय
5. चलो जोत में और पाओगे
कि हटा अंधेरा
क्योंकि ज्योति चमकी उससे
जिसमें है सिद्ध दिन

Encouragement - For Walking in the Light

658

1. Walk in the light, and thou shalt know
That fellowship of love
His Spirit only can bestow,
Who reigns in light above.
2. Walk in the light, and thou shalt find
Thy heart made truly His;
Who dwells in cloudless light
enshrined,
In whom no darkness is.
3. Walk in the light, and sin abhorred
Shall ne'er defile again;
The blood of Jesus Christ the Lord
Shall cleanse from every stain.
4. Walk in the light, and e'en the tomb
No fearful shade shall wear;
The glory shall dispel the gloom,
For Christ hath conquered there.
5. Walk in the light, and thou shalt own
Thy darkness passed away,
Because that light hath on thee shone
In which is Perfect day.

6. चलो जोत में, हर राह होगी
शांत, साफ, चमकीली;
क्योंकि रहता खुदा, उसमें,
और खुदा ही है जोत

प्रोत्साहन— व्याकुल न होना

112

1. मालिक कैसे दूँ स्तुति मैं
प्रेम जो मुझे मिला
वो मधुर तेरा अनुग्रह,
श्रेष्ठ फिर भी मुफ्त,
सिखाया वचन का पालन
लाया मुझे तुझ तक ?
2. ना चिंता कोई अपने उपर
पूरा संसार देखे;
ना सतर्क ! ओ खुदा के पुत्र,
कुछ में ना चिंताशील!
पर दे अपनी चिंता उसको
जिसे तेरी परवाह
3. कैसे दूँ स्तुति, उद्धारक
है ये जीवन मधुर,
ली सारी चिंता जो मेरी
तेरे प्रिय चरणों में
रखता हाथ तेरे हृदय पे
शांत कर बेचैन धड़कन ?
4. मैं चाहूँ देना स्तुति और
ये कुछ भी नहीं है
अगर भरे मुख गान से तू
तो मैं गाएँ तुझ तक;
अगर चुप्पी दे बेहतर स्तुति
तो रहूँगा मैं चुप

6. Walk in the light, thy path shall be
Serene and clear and bright;
For God, by grace, shall dwell in thee,
And God Himself is Light.

Encouragement - for not being Anxious

661

1. Master, how shall I bless Thy name
For love so great to me,
For sweet enablings of Thy grace,
So sov'reign, yet so free,
That taught me to obey Thy word,
And cast my care on Thee?
2. No anxious thought upon thy brow
The watching world should see;
No carefulness! O child of God,
For nothing careful be!
But cast thou all thy care on Him
Who always cares for thee.
3. How shall I praise Thee, Savior dear,
For this new life so sweet,
For taking all the care I laid
At Thy beloved feet,
Keeping Thy hand upon my heart
To still each anxious beat?
4. I long to praise Thee more, and yet
This is no care to me;
If Thou shalt fill my mouth with songs
Then I shall sing to Thee;
And if my silence praise Thee best,
Then silent I will be.

5. अगर ये चाह तेरी प्रभु,
ओ भेज मुझे आगे
हो दूत दुसरो के लिए
स्वाद ले और वो देखें
कितना अच्छा तू उनके लिए
जो चिंता तुझे दे

5. Yet if it be Thy will, dear Lord,
Oh, send me forth to be
Thy messenger to careful hearts,
To bid them taste, and see
How good Thou art to those who cast
All all their care on Thee.

प्रोत्साहन— बढ़ने के लिए

113

1. "आगे!" बने नारा
कदम, सुर हो एक;
ढूँढ़ चीज सामने ही,
ना देखे पीछे;
जला दे आग स्तंभ
सेना के सर पे;
कौन चाहे घबराना;
कप्तान के स्वर से ?
आगे रेगिस्तान में,
सब दुःख से, लड़े य
स्वर्ग का राज्य रुका है
आगे ज्योति में

2. महिमाओ पे महिमा
खुदा ने रखी,
प्राणों से जिन्हें प्रेम,
एक दिन बंटेगी;
आँखों से देखा ना,
ना कानों ने सुना;
ना इनमें कुछ आए
सोच, वचन या शब्द;
आगे चलते और
जहां ज्योति राज,
जब तक हटे ना ओट,
जब तक हो विश्वास !

Encouragement - for Pressing on

664

1. "Forward!" be our watchword,
Steps and voices joined;
Seek the things before us,
Not a look behind;
Burns the fiery pillar
At our army's head;
Who shall dream of shrinking,
By our Captain led?
Forward through the desert,
Through the toil and fight;
Heaven's Kingdom waits us,
Forward into light.

2. Glories upon glories
Hath our God prepared,
By the souls that love Him,
One day to be shared:
Eye hath not beheld them,
Ear hath never heard;
Nor of these hath uttered
Thought or speech or word;
Forward, marching forward
Where the kingdom's bright,
Till the veil be lifted,
Till our faith be sight!

1. ओ! आओ करे प्रभु में सदा आनंद
भले चारो ओर सभी कष्ट दे
भले बहें दुःख की सागर लहरो सी
हां अच्छा है गाना, विलाप से

तो आओ करे आनंद, हमेशा आनंद
हां अच्छा है गाना, विलाप से
हां बेहतर है जीना मृत्यु से
आओ करे हमेशा आनंद

2. आह! हो हमेशा आनंदित प्रभु में
जब प्रलोभक की तीर है चलती
हां शैतान भयभीत हमेशा समय से
विलाप से अधिक, गाने से

3. आह! हो हमेशा आनंदित प्रभु में
जब दुर्बलता हमें चुराये
ना कुछ हर्ष सा जो बल को वापस लाए
हां आनंद चंगाई का सोता है

1. O let us rejoice in the Lord evermore,
Though all things around us be trying,
Though floods of affliction like sea
billows roar,
It's better to sing than be sighing.

Then rejoice evermore, rejoice
evermore,
It is better to sing than be
sighing:
It is better to live than be dying;
So let us rejoice evermore.

2. O let us rejoice in the Lord evermore,
When the darts of the tempter are
flying,
For Satan still dreads, as he oft did of
yore,
Our singing much more than our
sighing.

3. O let us rejoice in the Lord evermore,
When sickness upon us is stealing,
No cordial like gladness our strength
can restore,
For joy is the fountain of healing.

आन्तरिक जीवन के विभिन्न पहलू — दो आत्माएं एक की तरह

Various Aspects of the Inner Life The Two Spirits as One

1. हे प्रभु तू अब आत्मा हैं
हमारी आत्मा में जीता हैं;
दोनों एक आत्मा हो गए,
एकत्व देता हैं।

1. O Lord, Thou art the Spirit now
Who in our spirit lives;
One spirit have the two become,
Which oneness to us gives.

2. आत्मा मेरी आत्मा के साथ
सदा गवाही देती हैं
कि हम पिता की सन्तान हैं
और महिमा के वारिस हैं।

3. आत्मा में हम तुझे छूते
धन का आनन्द करने को
और आत्मा के रूप में देते
मिलावट के बिना।

4. आत्मा में हम सदा चले
तेरा पीछा करें
आत्मा का रूप, अगुवाई करें
रोज प्रकाश प्रदान करें।

5. आत्मा में तेरी आत्मा से
आराधना करते हैं
तेरी आत्मा के द्वारा हमें
सामर्थ मिलती है।

6. प्रभु तेरी आत्मा के साथ
प्रार्थना भेंट करते हैं
आत्मा के रूप में तुम, हममें
अवर्णनीय कराहता हैं।

7. हम आत्मा की ओर मुड़ते हैं
वहाँ तुझे संपर्क करें
आत्मा में दिव्य विरासत को
हम सब भागी होंगे।

8. यह क्या एकता हैं मेरे प्रभु
दो आत्माएँ, लिपट गई
तेरी आत्मा मेरी आत्मा में,
मेरी आत्मा तेरी आत्मा में।

2. Thy Spirit with our spirit, Lord,
The witness ever bears
That we the Father's children are
And of God's glory heirs.

3. Tis in our spirit Thee we touch
Thy riches to enjoy,
And as the Spirit Thou dost give
Thyself without alloy.

4. 'Tis in our spirit we may walk
And follow Thee alway,
While, as the Spirit, Thou dost lead
And light impart each day.

5. In spirit, by Thy Spirit, Lord,
We live and worship Thee;
Thou, in our spirit, thru Thine own
Strengtheneth constantly.

6. In spirit, with Thy Spirit, Lord,
We offer prayer to Thee,
While, as the Spirit, Thou in us
Groanest unutterably.

7. We to our spirit would return
And there would contact Thine;
'Tis in the spirit we may share
Our heritage divine.

8. What oneness, O my Lord, is this-
Two spirits intertwine!
Thy Spirit in our spirit lives,
And ours abides in Thine!

**आन्तरिक जीवन के विभिन्न पहलू –
तोड़ना और मुक्त करना**

116

1. त्रिएक परमेश्वर की आत्मा
हमारी आत्मा में रहती है
बहना चाहती है वह सदा हमसे
कि मसीह इश्वर में प्रकट हो
2. पर बाहरी, स्वभाविक मनुष्य से
आत्मा अंदर में कैद रहती है
उससे घर देने के बजाय
हम उसकी कैद बन जाते हैं
3. वह अनमोल खजाने के समान है
मिट्टी के पात्र में समाया हुआ
पात्र को टूटना ही होगा
कि खजाना प्रकट हो जाए
4. प्रभु को अहम् को तोड़ना होगा
बाहरी मनुष्य बाधा है डालता
इसे पूरा टूटना होगा
कि आत्मा मुक्त हो सके
5. इस कारण से ही हमारा प्रभु
वातावरण में दुखों की
कुछ युक्तियों का बनाता है
और बाहरी मनुष्य को वह तोड़ता
6. बाहरी मनुष्य, स्वयं और प्राण
को खत्म होना, घटना है
फिर आंतरिक मनुष्य, हमारी आत्मा
आत्मा के साथ मुक्त होवेगा

**Various Aspects of the Inner Life
Breaking and Releasing**

749

1. The Spirit of the triune God
Within our spirit now doth rest;
He ever seeks thru us to flow,
That God in Christ may be expressed.
2. But by the outward, natural man
The Spirit is confined within;
Instead of giving Him a home,
A prison we've become to Him.
3. He's like a treasure of great worth
Contained in vessels earthen-made;
The vessel must be broken through
And thus the treasure be displayed.
4. Oh, how the Lord our self must break,
Our outward man does so impede!
It must be broken thoroughly,
And thus the Spirit will be freed.
5. This is the reason why the Lord
For us a certain measure makes
Of circumstantial suffering;
'Tis thus our outward man He breaks.
6. The outward man, the self, the soul,
Must be consumed, must be
decreased;
The inner man, our spirit, then
Shall with the Spirit be released.

7. प्रभु, पवित्र तोड़ मुझे तू दे
पूर्ण होने से मुझे छोड़
ग्रहण करने को इच्छुक बना
जख्म जो प्राण को तू देता है

8. ओह मुझे कदर करना सिखा
तोड़ने की, तेरी शिकायत न करूँ
लाभ के बजाय, हानियों की
कीमत जानूँ, मैं सबसे ज्यादा

7. Lord, grant Thy holy brokenness,
Deliver me from being whole;
And make me willing to receive
The wounds that Thou wouldst give my
soul.

8. Oh, cause me to appreciate
Thy breaking, never to complain;
And grant that I may value more
All kinds of loss instead of gain.

आन्तरिक जीवन के विभिन्न पहलू – रूपांतरण

117

1. इच्छा हैं यही खुदा की
हम सब पुत्र जैसे हो
यह हैं परिवर्तन कार्य
आत्मा से ही पूरा हो।
अपने जैसा प्रभु बदलो
मन, भाव व इच्छा में,
अपनी आत्मा से सीचों
भर दो पूरे जीवन से।
2. पुनः जीवित किया खुदा ने
आत्मा में जीवन द्वारा
हमें अवश्य वह बदलें
प्राण में अपने जीवन से।
3. आत्मा से बाहर वह फैलता
प्राण में हमें बदलने को
अन्दर से नया वह करता
अपने वश में करने को
4. आत्मा की अपनी शक्ति से
अपने जैसा बदले
अपनी महिमा से महिमा तक
अपने रूप में बदलें।

Various Aspects of the Inner Life Transformation

750

1. God's intention is to have us
All conformed to His dear Son;
Thus a work of transformation
By the Spirit must be done.
Lord, transform us to Thine
image
In emotion, mind and will;
Saturate us with Thy Spirit,
All our being wholly fill.
2. God hath us regenerated
In our spirit with His life;
But He must transform us further -
In our soul by his own life.
3. Spreading outward from our spirit
Doth the Lord transform our soul,
By the inward parts renewing,
Till within His full control.
4. By the power of His Spirit
In His pattern He transforms;
From His glory to His glory
To His image He conforms.

5. पवित्र करता वह बदलता
परिपक्व उसके जैसे
प्राण को पूर्ण वह बदलता
रूप में हो उस के जैसे।

5. He transforms, all sanctifying,
Till like Him we are matured;
He transforms, our soul possessing,
Till His stature is secured.

प्रार्थना — महापवित्रता में

Prayer - In the Holiest

118

770

1. महापवित्र में छूना सिंहासन को,
अनुग्रह नदी जैसे बहती
महापवित्र में छूना सिंहासन को,
अनुग्रह नदी जैसे बहती।

1. In the holiest place, touch the throne
of grace,
Grace as a river shall flow;
In the holiest place, touch the throne
of grace,
Grace as a river shall flow.

हाल्लेलुईया, हाल्लेलुईया
अनुग्रह नदी जैसे बहती
हाल्लेलूयाह, हाल्लेलूयाह
अनुग्रह नदी जैसे बहती।

Hallelujah! Hallelujah!
Grace as a river shall flow;
Hallelujah! Hallelujah!
Grace as a river shall flow.

2. महापवित्र में उसके सम्मुख जीना
मेरे द्वारा ज्योति चमके
महापवित्र जगह में उसके सम्मुख जीना
मेरे द्वारा ज्योति चमके।

2. In the holiest place, live before His
face,
Light of glory thru me will shine;
In the holiest place, live before His
face,

हाल्लेलूयाह, हाल्लेलूयाह
मेरे द्वारा ज्योति चमके
हाल्लेलूयाह, हाल्लेलूयाह
मेरे द्वारा ज्योति चमके।

Light of glory thru me will shine.
Hallelujah! Hallelujah!
Light of glory thru me will shine;
Hallelujah! Hallelujah!
Light of glory thru me will shine.

3. आत्मा मुड़ने से, और धूपदान जलने से,
छूते जीवित सोते का जीवन
आत्मा मुड़ने से, और धूपदान जलने से,
छूते जीवित सोते का जीवन।

3. To the spirit turn, and the incense burn,
Touch the living fountain of life;
To the spirit turn, and the incense burn,
Touch the living fountain of life.

हाल्लेलुईया, हाल्लेलुईया
छूते जीवित सोते का जीवन
हाल्लेलुईया, हाल्लेलुईया
छूते जीवित सोते का जीवन ।

Hallelujah! Hallelujah!
Touch the living fountain of life;
Hallelujah! Hallelujah!
Touch the living fountain of life.

प्रार्थना — एक मन से

119

1. एक मन में प्रार्थना करें
ना कि सोच के अनुसार
केवल अभिषेक के द्वारा
जैसे प्रभु ने चाहा ।
एक मन में प्रार्थना करो
ना कि सोच के अनुसार
केवल अभिषेक के द्वारा
जैसे प्रभु ने चाहा ।
2. एक मन में प्रार्थना करो
कूस द्वारा खुद को इन्कार
सारी इच्छा और इरादे
अब आत्मा नियंत्रित करें
3. एक मन में प्रार्थना करो
प्रार्थना जैसे स्वर्गों में
भौतिक रुचियाँ कुचले
युद्ध करे दुष्टात्माओं से
4. एक मन में प्रार्थना करो
विनती से सम्बन्धित है
प्रभु और उसका मन खोजो
आत्मा की एकता में ।
5. एक मन में प्रार्थना करो
प्रार्थना में सदा जागो
राज्य और महिमा के लिये
प्रार्थना करें एकता में

Prayer - with One Accord

779

1. Pray with one accord in spirit,
Not according to our thought,
But alone by the anointing,
As the Lord has ever sought.
Pray with one accord in spirit,
Not according to our thought,
But alone by the anointing,
As the Lord has ever sought.
2. Pray with one accord in spirit,
By the cross deny the soul;
All desires and all intentions
Let the Spirit now control.
3. Pray with one accord in spirit,
Pray as in the heavenlies;
All the earthly interests treading,
Fight the principalities.
4. Pray with one accord in spirit,
Supplicate relatedly;
Seek the Lord, His mind, His leading,
In the Spirit's harmony.
5. Pray with one accord in spirit,
Pray and watch persistently;
For God's kingdom and His glory,
Pray and watch in harmony.

6. एक मन में प्रार्थना करे
एकता में खोजे उसको
उसकी देह की आत्मा में
सदा प्रार्थना करेंगे ।

प्रार्थना – प्रभु के साथ संगति

120

1. प्रार्थना से संगति करो
आत्मा में ढूढ़ उसको
उपस्थिति में कह और सुन
गुप्त स्थान में प्रतीक्षा कर

प्रार्थना से संगति करो
आत्मा में ढूढ़ उसको
उपस्थिति में कह और सुन
गुप्त स्थान में प्रतीक्षा कर

2. प्रार्थना से संगति करो
अपना हृदय पूरा खोल
देख उसको उघाड़े चेहरे से
जो सच्चा, शुद्ध, एक मात्र
3. प्रार्थना से संगति करो
विश्वास से ढूढ़ उसको
आत्मा में छूना सीखो
देख उसको आदर से
4. प्रार्थना से संगति करो
दिखावे में कुछ न बोल
आत्मा के अनुसार ही माँग
प्रार्थना कर आन्तरिक भाव से
5. प्रार्थना से संगति करो
उत्सुकता से उसको सुन
उसकी मर्जी से प्रभावित हो
मान उसको अन्दर से

6. Pray with one accord in spirit
Seeking God in unity;
In the Spirit of the Body
Ever pray in harmony.

Prayer - Fellowship with the Lord

784

1. Pray to fellowship with Jesus,
In the spirit seek His face;
Ask and listen in His presence,
Waiting in the secret place.

Pray to fellowship with Jesus,
In the spirit seek His face;
Ask and listen in His presence,
Waiting in the secret place.

2. Pray to fellowship with Jesus,
Fully opened from within,
With thy face unveiled, beholding,
Single, pure, and genuine.
3. Pray to fellowship with Jesus,
Seeking Him in confidence;
Learn to touch Him as the Spirit,
Looking up in reverence.
4. Pray to fellowship with Jesus,
Speaking nothing in pretense;
Ask according to the spirit,
Praying by the inner sense.
5. Pray to fellowship with Jesus,
List'ning earnestly to Him;
Be impressed with His intentions,
Yielding to Him from within.

6. प्रार्थना से संगति करो
 उसके मुख मंडल में स्नान
 उसकी सुन्दरता से हो संतुष्ट
 उसके प्रताप को बिखेर

6. Pray to fellowship with Jesus,
 Bathing in His countenance;
 Saturated with His beauty,
 Radiate His excellence.

प्रार्थना — प्रभु से कहना

Prayer - Telling the Lord

121

789

1. यीशु कैसा मित्र प्यारा!
 पाप और दुःख उठाने को,
 उस की शरण हम ले सकते
 हम पर दुःख का भार जब हो।
 दुःख कितने हम व्यर्थ उठाते
 व्यर्थ ही शांति हैं खोते,
 यह सब केवल इसलिए कि
 ख्रिस्त को नहीं बतलाते।

1. What a Friend we have in Jesus,
 All our sins and griefs to bear!
 What a privilege to carry
 Everything to God in prayer!
 O what peace we often forfeit,
 O what needless pain we bear,
 All because we do not carry
 Everything to God in prayer!

2. आती हम पर क्या परीक्षा
 चिन्ता, व्याकुलता
 साहस अपना हम न छोड़े
 प्रार्थना में उस से कहे,
 सच्चा मित्र ऐसा कौन हैं
 जो संभाले दुःखों में
 सारी निर्बलता वह जानता
 प्रार्थना में उस से कहें।

2. Have we trials and temptations?
 Is there trouble anywhere?
 We should never be discouraged,
 Take it to the Lord in prayer.
 Can we find a friend so faithful
 Who will all our sorrows share?
 Jesus knows our every weakness,
 Take it to the Lord in prayer.

3. क्या दबे हैं भरी बोझ से
 सारा बल जाता रहा?
 प्यारा ख्रिस्त ही हैं सहारा
 प्रार्थना में उस से कहें
 क्या मित्रों ने तुझ को छोड़ा
 प्रार्थना में उस से कहें,
 अपनी गोंद में तब छिपा के
 शांति वह देगा हमें।

3. Are we weak and heavy-laden,
 Cumbered with a load of care?
 Precious Savior, still our refuge—
 Take it to the Lord in prayer;
 Do thy friends despise, forsake thee?
 Take it to the Lord in prayer;
 In His arms He'll take and shield thee,
 Thou wilt find a solace there.

1. मेरा दिल भुखा, और आत्मा प्यासी,
मैं आता हूँ, प्रभु पाऊँ पूर्ति
कुछ नहीं, पर तू है सब कुछ मेरा
तू भूख और प्यास को संतुष्ट करें

खिला प्रभु, पीने को दे
भर मेरी भुख को, प्यास बुझा दे
आनन्द से भर, बने जीवन का बल
भर दे भूख को, और प्यास बुझा दें

2. तू मेरा खाना और जीवन का जल
आत्मा को संचेत और ऊँचा करें
मैं तुझे खाना और पीना चाहता
प्रार्थना, अध्ययन से करें आनन्द
3. तू ही वचन खुदा की पूर्णता से,
तू आत्मा भी, कि खुदा जीवन हो
वचन में भोजन का आनन्द करूँ
आत्मा के समान जल मेरे लिए।
4. तू स्वर्ग से उतरा, भोजन के रूप,
पिलाने के लिए मारा गया
भोजन जैसा तू असमाप्त पूर्ति
झरना और जल बना मेरे लिए।
5. तू वचन में आत्मा और जीवन हैं
कि वचन द्वारा तुझे खा सकें
आत्मा तू जीये मेरी आत्मा में
तेरी आत्मा में, मैं पी सकूँ

1. My heart is hungry, my spirit doth
thirst;
I come to Thee, Lord, to seek Thy
supply;
All that I need is none other but Thee,
Thou canst my hunger and thirst
satisfy.
Feed me, Lord Jesus, give me
to drink,
Fill all my hunger, quench all my
thirst;
Flood me with joy, be the strength
of my life,
Fill all my hunger, quench all my
thirst.
2. Thou art the food and the water of life,
Thou canst revive me, my spirit upbear;
I long to eat and to drink here of Thee,
Thyself enjoy through my reading and
prayer.
3. Thou art the Word with God's fulness
in Thee,
Thou too the Spirit that God my life
be;
Thee in the Word I enjoy as my food,
Thou as the Spirit art water to me.
4. Thou from the heavens as food camest
down,
Thou to be drink hast been smitten for
me;
Thou as the food, my exhaustless
supply,
Thou as the water, a stream unto me.

6. वचन के पास आकर, आनन्द करते
तुझे खाने से भूख मिट जाती हैं
अपनी आत्मा में मुड़ता तेरी ओर
पीता हूँ जब तक, प्यास ना बुझ जाए।

7. खाते और पीते प्रभु यीशु को
पढ़ना—खाना, और पीना—प्रार्थना हैं
पढ़ना, प्रार्थना से, मैं खाता पीता,
पढ़ना—प्रार्थना प्रभु हैं आहार।

8. हे मेरे प्रभु, तुझे भोज करूँ
आत्मा और वचन से मुझे भरो
प्रभु मेरे लिए एक भोज बनों
जैसा मनुष्य ने ना आनन्द किया।

5. Thou in the Word art the Spirit and life,
Thus by the Word I may feed upon
Thee;
Thou dost as Spirit in my spirit live,
Thus I may drink in the spirit of Thee.

6. Now to enjoy Thee I come to Thy Word,
On Thee to feed till my hunger is o'er.
Now in my spirit I turn unto Thee,
Of Thee to drink till I'm thirsty no more.

7. Feeding and drinking, Lord Jesus, of
Thee,
Feeding by reading, and drinking by
prayer;
Reading and praying, I eat and I drink,
Praying and reading - Lord, Thou art
my fare.

वचन का अध्ययन — वचन को खाना

123

1 मैं आता हूँ, प्रभु
दिल प्यासा तेरे लिए
तुझको मैं खाता, पीता हूँ
तुझे आनन्द करता।

2 तेरा मुख देखने को
मेरा दिल रोंता है
तुझको पीना मैं चाहता हूँ
मेरी प्यास बुझाने को।

8. Here, O my Lord, may I feast upon
Thee;
Flood with Thy Spirit and fill
by Thy Word;
May, Lord, Thou be such a feast unto
me
As man hath never enjoyed nor e'er
heard.

Study of the Word - Feeding on the Word

812

1. I come to Thee, dear Lord,
My heart doth thirst for Thee;
Of Thee I'd eat, of Thee I'd drink,
Enjoy Thee thoroughly.

3 तेरा महिमा मय मुख
देखने को दिल चाहता
यहाँ रहूँ और ना चलू
निरंतर देखता हूँ।

4. ऐसी संगति में
प्रभु अनुग्रह हैं
मेरा दिल आत्मा भर गया
तुझमें आराम करूँ।

5. मैं यहाँ ठहरता हूँ
तुझें ढूँढ़ता रहूँ
प्रार्थना वचन में सदा
जब तक तू ना बहें।

कलीसिया — मसीह की वृद्धि

124

1. देह संपूर्णता के रूप, में
जीवन को प्रकट करें
जैसे कलीसिया उसकी देह
जीवन को प्रकट करें।

2. जैसे हव्वा आदम का भाग थी
उस में से ली गई
कलीसिया उसकी बढ़ोतरी
स्वयं अपने आप के साथ।

3. दफनाया गया दाने के द्वारा
गेंहुओ का रूप लिया
कई गेहूँ एक साथ मिश्रित हो कर
एक रोटी बन गई।

2. Just to behold Thy face,
For this my heart doth cry;
I deeply long to drink of Thee
My thirst to satisfy.

3. Thy glorious, radiant face
My heart delights to see;
Here I'd abide and ne'er depart,
Beholding constantly.

4. In such a fellowship
Thou, Lord, art grace to me;
My heart and spirit gladdened, filled,
I enter rest in Thee.

5. Lord, I would linger here,
Still seeking after Thee,
Continue in the Word and prayer
Till Thou dost flow thru me.

The Church - Increase of Christ

819

1. As the body is the fulness
To express our life,
So to Christ the Church, His Body,
Doth express His life.

2. E'en as Eve is part of Adam
Taken out of him,
So the Church is Christ's own increase
With Himself within.

3. As from out the buried kernel
Many grains are formed,
As the grains together blended
To a loaf are formed;

4. कई मसीहियों की कलीसिया
मसीह को गुणन करती
एक देह के रूप में प्रकट करती
खुदा को महिमा देते।

5. दाखलता की डालियाँ के रूप में
उसका बहारी फैलाव
बने रहते, फल को लाते
उसमें एक गुच्छे जैसे।

6. कलीसिया के अनेक अंग
मसीह का विस्तार हैं
उसके साथ जीवन में हम एक हैं
उसे दूर तक फैलाये।

7. पूर्णता, बढ़त प्रतिलिपिकरण
पूर्ण प्रकटीकरण
वृद्धि फैलाव निरंतरता
अधिशेष, प्रचुरता।

8. मसीह के लिए कलीसिया
जैसे खुदा मसीह में,
छुड़ाए गए लोगों द्वारा
महिमावित हो जाएं।

9. कलीसिया और मसीह एक साथ
परमेश्वर का बड़ा भेद,
परमेश्वरत्व मानवता के
साथ मिश्रित हो गई।

4. So the Church, of many Christians,
Christ doth multiply,
Him expressing as one Body,
God to glorify.

5. As the branches of the grapevine
Are its outward spread,
With it one, abiding, bearing
Clusters in its stead;

6. So the Church's many members
Christ's enlargement are,
One with Him in life and living,
Spreading Him afar.

7. Fulness, increase, duplication,
His expression full,
Growth and spread, continuation,
Surplus plentiful,

8. Is the Church to Christ, and thereby
God in Christ may be
Glorified thru His redeemed ones
To eternity.

9. Thus the Church and Christ together,
God's great mystery,
Is the mingling of the Godhead
With humanity.

कलीसिया — उसकी सामान्य परिभाषा

125

1. मसीह की देह कलीसिया
पिता का निवास स्थान
बुलाये लोगो की सभा
मानव के साथ मिश्रण
सृष्टि के पूर्व चुने गये

The Church - Her General Definition

824

1. The Church is Christ's own Body,
The Father's dwelling-place,
The gathering of the called ones,
God blended with man's race;
Elect before creation,

छुड़ाया मृत्यु से
उसका स्वभाव और पदवी
स्वर्ग का ना भौतिक है।

Redeemed by Calv'ry's death,
Her character and standing
Of heaven, not of earth.

2. नई सृष्टि का मनुष्य
प्रभु से जन्मा है
आत्मा में बपतिस्मा लिया
वचन द्वारा पवित्र
मसीह जीवन और सार है
और महिमामय सिर
सब शत्रुओं के उपर
उसके साथ चढ़ गया।

2. New man of new creation,
Born through her risen Lord,
Baptized in God the Spirit,
Made holy by His Word;
Christ is her life and content,
Himself her glorious Head;
She has ascended with Him
O'er all her foes to tread.

3. उसकी एक नींव मसीह है
कोई और ना डाल सकें
सब कुछ जो उसके पास है
हर रूप में दिव्य है
अंग जे आत्मा के द्वारा
मृत्यु को अपनाते
पुनरुत्थान में निर्माण

3. Christ is her one foundation,
None other man may lay;
All that she has, as Christ, is
Divine in every way;
Her members through the Spirit
Their death on Calv'ry own;
They're built in resurrection-
Gold, silver, precious stone.

4. खुदा, प्रभु, आत्मा एक
उसके तत्व एक है
एक विश्वास, आशा, बपतिस्मा
पुत्र में एक देह है
उसमें त्रिएक परमेश्वर
एक देह के अंग है
विश्वास में एक हो गये
महिमा की आशा में।
सोना, चाँदी कीमती पत्थर।

4. One God, one Lord, one Spirit-
Her elements all one-
One faith, one hope, one baptism,
One Body in the Son;
The triune God is in her,
One Body members own,
By faith they are united,
In hope of glory shown.

5. हर जाति और वर्गों से
आते हैं सारे अंग
उन वर्गों की अपेक्षा
संयुक्त हो गया है
वहाँ न उँचा नीचा
और ना अन्यजाति
न मुक्त, न दास, न स्वामी
पर एक "नया मनुष्य"

5. From every tribe and nation
Do all the members come,
Regardless of their classes
United to be one.
No high there is, nor lowly,
No Jew, nor Gentile clan,
No free, nor slave, nor master,
But Christ, the "one new man."

6. एक देह है सार्वभौमिक
हर एक जगह प्रकट
निवास का स्थान है उसका
केवल भूमि रखता
स्थानीय है प्रशासन
देना जवाब उसको
सार्वभौमिक संगति
एक मन में थामते हैं।

7. स्थानीय मिलन का रूप
नया यरूशलेम
उसका पहलू और विवरण
सब में देखना है
मसीह दीवट जो चमकता
परमेश्वर के साथ उसमें
ज्योति में खुदा साथ
महिमामय रूप को
दीवट प्रकट करता।

कलीसिया – उसका निर्माण

126

1. तेरी योजना की स्तुति हो
कि हम तेरे निवास स्थान हों
हममें तू रहे भर जाए
कि पुत्र प्रकट हो सके
2. तेरे स्वरूप में होने पर भी
तेरा अधिकार प्राप्त कर भी
हम ते मात्र धूल से बने हुए
दिव्यता के अंश के ही बिना
3. जब तेरा जीवन ग्रहण करते
अनुग्रह से स्वभाव को रखते
तेरे साथ हम मिश्रित होते
महिमामय देह को प्रकट करेंगे

6. One Body universal,
One in each place expressed;
Locality of dwelling
Her only ground possessed;
Administration local,
Each answ'ring to the Lord;
Communion universal,
Upheld in one accord.

7. Her local gatherings model
The New Jerusalem;
Its aspects and its details
Must show in all of them.
Christ is the Lamp that shineth,
With God within, the Light;
They are the lampstands bearing
His glorious Image bright.

The Church - Her Building

837

1. We praise Thee, Lord, for Thy great
plan
That we Thy dwelling-place may be;
Thou live in us, we filled with Thee,
Thou in the Son expressed might be.
2. Though in Thine image made by Thee
And given Thine authority,
Yet we are only made of clay
Without a trace of divinity.
3. When we receive Thee as our life,
Thy nature we thru grace possess;
Mingled together, we with Thee
One Body glorious will express.

4. जब तेरा जीवन प्राण से बहता
हर भाग को भरता, नया करता
तेरे साथ हम मिश्रित होते
महिमामय देह को प्रकट करेंगे
5. पर प्रभु हम एहसास करते
लोगों के गुणगान की यह नहीं
पर निर्माण की सामाग्री है
तेरी महिमामय घर के लिए
6. प्रभु हम खुद को देते हैं
अपने हाथों में ग्रहण कर
तोड़, मोड़ और स्वयं साथ निर्मित कर
कि घर की मांग को पूरा करें
7. स्वभाविक जीवन को तोड़ डाल
विचित्र गुणों से व्यवहार कर
कि हम आत्म निर्भर न होंगे
पर संतो साथ एक हो जाए।
8. तब हम तेरी दुल्हन होंगे
तेरे साथ महल में रहेंगे
प्रेम परिपूर्ण को आनंद करेंगे
कितना तक हम संतुष्ट होंगे

कलीसिया – उसका निर्माण

127

1. प्रभु तू कुशल कुम्हार
महिमामय निर्माणकर्त्ता
अपने पात्र को ढालता
और भवन निर्माण करता
मैं मिट्टी का मनुष्य
नया जीवता पत्थर भी
हो सकूँ मैं तेरा पात्र
और तेरा मैं मन्दिर भी

4. When flows Thy life thru all our souls,
Filling, renewing every part,
We will be pearls and precious stones,
Changed to Thine image, as Thou art.
5. But, Lord, we fully realize
These are not wrought men's praise
to rouse,
But as material to be built
Together for Thy glorious house.
6. Here, Lord, we give ourselves to Thee;
Receive us into Thy wise hands;
Bend, break, and build together in
Thee
To be the house to meet Thy demands.
7. Break all the natural life for us,
Deal Thou with each peculiar way,
That we no more independent be
But with all saints are one for aye.
8. Then we shall be Thy Bride beloved,
Together in Thy chamber abide,
Enjoy the fulness of Thy love.
How Thou wilt then be satisfied!

The Church - Her Building

839

1. Lord, Thou art a potter skilled
And a glorious builder too,
Molding for Thy vessel great,
Building with Thy house in view.
I am both a man of clay
And a new-made living stone,
That Thy vessel I may be
And the temple Thou wouldst own.

2. हम तो मिट्टी से बने
रूपांतरित तू कर रहा
जीवन में शुद्ध सोना और
अनमोल पत्थरों समान
हम निर्माण कार्य द्वारा
बनेंगे प्यारी दुल्हिन
एक देह में हम जुड़ेंगे
तेरी तृप्ती के लिए

3. तेरे दिल की पसंद, चाह
अकेला पत्थर नहीं
इन्हें एक साथ जोड़कर,
भवन का निर्माण करना
तू सर्व सम्मिलित मसीह
मोंगता निर्मित कलीसिया
कि सारी समृद्धियां
अपनी रोशनी बिखेरे

4. अध्यात्मिक व्यक्ति नहीं
व्यक्तिगत तरीके से
पर सामूहिक जीवन ही
इच्छा को प्रगट करती
अलग और पृथक अंगें
तुझे व्यक्त नहीं करती
पर निर्मित तेरी देह ही
तेरी पूर्णता होगी

5. निर्मित कर संतों के साथ
स्वतंत्र न होने
पर अपनी योजनानुसार
अब मुझे गठ और जोड़
अनुभव में गर्व न हो,
न ही वर दानों में
निर्माण में मैं सब देता
कि तेरी महिमा होवे

2. Though of clay Thou madest us,
Thou wouldst have us be transformed;
With Thy life as purest gold,
Unto precious stones conformed.
We shall, through Thy building work,
Then become Thy loving Bride,
In one Body joined to Thee,
That Thy heart be satisfied.

3. What Thy heart desires and loves
Are not precious stones alone,
But together these to build
For Thy glory, for Thy home.
Thou, the all-inclusive Christ,
Dost a builded Church require,
That Thy glorious riches may
Radiate their light entire.

4. Not the person spiritual
In an individual way,
But the corporate life expressed
Will Thy heart's desire display.
Members separate and detached
Ne'er express Thee perfectly,
But Thy Body tempered, built,
Ever shall Thy fulness be.

5. Build me, Lord, with other saints,
Independence ne'er allow,
But according to Thy plan
Fitly frame and join me now.
In experience not my boast,
Nor in gifts would be my pride;
For Thy building I give all,
That Thou may be glorified.

1. मुक्त कर आदम के स्वभाव से
कि तेरे साथ निर्मित हों
संतो साथ तेरे मंदिर में
जहां तेरी महिमा देखें
छुड़ा विचित्र लक्षणो से
मेरे स्वतंत्र राहों से
कि हम जीवन भर प्रभु
तेरे ही निवासस्थान हो
2. तेरे जीवन और बहाव से
मैं बढ़ूँ, रूपांतरित हों
संतो के सहयोग के साथ
तेरे अनुरूप बनूँ
तेरी इच्छा में काम करने
देह में क्रम को मैं रखूँ
तेरा उद्देश्य को पूर्ण करने
सदा सेवा, मदद करूँ
3. अपने ज्ञान और अनुभव में
खुद को उंचा न समझूँ
पर अधीन होऊँ, स्वीकारूँ
देह मुझे स्थिर करे
सिर को थामूँ और बढ़ूँ मैं
उसकी बढ़त और मार्ग में
जोड़ो की सहायता से मैं
गठ जाऊँ दिन प्रति दिन
4. हर दिन आत्मा के सामर्थ्य से
भीतरी मनुष्य बलवन्त हो
प्रेम परे को जानूँ मैं
चौड़ाई, लम्बाई, उंचाई
समृद्धियों को लेकर मैं
परिपूर्णता तक भरूँ
सिद्ध मनुष्य तक बढ़ूँ मैं
ताकि देह तू बनाए

1. Freed from self and Adam's nature,
Lord, I would be built by Thee
With the saints into Thy temple,
Where Thy glory we shall see.
From peculiar traits deliver,
From my independent ways,
That a dwelling place for Thee, Lord,
We will be thru all our days.
2. By Thy life and by its flowing
I can grow and be transformed,
With the saints coordinated,
Built up, to Thee conformed;
Keep the order in the Body,
There to function in Thy will,
Ever serving, helping others,
All Thy purpose to fulfill.
3. In my knowledge and experience
I would not exalted be,
But submitting and accepting
Let the Body balance me;
Holding fast the Head, and growing
With His increase, in His way,
By the joints and bands supplying,
Knit together day by day.
4. By Thy Spirit daily strengthened
In the inner man with might,
I would know Thy love surpassing,
Know Thy breadth and length and
height;
Ever of Thy riches taking,
Unto all Thy fulness filled,
Ever growing into manhood,
That Thy Body Thou may build.

5. तेरे घर में, तेरी देह में
निर्मित होना चाहूँ मैं
कि सामुहिक पात्र में फिर
तेरी महिमा सब देखे
दुल्हन, महिमामय शहर यह
इस पृथ्वी पर प्रकट हो
चमकते दीवट के रूप में
तुझे प्रकट करने का

‘कलीसिया — उसका निर्माण

129

1. प्रभु मेरा जीवन
मुझ में तू रहता
परमेश्वर की पूर्णता
मुझको तू देता
पवित्र स्वभाव से
मैं पवित्र हुआ
तेरे पुनरुत्थान से
विजय मैं होता
2. अब तेरा बहता जीवन
देता है रोशनी
संगति करने को
आत्मा में लाता
मेरी जरूरतों की
पूर्ति तू करता
मुझको पवित्र कर
स्वयं में स्थिर करता
3. अभिषिक्त आत्मा तेरा
मुझको भरता है
प्राण और आत्मा को मेरे
संतुष्ट करता है
बदलता है हर भाग
अनुरूप होने
जब तक तेरा जीवन
परिपक्व न हो

5. In God's house and in Thy Body
Built up I long to be,
That within this corporate vessel
All shall then Thy glory see;
That Thy Bride, the glorious city,
May appear upon the earth,
As a lampstand brightly beaming
To express to all Thy worth.

The Church - Her Building

841

1. Thou art all my life, Lord,
In me Thou dost live;
With Thee all God's fulness
Thou to me dost give.
By Thy holy nature
I am sanctified,
By Thy resurrection,
Vict'ry is supplied.
2. Now Thy flowing life, Lord,
Doth enlighten me,
Bringing in the spirit
Fellowship with Thee;
All my need supplying,
Making Thy demand,
Leading me to cleansing
And in Thee to stand.
3. Thy anointing Spirit
Me shall permeate,
All my soul and spirit
Thou wouldst saturate;
Every part transforming
Till conformed to Thee,
Till Thy life shall bring me
To maturity.

4. तेरा प्रचुर जीवन
बहता है भरपूर
नित्य ताजा करता
और सामर्थ देता
मृत्यु निगली गई
कमजोरी दूर हुई
सारे बंधन टूटे
शोक, गीत में बदले

5. खुद को पूरा देता
तुझे ही प्रभु
कि तेरी ही इच्छा
मुझमें पूरी हो
खुद को सुधारने की
कोशिश न करूं
कि बाधा न बनूं
तेरे कार्यो में

6. खुद को मैं हूं रोकता
व्यर्थ प्रयत्नों से
कि जीवन बदले मुझे
पूरी आजादी से
दूसरो संग निर्मित कर
कि हममें तू दिखे
तेरी पूर्ण अभिव्यक्ति
तेरी महिमा हो

4. Lord, Thy life abundant,
Flowing, rich and free,
Constantly refreshes
And empowers me.
Death by life is swallowed,
Weakness is made strong,
All my bonds are broken,
Gloom is turned to song.

5. I would give myself, Lord,
Fully unto Thee,
That Thy heart's desire
Be fulfilled in me.
I no more would struggle
To myself reform,
Thus in me to hinder
What Thou wouldst perform.

6. I would cease completely
From my efforts vain,
Let Thy life transform me,
Full release to gain;
Build me up with others
Till in us Thou see
Thy complete expression
Glorifying Thee.

कलीसिया — उसका आकर्षण

130

1. तेरे निवास से प्रेम करता हूँ
यह तेरी ही कलीसिया
यह तेरा हृदय की खुशी
तू विश्राम पाता है।

The Church - Her Attraction

852

1. Thy dwelling-place, O Lord, I love;
It is Thy Church so blessed,
It is Thy joy and heart's delight
And where Thy heart finds rest.

2. उसके लिए स्वयं को दिया
कि वह तेरी हो जाए
मैं भी अपनी देह देता हूँ
तेरी इच्छा पूरी हो जाए।

3. उसके लिए मेरा जीवन बना
वह मेरा जीना हो जाए
उसके लिए मैं त्याग दूँगा
वह तुझ से भर जाए।

4. कलीसिया तेरी दुहिन हैं
तू अपनी देह में दिख जाए
वह मेरा हृदय की इच्छा
जिस पर मैं झुकता हूँ।

5. उस में तेरी पूरी पूर्ति हैं
तू मुझ को प्रदान करता,
उस में, मैं तेरे अधीन हूँ,
तेरा हृदय सन्तुष्ट करें।

6. तेरे निवास से प्रेम करता हूँ
कलीसिया तेरा घर हैं।
इस में, मैं हमेशा जीऊँगा
और न भटकूँगा कभी।

कलीसिया — उसका आकर्षण

131

1. मैं चाहूँ तेरा राज्य
घर जहाँ तू रहे
कलीसिया वह खरीदा
अपने ही लहू से
2. प्रेम करते कलीसिया से
तू उसकी है दीवार
वो है तेरी आंखों का नूर
और अंकित हाथों में

2. For her, Thyself Thou gavest, Lord,
That she be Thine, complete;
For her, I too my body give,
Thy heart's desire to meet.

3. For her, Thou hast become my life,
That she my living be;
For her, I would forsake myself,
That she be filled with Thee.

4. The Church is Thy beloved Bride,
Thou in Thy Body seen;
She is my joy and heart's desire,
The one on whom I lean.

5. In her, Thy full supply, O Lord,
Thou dost to me impart;
In her am I possessed by Thee
To satisfy Thy heart.

6. Thy dwelling-place, O Lord, I love;
It is Thy Church, Thy home;
In it I would forever live
And never longer roam.

The Church - Her Attraction

853

1. I love Thy kingdom, Lord,
The house of Thine abode,
The Church our blest Redeemer bought
With His own precious blood.
2. I love the Church, O God!
Her walls before Thee stand,
Dear as the apple of Thine eye
And graven on Thy hand.

3. उसके लिए अश्रुएं
प्रार्थनाएं उठते
परवाह और मेहनत उसके लिए
जब तक यह खत्म ना हो

4. पूर्ण आनंद से परे
उसके मार्गों को मानूं
उसकी संगति और गंभीर प्रण
प्रेम और स्तुति के गीत

5. तू सत्य सा कायम
सिंघों को दिया गया
पृथ्वी पर उज्ज्वल महिमा और
स्वर्ग का उज्ज्वल आशीष

कलीसिया – उसकी संगति

132

1. साथ हो प्रभु जब हम अलग हों,
जीवन का सारा मार्ग बतलायें
हमें अपनों से मिलावे,
साथ हो प्रभु जब हम अलग हों

जब तक हम मिलें, जब तक हम
मिलें
यीशु के चरणों के पास
जब तक हम मिलें, जब तक हम
मिलें

साथ हों प्रभु जब हम अलग हों

2. साथ हो प्रभु जब हम अलग हों
अपने पंखों के तले छिपा
प्रतिदिन मन्ना हमें दें
साथ हो प्रभु जब हम अलग हों

3. साथ हो प्रभु जब हम अलग हों
जब जोखिम निकट आये
अपनी गोद की आड़ में ले ले
साथ हो प्रभु जब हम अलग हों

3. For her my tears shall fall,
For her my prayers ascend;
To her my cares and toils be given
Till toils and cares shall end.

4. Beyond my highest joy
I prize her heavenly ways,
Her sweet communion, solemn vows,
Her hymns of love and praise.

5. Sure as Thy truth shall last,
To Zion shall be given
The brightest glories earth can yield,
And brighter bliss of heaven.

The Church - Her Fellowship

861

1. God be with you till we meet again;
By His counsels guide, uphold you,
With His sheep in love enfold you;
God be with you till we meet again.

Till we meet, till we meet,
Till we meet at Jesus' feet;
Till we meet, till we meet,
God be with you till we meet
again.

2. God be with you till we meet again!
'Neath His wings protecting hide you,
Daily manna still provide you;
God be with you till we meet again!

3. God be with you till we meet again!
When life's perils thick confound you,
Put His arms unfailing round you;
God be with you till we meet again!

4. साथ हो प्रभु जब हम अलग हों
प्रेम के झण्डे तले रखे
मरण काल में चैन दिलावे
साथ हो प्रभु जब हम अलग हों

4. God be with you till we meet again!
Keep love's banner floating o'er you,
Smite death's threatening wave before
you;
God be with you till we meet again!

सभाएं – मसीह का प्रदर्शन

133

1. हम जब मिले, मसीह बांटे
उसकी प्रचूरता की बढ़ती
चढ़ाकर खुदा को भोजन
प्रदर्शित हो मसीह
- हो प्रदर्शित मसीह
हो प्रदर्शित मसीह
लाएं कलीसिया में बढ़ती
हो प्रदर्शित मसीह
2. मसीह में जीएं, युद्ध करें
मसीह में दिन रात श्रम करें
उसकी बढ़ती से जुड़ेंगे
हो प्रदर्शित मसीह
3. हमारा जीवन, हम जो भी हैं
सारा तत्व स्वयं मसीह है
जब भी हम फिर मिलते हैं तो
हो प्रदर्शित मसीह
4. सभाओं में हम मसीह ही को
बाँटेंगे एक दूसरों के साथ
आनंद करें परमेश्वर को
हो प्रदर्शित मसीह

Meetings - Exhibiting Christ

864

1. Whene'er we meet with Christ endued,
The surplus of His plenitude
We offer unto God as food,
And thus exhibit Christ.
- Let us exhibit Christ,
Let us exhibit Christ;
We'll bring His surplus to the
church
And thus exhibit Christ.
2. In Christ we live, by Christ we fight,
On Christ we labor day and night,
And with His surplus we unite
To thus exhibit Christ.
3. Our life and all we are and do
Is Christ Himself, the substance true,
That every time we meet anew
We may exhibit Christ.
4. In meetings Christ to God we bear
And Christ with one another share,
And Christ with God enjoying there,
We thus exhibit Christ.

5. जी उठा, आरोहित मसीह
को लाएंगे और चढ़ाएंगे
परमेश्वर को संतुष्ट करके
हो प्रदर्शित मसीह
6. केंद्र, वास्तविकता की
वातावरण, सेवकाई की
हमारे सारे सभाओं में
हो प्रदर्शित मसीह
7. गवाही और प्रार्थना का
संगति जिसमें हम भागी
वरदानों की अभ्यास, जो भी
हो प्रदर्शित मसीह
8. पिता को हम महिमा करें
और ऊँचा करें पुत्र को
सभा के लक्ष्य पूरा करके
हो प्रदर्शित मसीह

5. The risen Christ to God we bring,
And Christ ascended offering,
God's satisfaction answering,
We thus exhibit Christ.
6. The center and reality,
The atmosphere and ministry,
Of all our meetings is that we
May thus exhibit Christ.
7. The testimony and the prayer,
And all the fellowship we share,
The exercise of gifts, whate'er,
Should just exhibit Christ.
8. The Father we would glorify,
Exalting Christ the Son, thereby
The meeting's purpose satisfy
That we exhibit Christ.

सभाएं — परमेश्वर की अराधना करना

134

1. आत्मा और सत्य में प्रभु
मिलते आराधना को
मसीह ने जैसे सिखाया
उसमें निकट आते
2. धन्यवाद खुदा तू आत्मा
निकट और बहुत प्रिय
जीवन में संपर्क हम करे
सत्य में आराधना
3. बनाया आत्मा खुदा ने
कि अराधना करें
सेवा न करें बाहर से
पर ढूँढे अन्दर से

Meetings - Worshiping God

865

1. In spirit and in truth, O Lord,
We meet to worship here;
As taught by Christ, the Son of God,
We now in Him draw near.
2. Thank God, He is a Spirit true,
So near, so dear to us;
That we may contact Him in life,
In truth to worship thus.
3. A spirit God has made for us
That we may worship Him,
Not striving, serving outwardly,
But seeking from within.

4. प्रभु से नया जन्म मिला
नवीन मन व हृदय
निवास करते जीवन जैसे
सच्ची अराधना दे
5. यहां पर करे आराधना
आंतरिक चेतनानुसार
अभिषिक्त उसकी आत्मा से
व्यक्त करें पूर्णता
6. सत्य में सेवा, अराधना
परछाई में ना अब
मसीह में, एक वास्तविकता
आदर हो पिता की
7. खुदा को चढ़ाये मसीह
जिसे अनुभव किया
खुदा के साथ हम भी उसमें
प्रकाश व आनंद लेते
8. आत्मा में और सच्चाई में
एकसाथ मिलें यहां
करने अराधना, स्तुति
दया गद्दी के पास

सभाएं — कार्य करना

135

1. देह के सदस्य जैसे
व्यक्त करें मसीह को
हर एक सिखते कार्य करने
दिखाएं पूर्णता को
हम ना हो केवल दर्शक
अंगों तरह चलते,
न मृत्यु व न हानि
पर दिखाए फायदा

4. Regenerated by the Lord,
Renewed in mind and heart,
He dwells within us as our life
True worship to impart.
5. We worship here according to
The inner consciousness,
Anointed by His Spirit now
His fulness we express.
6. In truth we serve and worship too,
In shadows nevermore,
In Christ, the one reality,
The Father we adore.
7. To God we offer Christ the Lord
Whom we experience;
With God we too delight in Him.
His light and sweetness sense.
8. In spirit and reality
Together here we meet,
To worship, praise, and fellowship
Around the mercy-seat.

Meetings - Functioning

867

1. As members of the Body
Christ we would manifest,
Each learning how to function
His fulness to express;
We would not be spectators
But each as members move,
None bringing death or damage
But each our profit prove.

2. दल की तरह हम कार्य ना करें व्यक्तिगत रूप पर हम सब तालमेल में ही हो एक दूसरे में निर्भर ना चुनाव के द्वारा पर धारा के साथ चलूं ना लाना है विकर्षण जानें आत्मा के मार्ग

3. मसीह पे ही हो ध्यान, ना कोई और हो केन्द्र मसीह के साथ एकता में सारे धन का ले भाग वो है सिर और सार मेरा, उसकी देह व्यक्त करें जो भी करे सभा में उसको ही दर्शाये

4. बनाये प्रेम में एकसाथ ना करे आलोचना एक दुसरे को सिद्ध करते करे हम सब अभ्यास हर एक खुद से हो मुक्त, त्यागे स्वभाविक जीवन आत्मा में सब प्रशिक्षित देह जीवन में ले भाग

2. As in a team we'd never Act independently,
But in coordination,
Each would dependent be;
Not acting by our choosing
But following the flow,
Distraction never bringing,
The Spirit's way we'd know.

3. On Christ we here would focus,
No other center make;
With Christ in sweet communion
His riches to partake.
He is our Head and content,
His Body we express;
Whate'er we do while meeting
Himself must manifest.

4. Built up in love together,
Not one would criticize;
To perfect one another,
We all would exercise.
Each one from self delivered,
The natural life forsakes;
In grace each trained in spirit
The Body-life partakes.

आत्मिक युद्ध – जयवन्त

136

1. क्या तुम एक जयवन्त बनोगें?
मसीह बुला रहा हैं।
क्या तुम उसके पीछे चलो गें
तुम न जानों कैसे।

Spiritual Warfare

894

1. Will you be an overcomer?
Christ is calling now!
Will you then be such a follower,
Though you know not how?

क्या तुम एक जयवन्त बनोगें?
इसे तुम चुनोंगें
मसीह बुलाता, मसीह बुलाता
सुनो उसकी आवाज ।

Will you be an overcomer?
Will you make this choice?
Christ is calling, Christ is calling,
Listen to His voice!

2. क्या तुम एक जयवन्त बनोगें?
प्रभु से खींचें आए
“पहिले प्रेम” को कभी मत छोड़ो,
जब तक उदय न हो ।

2. Will you be an overcomer?
To the Lord be drawn!
Keep the “first love,” never leave it,
Till the break of dawn.

3. क्या तुम एक जयवन्त बनोगें?
जीवन पर निर्भर हो
सताव सहने की हिम्मत करो
विश्वास रखो अन्त तक ।

3. Will you be an overcomer?
On His life depend!
Dare to suffer persecution,
Faithful to the end.

4. क्या तुम एक जयवन्त बनोगें?
गवाही वहन करो
झूठे धर्म से दूर रहो तुम
गुप्त मन्ना बांटों ।

4. Will you be an overcomer?
Testimony bear!
Keep away from false religion,
“Hidden manna” share.

5. क्या तुम एक जयवन्त बनोगें?
सरल, सच्चा और शुद्ध?
जय पाओ बुरी मिश्रण से
शासन सामर्थ पाओ ।

5. Will you be an overcomer,
Simple, real, and pure?
Overcome all evil mixture,
Ruling pow'r secure.

6. क्या तुम एक जयवन्त बनोगें ?
प्रभु पर भरोसा करो
वस्त्र मृत्यु से दूर रखों
जीतों जीवन का इनाम ।

6. Will you be an overcomer?
Trust the living Lord!
Keep your “garments” from the
deadness,
Win the life-reward.

7. क्या तुम एक जयवन्त बनोगें?
कभी न गुनगुने हो
जो पाया उस से न सन्तुष्ट
ज्यादा देखना हैं,

7. Will you be an overcomer?
Never lukewarm be,
Ne'er content with what you've gotten,
More you need to see.

8. क्या तुम एक जयवन्त बनोगें?

प्रभु बुला रहा हैं

उसके प्रति वफादार रहोगें

माँग पूरी करोगे।

8. Will you be an overcomer?

Christ is calling still!

Will you now be loyal to Him,

His demand fulfill.

सेवा – धारा में

Service- In the Stream

137

909

1. धारा में प्रभु के लिए हम काम करे
उसके मन, उसके मार्ग जैसे वचन में है
जीवन के बहाव में काम करे सामर्थ से
इस पल में राज्य और कलीसिया के लिए

धारा में धारा में
काम करे प्रवाह में
धारा में धारा में
काम करे स्वर्गीय दल जैसे

2. धारा में प्रभु के लिए हम काम करे
आत्मा के बहाव में, वचन सिखाता है
स्वतंत्र और व्यक्तिगत रूप में काम न करे
पूर्ण अनुरूपता में सेवा हम करे

3. धारा में प्रभु के लिए हम काम करे
कलीसिया के साथ वचन की ज्योति में
लोगों को देता है वचन और जीव-पूर्ति
योजना पूरा करते, प्रवाह में हम बढ़ते

1. In the stream! in the stream! let us
work
for the Lord,
By His mind, in His way, as revealed
in His Word;
In the flow of His life let us work with
His pow'r
For His Kingdom and Church in the
time of His hour.

In the stream! in the stream!
Let us work in the stream!
In the stream! in the stream!
We'll work as in the heav'nly
team!

2. In the stream! in the stream! let us
work
with the Lord
In the flow of the Spirit, as taught by
His Word;
Never working by self, independent and
free,
But in service related in full harmony.

सुसमाचार प्रचार – मसीह की प्रदानता

138

1. खोई संसार को मसीह बांट
ना बस वचन से, पर जीवन से
संघर्ष में जी रहे प्राणों को
जीवित कर्मों से मसीह बांट

खोई संसार को मसीह बांट
दैनिक चाल में जाने उसको
जो तेरे पास हैं बांट सब के साथ
कर प्रदान मसीह को सबमें

2. खोई संसार को मसीह बांट
अनमोल जो तुझ में रहता है
प्रिय जनो में मसीह बांट
उनकी सफलता, लाभ के समान

3. खोई संसार को मसीह बांट
जो मसीह तू आनंद करता
अपने मित्रों को मसीह दे
गर्व और खुशी के समान

4. खोई संसार को मसीह बांट
जो तेरा जीवन और सब कुछ है
जिनसे मिलो, मसीह बांटो
बड़े, छोटे पापीयों को

3. In the stream! in the stream! let us
work in the Lord,
With the Church, with the saints, in
the light of His Word;
Give the Word, life supply to the people
in need,
Thus fulfilling God's plan, in His flow
we'll proceed.

Preaching of the Gospel- Imparting Christ

922

1. To the lost world minister Christ,
Not just by word, but by life,
Imparting Christ by living deeds
To the poor souls living in strife.

To the lost world minister Christ,
By daily walk making Him
known;
Imparting Christ by whom you
live,
Share with all men what you own.

2. To the lost world minister Christ,
The precious One you possess,
Imparting Christ to those you love
As all their gain and success.

3. To the lost world minister Christ,
The very Christ you enjoy,
Imparting Christ to all your friends
As all their boast and their joy.

4. To the lost world minister Christ,
Who is your life and your all,
Imparting Christ to all you meet,
All fallen ones, great or small.

सुसमाचार प्रचार करना —जीवन बहाव द्वारा

139

1. सुसमाचार को पहुँचाना
आन्तरिक जीवन का बहाव
हमारी गवाही द्वारा
पापीयों को हम पाते।
देना प्रभु जीवित बहाव
तेरा जीवन प्रकट हो
तेरे जीवित पात्रों द्वारा
लोगों को सजीव करें।
2. जीवन से विश्वास दिलाना
ताकि लोग विश्वास करें
जीवन के प्रदान के द्वारा
लोग जीवन को प्राप्त करें
3. हमेशा प्रभु में बन कर
डॉलिया फल लाती हैं
आन्तरिक जीवन बहाव द्वारा
मसीह को हम बांटते हैं।
4. हमारा जीवन प्रचार हो,
मसीह को प्रकट करें
शिक्षा ना हम प्रचार करते
जीवन का बीज बोते हैं।

सुसमाचार प्रचार करना — खाली हाथ से

140

1. क्या मैं खाली हाथ से जाऊँ
अपने प्यारे यीशु पास?
उस की सेवा मैं न करूँ
तो मैं रहूँगा उदास।

Preaching of the Gospel-By the flow of Life

925

1. Outreach of the glorious gospel
Is the flow of life within;
It is by our testimony
That lost sinners we may win.
Grant us, Lord, the living outflow,
May Thy life through us be seen;
Through us as Thy living vessels
Quicken people from within.
2. It is by the life convincing
That the people may believe;
It is by the life imparting
That the souls may life receive.
3. Always in the Lord abiding,
As the branches fruit to bear;
By the inner life out-flowing
Christ with others we may share.
4. May our living be the preaching,
Making Christ to others known;
Not the word of doctrine-preaching,
But the seed of life be sown.

Preaching of the Gospel - Empty Handed?

930

1. "Must I go, and empty-handed,"
Thus my dear Redeemer meet?
Not one day of service give Him,
Lay no trophy at His feet?

क्या मैं खाली हाथ से जाऊँ
अपने प्यारे यीशु पास?
एक भी आत्मा ले न जाऊँ
उसका सेवक हो के खास?

“Must I go, and empty-handed?”
Must I meet my Savior so?
Not one soul with which to greet
Him:
Must I empty-handed go?

2. मौत गर भी, मुझ पर आवे,
उस से मैं न डरूँगा,
लेकिन खाली हाथ गर जाऊँ,
ठण्डी साँस मैं भरूँगा।

2. Not at death I shrink nor falter,
For my Savior saves me now;
But to meet Him empty-handed,
Thought of that now clouds my brow.

3. जितने दिन गंवाये पाप में
अफसोस हैं, अफसोस कमाल
अब मैं मुंजी के कदम पर,
रखता हूँ ये जान-ओ-माल।

3. O the years in sinning wasted;
Could I but recall them now,
I would give them to my Savior,
To His will I'd gladly bow.

4. ऐ मसीह के विश्वासियों,
ऐ मसीही भाईयो,
इस से पहिले मृत्यु आवे,
प्राणों को बचाइयों।

4. O ye saints, arouse, be earnest,
Up and work while yet 'tis day;
Ere the night of death o'ertake thee,
Strive for souls while still you may.

Hope of Glory - Christ in Me

948

महिमा की आशा — मुझमें मसीह

141

1. युगो से जो गुप्त था अब प्रकट हुआ
है मसीह, परमेश्वर की सच्चाई
वह खुदा का देहरूप और मेरा जीवन
होगा मेरी आशा की महिमा

1. Myst'ry hid from ages now revealed to
me,
'Tis the Christ of God's reality.
He embodies God, and He is life to
me,
And the glory of my hope He'll be.

कोरस
महिमा महिमा मसीह मुझमें जीवन!
महिमा महिमा क्या ये आशा है!
अब मेरी आत्मा में वह रहस्य है!
तब वह मेरी महिमा भी होगा।

Glory, glory, Christ is life in me!
Glory, glory, what a hope is He!
Now within my spirit He's the
mystery!
Then the glory He will be to me.

2. मेरी आत्मा में नया जन्म दिया,
प्राण को वह रूपांतरित कर रहा
बदलेगा वह देह को अपने ही तरह
बनाता मुझे अपनी तरह

3. अब जीवन, स्वभाव में मेरे साथ एक है
फिर उसमें, महिमा, हम होंगे
सदा उपस्थिति को आनंद करेंगे
पूर्ण अनुरूपता में उसके साथ

महिमा की आशा — मसीह महिमाकरण की तरह

142

1. मसीह महिमा की आशा, वह है मेरा जीवन
उसने नया जन्म दिया, संतृप्त किया मुझे
मेरी देह को बदलने, सामर्थ के साथ आता
उसकी महिमामय देह सा, हम होंगे
मसीह, वह आ रहा,
महिमाविन्त करने को
मेरी देह को अपने समान,
रूपांतरित करेगा
वह आ रहा, आ रहा,
छुटकारा को देने
संतों की महिमा करने को,
महिमा की आशा में

2. मसीह महिमा की आशा, खुदा का भेद वह
है
खुदा की पूर्णता बँटता, मुझमें लाता खुदा
हर प्रकार से खुदा के साथ मिश्रित करने
आता
कि हम उसकी महिमा में भागी हो

2. In my spirit He regenerated me,
In my soul He's now transforming me.
He will change my body like unto His
own,
Wholly making me the same as He.

3. Now in life and nature He is one with
me
Then in Him, the glory, I will be;
I'll enjoy His presence for eternity
With Him in complete conformity.

Hope of Glory - Christ as the Glorification

949

1. Christ is the hope of glory, my very life
is He,
He has regenerated and saturated me;
He comes to change my body by His
subduing might
Like to His glorious body in glory bright!
He comes, He comes, Christ
comes to glorify me!
My body He'll transfigure, like
His own it then will be.
He comes? He comes,
redemption to apply!
As Hope of glory He will come,
His saints to glorify.

2. Christ is the hope of glory, He is God's
mystery;
He shares with me God's fulness and
brings God into me.
He comes to make me blended with
God in every way,
That I may share His glory with Him for
aye.

3. मसीह महिमा की आशा, पूर्ण छुटकारा है वह
 देता देह को छुटकारा, मृत्यु से मुक्त करता
 वह आता मेरी देह को महिमामय बनाने
 विजय में सदा के लिए, मृत्यु को निगलने

3. Christ is the hope of glory, redemption full is He;,
 Redemption to my body, from death to set it free,
 He comes to make my body a glorious one to be
 And swallow death forever in victory.

4. मसीह महिमा की आशा है, वह मेरा इतिहास
 वह मेरा अनुभव है, वह मेरे साथ एक है महिमामय अज्ञादी में लाने मुझको आता
 कि हम पूरी तरह से एक हो सदा देह के दीवट के लिए
 चमकती देह के लिए
 हाल्लेलूयाह तीव्रता से चमकता हैं।

4. Christ is the hope of glory, He is my history:
 His life is my experience, for He is one with me
 He comes to bring me into His glorious liberty,
 That one with Him completely I'll ever be.

अंतिम प्रकटीकरण — परमेश्वर का केन्द्र विचार

Ultimate Manifestation - God's Central Thought

143

972

1. परमेश्वर का केन्द्र विचार
 एक हो वह मानव साथ
 सब कुछ वह है मानव का
 उद्देश्य को वह पूरा करे
2. मिट्टी का पात्र मानव बना
 देह, प्राण और आत्मा भी
 जीवन के रूप में उसको ले
 सच्ची एकता में रहे
3. दिव्य जीवन के बहाव से
 मनुष्य अनमोल पत्थर बनें
 खुदा के निवास के लायक
 जिससे महिमा प्रकट हो

1. Lo, the central thought of God
 Is that He be one with man;
 He to man is everything
 That He might fulfill His plan.
2. Earthen vessel man was made-
 Body, soul, and spirit too,
 God as life that he may take
 And with Him have oneness true.
3. By the flow of life divine,
 Man becomes a precious stone
 Fit for building God's abode,
 That His glory might be known.

4. इस नगर को वह बनाता
इसमें रहना वह चाहता
यह है नया यरुशलेम
उसकी इच्छा पूर्ण करता

5. यह संतो का है निर्माण
खुदा मनुष्य मिश्रित हुआ
पिता की इच्छा के द्वारा
सनातन से पहले

6. उसके केन्द्र में है शक्ति
मसीह खुदा का आसन है
उसमें जीवन धारा बहती
आत्मा जीवित नदी सी

7. मसीह जीवन का वृक्ष है
धारा के बहाव में
दिव्य जीवन का फल देता
भोजन के रूप में

8. मसीह में खुदा ज्योत है
जिससे नगर प्रकाशित
मौत सी रात को हटाती
दिव्य जीवन की ज्योत से

9. खुदा में मानव, मानव में खुदा
परस्पर निवास स्थान
खुदा मनुष्य का अर्न्तवस्तु
मनुष्य करे खुदा प्रकट

4. 'Tis the city God hath built,
'Tis the dwelling God requires,
'Tis the new Jerusalem
Which fulfills His heart's desires.

5. 'Tis the building of the saints,
'Tis the blend of God and man,
Purposed by the Father's will
Long before the world began.

6. In its center, as its pow'r,
Is the throne of Christ and God,
Whence doth flow the stream of life
As the Spirit's living flood.

7. Christ, the tree of life, is there
In the flowing of the stream,
Yielding fruit of life divine
As the food of life supreme.

8. God in Christ, the glorious light,
Thru the city brightly shines,
Scattering all the deathly night
With its light of life divine.

9. God in man and man in God
Mutual dwelling thus possess;
God the content is to man,
And the man doth God express.

1. हे प्रभु, तेरे छुड़ाये जन,
तेरी देह और दुहिन है
तेरी पूर्णता और प्रकटन
उसमें तू महिमान्वित है
तू सदा के लिए सब कुछ है
धोषणा करती वह धनो की
तू उसको पूर्ण संतृप्त करता
अपनी महिमा उससे बाँटता

देखो, पवित्र नगर
खुदा की महिमा से पूर्ण
यह खुदा की पूर्ण अभिव्यक्ति
है मानवता में

2. खुदा मानव साथ मिला है
यह भक्ति का भेद है
खुदा महिमा में पूर्ण रोषन
मानव व्यक्त करता आवास
यह विश्वयापि पात्र है एक
भरपूरी को व्यक्त करने
सुन्दरता प्रकट करता
पवित्रता से मिश्रित
3. यह जीवन का एक संघटन
रूपान्तरित संतो का
मोती, किमती पत्थरों जैसे
उसके रूप में है बने
खुदा के सिंहासन, केन्द्र से
जीवन का जल, मुफ्त बहता
मसीह, जीवन का वरक्ष बढ़ता
प्रचुरता में फल देता

1. Lord Jesus, Thy redeemed ones
Are Thy Body and Thy Bride;
As Thy fulness, Thine expression,
In her Thou art glorified.
Thou, her all in all forever,
She Thy riches doth declare;
Thou dost fully saturate her
And Thy glory with her share.

Lo, the holy city,
Full of God's bright glory!
It is God's complete expression
In humanity.

2. God with man completely blended,
Mystery of godliness.
God in glory, full, resplendent,
Man, His dwelling, doth express.
'Tis a vessel universal
All God's fulness to express;
All His beauty manifesting,
Mingled with His holiness.
3. 'Tis a living composition
Of the saints He hath transformed;
As the pearls and stones most
precious,
To His image they're conformed:
From the throne of God, its center,
Flows the living water free;
Christ the tree of life doth flourish,
Bearing fruit abundantly.

4. यह अन्नत स्वर्ण दीवट
दिया का दीपक, मसीह
खुदा में, महिमामय ज्योति
आत्मा जैसे चमकती
यही पूर्ण प्रकटीकरण—
मानव में खुदा, खुदा में मानव
यही परस्पर निवासस्थान
अन्नत योजना का यह लक्ष्य

सुसमाचार — लहू

145

1. यीशु के घावों से रक्तपूर्ण
एक सोता बहता है।
जो पापी उसमें करे स्नान
निर्दोष हो जाता है :
निर्दोष हो जाता है,
निर्दोष हो जाता है;
जो पापी उसमें करे स्नान
निर्दोष हो जाता है।
2. वह मरता डाकू यह प्रवाह
देख कर आनन्दित था।
इस कुण्ड में धो, हे मेरे प्राण,
और यों पाप मुक्त हो जा :
और यों पाप मुक्त हो जा,
और यों पाप मुक्त हो जा;
इस कुण्ड में धो, हे मेरे प्राण,
और यों पाप मुक्त हो जा।
3. हे मेम्ने तेरे रक्त का गुण
कभी ना मिटेगा।
और उसका यश और सुबखान
सदा लों रहेगा :
सदा लों रहेगा,
सदा लों रहेगा;
और उसका यश और सुबखान
सदा लों रहेगा।

4. 'Tis th' eternal golden lampstand,
Holding Christ, the lamp of light;
God in Christ the light of glory
As the Spirit shineth bright!
'Tis the ultimate expression-
Man in God and God in man;
'Tis their mutual habitation,
Goal of God's eternal plan.

Gospel - The Blood

1006

1. There is a fountain filled with blood
Drawn from Immanuel's veins;
And sinners, plunged beneath that
flood,
Lose all their guilty stains:
Lose all their guilty stains,
Lose all their guilty stains;
And sinners, plunged beneath that
flood,
Lose all their guilty stains.
2. The dying thief rejoiced to see
That fountain in his day;
And there may I, though vile as he,
Wash all my sins away:
Wash all my sins away,
Wash all my sins away;
And there may I, though vile as he,
Wash all my sins away.
3. Dear dying Lamb, Thy precious blood
Shall never lose its power,
Till all the ransomed ones of God
Be saved, to sin no more:
Be saved, to sin no more,
Be saved, to sin no more;
Till all the ransomed ones of God,
Be saved to sin no more.

4. विश्वास कर जब सें देखता हूं
 इस दोषहीन रूधिर को ।
 है तेरी दया मेरा गान
 और होगा मरने लों :
 और होगा मरने लों,
 और होगा मरने लों;
 है तेरी दया मेरा गान,
 और होगा मरने लों ।

5. मैं अधिक मीठे रागों का
 तब करूँगा आलाप ।
 जब गोर में यही तोतली जीभ
 लो जायेगी चुप—चाप :
 लो जायेगी चुप—चाप,
 लो जायेगी चुप—चाप;
 जब गोर में यही तोतली जीभ,
 लो जायेगी चुप—चाप ।

4. E'er since by faith I saw the stream
 Thy flowing wounds supply,
 Redeeming love has been my theme,
 And shall be till I die:
 And shall be till I die,
 And shall be till I die;
 Redeeming love has been my theme,
 And shall be till I die.

5. When this poor lisping, stammering
 tongue
 Lies silent in the grave,
 Then in a nobler, sweeter song,
 I'll sing Thy power to save:
 I'll sing Thy power to save,
 I'll sing Thy power to save;
 Then in a nobler, sweeter song,
 I'll sing Thy power to save.

सुसमाचार — लहू

146

1. क्या धोये पाप मेरे
 ना कुछ बस रक्त यीशु का
 क्या करे सम्पूर्ण मुझको
 ना कुछ बस रक्त यीशु का

ओह ! अमूल्य है धारा
 बनाये श्वेत बर्फ जैसे
 ना जानूं स्रोत कोई और
 ना कुछ बस रक्त यीशु का

2. क्या करे पवित्र मुझे
 ना कुछ बस रक्त यीशु का
 मेरी क्षमा हेतु है
 ना कुछ बस रक्त यीशु का

Gospel - The Blood

1008

1. What can wash away my sin?
 Nothing but the blood of Jesus;
 What can make me whole again?
 Nothing but the blood of Jesus.

Oh! precious is the flow
 That makes me white as snow;
 No other fount I know,
 Nothing but the blood of Jesus

2. For my cleansing this I see—
 Nothing but the blood of Jesus!
 For my pardon this my plea—
 Nothing but the blood of Jesus!

3. कुछ धोये ना मेरे पाप
ना कुछ बस रक्त यीशु का
न काम, पर अनुग्रह ही
ना कुछ बस रक्त यीशु का

4. यह मेरा विश्वास, शांति
ना कुछ बस रक्त यीशु का
यह मेरी है धार्मिकता
ना कुछ बस रक्त यीशु का

3. Nothing can my sin erase
Nothing but the blood of Jesus!
Naught of works, 'tis all of grace—
Nothing but the blood of Jesus!

4. This is all my hope and peace—
Nothing but the blood of Jesus!
This is all my righteousness—
Nothing but the blood of Jesus!

Gospel - Need of Christ

1024

सुसमाचार – मसीह की आवश्यकता

147

1. मसीह मुक्तिदाता तुम्हें पाना हैं,
मानव रूप, मैं परमेश्वर देहधारी,
देह में उसने, हर दर्द सहा हैं,
तेरे दाग धोने को मरा, तो यीशु को पाओं!

यीशु को पाओं! यीशु को पाओं
सब नर—नरी यीशु पाओं!
छुटकारे के लिए पाओं!
मुक्ति के लिए पाओं,
और हमेंशा का जीवन
हाँ, यीशु को पाओं!

2. जी उठा वह, और चढ़ गया स्वर्ग
कि अनन्त जीवन, तुम्हें दिया जाये
बस, कर विश्वास, उसे ग्रहण कर लें
घटी हर पूरी करे, तो यीशु को पाओं!

1. Christ the Savior is just the One you
need,
He's God incarnate, as a man indeed;
In His body He suffered every pain
And died to cleanse your every stain,
So you need Jesus!

You need Jesus! You need Jesus!
Men and women all need Him!
For redemption you need Him,
For salvation you need Him!
And for everlasting life,
Yes, you need Jesus!

2. He has risen and gone up into heav'n,
That life eternal might be fully giv'n;
Just receive Him, believing in your
heart,
Then all you need He will impart,
So you need Jesus!

3. अन्धकारमय हृदय वह रोशन करेगा
पापों को क्षमा कर, बल से बचाएगा,
अपने लहू से, सब दाग धोएगा,
तुम्हें अपना जीवन देगा, तो यीशु को पाओं!

4. अपने जीने में, कमी तू जानता हैं
सालों से वह बढ़ती ही जाती हैं
इस घटी को यीशु पूरा करता,
सब व्यर्थत्ता, मिटायेगा, तो यीशु को पाओ!

यीशु को पाओ! यीशु को पाओ!
सब नर—नारी, यीशु पाओं!
व्यर्थ से बचाने को
सच्चाई को पाने को
जीवन का अर्थ बनाने को
हाँ, यीशु को पाओ!।

5. मुसीबत व दर्द से, भरा सब संसार
मुश्किल में सहन, का सहारा कोई ना,
सब कुछ खाली किस पर भरोसा हैं?
सब चीजें हमें बताती, कि यीशु को पाओं!

3. He'll enlighten your darkened heart
with light,
Forgive your sins and rescue you with
might;
He will cleanse you from all stains with
His blood,
And give to you the life of God,
So you need Jesus!

4. In your living there is a lack you sense,
And thru the years it grows the more
intense;
Only Jesus this need can satisfy;
All vanity He will defy,
So you need Jesus!

You need Jesus! You need Jesus!
Men and women all need Him!
To escape from vanity,
To obtain reality,
To make life significant,
Yes, you need Jesus!

5. All this world now is rife with toil and
pain,
In troubled times there's nothing to
sustain;
All is empty, on what can you rely?
All things reveal and testify
That you need Jesus!

सुसमाचार — मसीह की आवश्यकता

148

1 संसार को छोड़ मसीह को पाओं
तेरे हृदय की जरूरत हैं
किस वस्तु को ढूँढ़ना, चाहें
सारी वस्तु व्यर्थ ही हैं।

Gospel - Need of Christ

1025

1. Give up the world, Christ to obtain,
He is your heart's very need;
What else can you desire or seek?
All things are empty indeed!

वह धनी हैं, वह पूर्ण है
सब जरूरत को पूरी करता
वह भला हैं, वह मधुर हैं
सब इच्छा को पूरी करता

He is so rich, He is so full,
He can fulfill all your needs!
He is so good, He is so sweet,
All your desire He exceeds!

2. संसार को छोड़, मसीह को पाओं
वही हैं एक जो तुझे चाहिए
एक बार मसीह को प्राप्त करेंगे
और कुछ तू चाहेगा नहीं।

2. Give up the world, Christ to obtain,
He is the One you require;
Once you receive this glorious Christ,
Never the rest you'll desire.

3. यह संसार हैं, बहुत बड़ा
और बहुत छोटा, तेरा हृदय
ये संसार सब धनों के साथ
नहीं भर सकता हृदय तेरा।

3. Though very great is all the world,
And very small is your heart,
Yet the great world with all its wealth
Never can fill your small heart.

4. यदि यीशु हैं, आनन्द ही हैं।
बिना मसीह के सिर्फ दर्द
जहाँ मसीह वहाँ सुबह
जहाँ वह नहीं, अंधेरा हैं।

4. If you have Christ, you have all joys;
Without this Christ, only pains;
Where there is Christ there morning
is;
Where He is not, night remains.

सुसमाचार — प्रभु के पास आना

Gospel - Coming to the Lord

149

1048

1. मैं जैसा हूँ पूर्ण निराधार
मेरे लिए लहू बहा
और बुलाया तूने खुद तक
परमेश्वर के मेमने मैं आऊ

1. Just as I am, without one plea,
But that Thy blood was shed for me,
And that Thou bid'st me come to Thee,
O Lamb of God, I come! I come!

2. मैं जैसा हूँ, रुकता नहीं
धोने को दाग मेरे प्राण का
है तेरा खून जो कर दे साफ
परमेश्वर के मेमने, मैं आऊ

2. Just as I am, and waiting not
To rid my soul of one dark blot;
To Thee whose blood can cleanse each
spot,
O Lamb of God, I come, I come!

3. मैं जैसा हूँ, मैं हूँ अस्थिर
शंका और प्रश्नों से भरा
द्वंद युद्ध अन्दर, और भय बाहर
परमेश्वर के मेमने मैं आऊ

3. Just as I am, though tossed about
With many a conflict, many a doubt;
Fightings within, and fears without,
O Lamb of God, I come, I come!

4. मैं जैसा हूँ, गरीब, लाचार
रोशनी, धन और मन का उपचार
हां यही सब, तुझमें ही पाऊँ
परमेश्वर के मेमने मैं आऊ

5. मैं जैसा हूँ, ग्रहण करें
स्वीकार, माफ़, साफ़, मुक्त करें
कि तेरा वचन, करूँ विश्वास
परमेश्वर के मेमने मैं आऊ

6. मैं जैसा हूँ, प्रेम से अनजान
तोड़ी जिसने हर बाधाएं
हाँ अब मैं तेरा, सिर्फ तेरा
परमेश्वर के मेमने मैं आऊ

4. Just as I am, poor, wretched, blind;
Sight, riches, healing of the mind;
Yes, all I need, in Thee to find,
O Lamb of God, I come, I come!

5. Just as I am, Thou wilt receive,
Wilt welcome, pardon, cleanse, relieve;
Because Thy promise I believe,
O Lamb of God, I come, I come!

6. Just as I am, Thy love unknown
Has broken every barrier down;
Now, to be Thine, yea, Thine alone,
O Lamb of God, I come, I come!

सुसमाचार — प्रभु के पास आना

150

1. सारे बन्धन से, दुख से, रात से
यीशु, मैं आऊँ, यीशु, मैं आऊँ
तुझमें रिहाई, प्रकाश और हर्ष,
यीशु, मैं आऊँ, तेरे पास!
तुझमें है स्वास्थ्य मेरे रोगो का,
मेरी कमीयों की तू है पूर्णता,
मेरे पापों का तू छुटकारा,
यीशु मैं आऊँ, तेरे पास!

2. सारी कमियों से शर्म से, हार से
यीशु मैं आऊँ यीशु मैं आऊँ
महिमामय क्रूस की प्राप्ति में
यीशु मैं आऊँ तेरे पास
संसार के दुखो से तेरे पास
जीवन की आँधी से तेरे पास
व्यथाओं में स्तुति तेरी करूँ
यीशु मैं आऊँ तेरे पास

Gospel - Coming to the Lord

1050

1. Out of my bondage, sorrow, and night,
Jesus, I come! Jesus, I come!
Into Thy freedom, gladness, and light,
Jesus, I come to Thee!
Out of my sickness into Thy health,
Out of my want and into Thy wealth,
Out of my sin and into Thyself,
Jesus, I come to Thee!

2. Out of my shameful failure and loss,
Jesus, I come! Jesus, I come!
Into the glorious gain of Thy cross,
Jesus, I come to Thee!
Out of earth's sorrows into Thy balm,
Out of life's storm and into Thy calm,
Out of distress to jubilant psalm,
Jesus, I come to Thee!

3. सारी अशांति, स्वाभिमान से
 यीशु मैं आऊं यीशु मैं आऊं
 तेरी आशीर्षित इच्छा में आऊं
 यीशु मैं आऊं तेरे पास
 अपने ही स्वार्थ से तेरे प्रेम में
 अपनी निराशा से आशा में
 ऊपर उड़ूं कि जैसे पंछी
 यीशु मैं आऊं तेरे पास

4. अपने ही डर से मृत्यु, भय से
 यीशु मैं आऊं यीशु मैं आऊं
 तेरे आनंद हर्ष में आऊं
 यीशु मैं आऊं तेरे पास
 बाहर अपने गहन पतन से
 तेरे ही प्रेम के झुंड में आऊं
 तेरा आनन्दमय मुख निहरूं
 यीशु मैं आऊं तेरे पास

सुसमाचार — प्रभु के पास आना

151

1. ध्वनि तेरी सुनता हूं
 जो पास बुलाता है
 धोने को तेरे लहू से
 जो कूस से बहता है

मैं आता प्रभु
 आता तेरे पास
 धो और शुद्ध कर लहू से
 जो कूस से बहता है

2. मैं आता हूं कमजोर
 तेरी शक्ति पर आस
 मेरी भ्रष्टता को कर साफ
 जब तक न हो बेदाग

3. Out of unrest and arrogant pride,
 Jesus, I come! Jesus, I come!
 Into Thy blessed will to abide,
 Jesus, I come to Thee!
 Out of myself to dwell in Thy love,
 Out of despair into raptures above,
 Upward for aye on wings like a dove,
 Jesus, I come to Thee!

4. Out of the fear and dread of the tomb,
 Jesus, I come! Jesus, I come!
 Into the joy and pleasure, Thine own,
 Jesus, I come to Thee!
 Out of the depths of ruin untold,
 Into the flock Thy love doth enfold,
 Ever Thy glorious face to behold,
 Jesus, I come to Thee!

Gospel - Coming to the Lord

1051

1. I hear Thy welcome voice,
 That calls me, Lord, to Thee,
 For cleansing in Thy precious blood
 That flowed on Calvary.

I am coming, Lord,
 Coming now to Thee:
 Wash me, cleanse me in the
 blood
 That flowed on Calvary.

2. Though coming weak and vile,
 Thou dost my strength assure;
 Thou dost my vileness fully cleanse,
 Till spotless all, and pure.

3. ये यीशु जो करता
आशीर्षित कार्य अंदर
डालकर अनुग्रह से हमें
जहां कभी पाप था

4. वह आप गवाह देता
मुक्त सच्चे हृदय को
कि सब वचन पूर्ण होंगे
विश्वास से कर याचना

5. सब स्तुति लहू की
जीवन देय अनुग्रह की
प्रभु मसीह के दान की
सामर्थ, धार्मिकता की

3. 'Tis Jesus who confirms
The blessed work within,
By adding grace to welcomed grace,
Where reigned the power of sin.

4. And He the witness gives
To loyal hearts and free,
That every promise is fulfilled,
If faith but brings the plea.

5. All hail, redeeming blood!
All hail, life-giving grace!
All hail, the gift of Christ our Lord,
Our strength and righteousness.

सुसमाचार — प्रभु के पास आना

152

1. मैं दूर भटका परमेश्वर से
अब मैं आऊ घर
पाप के पथ पे चला बहुत
प्रभु आऊ घर
आऊ घर आऊ घर
बस ना अब भटकूँ
खोल अपनी बाहें प्रेम की
प्रभु आऊ घर

2. किमती साल बर्बाद किया
अब मैं आऊ घर
आँसुओं के साथ पश्चाताप
प्रभु आऊ घर

3. थका पाप से, बहका प्रभु से
अब मैं आऊ घर
विश्वास वचन और प्रेम पर अब
प्रभु आऊ घर

Gospel - Coming to the Lord

1052

1. I've wandered far away from God,
Now I'm coming home;
The paths of sin too long I've trod,
Lord, I'm coming home.
Coming home, coming home,
Nevermore to roam;
Open wide Thine arms of love;
Lord, I'm coming home.

2. I've wasted many precious years,
Now I'm coming home;
I now repent with bitter tears,
Lord, I'm coming home.

3. I'm tired of sin and straying, Lord,
Now I'm coming home;
I'll trust Thy love, believe Thy word;
Lord, I'm coming home.

4. है प्राण रोगी, हृदय दुखी
अब मैं आऊ घर
शक्ति लौटी, विश्वास फिर से
प्रभु आऊ घर

5. मेरी आशा मेरा विश्वास
अब मैं आऊ घर
यीशु मरा मेरे लिए
प्रभु आऊ घर

6. चाहता लहू का शुद्धीकरण
अब मैं आऊ घर
ओ कर साफ, मुझे बर्फ जैसे
प्रभु आऊ घर

4. My soul is sick, my heart is sore,
Now I'm coming home;
My strength renew, my hope restore:
Lord, I'm coming home.

5. My only hope, my only plea,
Now I'm coming home;
That Jesus died, and died for me;
Lord, I'm coming home.

6. I need His cleansing blood, I know,
Now I'm coming home;
O wash me whiter than the snow;
Lord, I'm coming home.

सुसमाचार — प्रभु को पूकारना

153

1. छोड़ न मुझे, प्यारे यीशु!
सुन मेरी पूकार,
औरों की तू है सुनता,
मेरी भी अब सुन,

कोरस : यीशु, यीशु!
सुन मेरी पूकार,
औरों की तू है सुनता,
मेरी भी अब सुन

2. तेरी दया के आसन पर,
पाउं मधुर आराम,
पश्चाताप में झुकूँ मैं,
अब विश्वास दिला

3. तुझ पर पूरी आस मैं रखता,
दृढ़ता तेरा मुख,
चंगा कर टूटी आत्मा को,
अनुग्रह से बचा

Gospel - Crying to the Lord

1054

1. Pass me not, O gentle Savior,
Hear my humble cry;
While on others Thou art calling,
Do not pass me by.
Savior, Savior,
Hear my humble cry;
While on others Thou art calling,
Do not pass me by.

2. Let me at Thy throne of mercy
Find a sweet relief;
Kneeling there in deep contrition,
Help my unbelief.

3. Trusting only in Thy merit,
Would I seek Thy face;
Heal my wounded, broken spirit,
Save me by Thy grace.

4. तू है मेरे सुख का सोता,
जीवन से भी ज्यादा,
तुझे छोड़ पृथ्वी पर कौन है,
स्वर्ग में मेरा कौन?

4. Thou the spring of all my comfort,
More than life to me;
Whom have I on earth beside Thee?
Whom in heaven but Thee?

सुसमाचार — सामान्य

154

1. सारी मेहनत का, क्या यहाँ लाभ?
न हमारे लिए, हैं कुछ नया,
बीती बातें याद मत करो,
वे सब व्यर्थ हैं!

व्यर्थ ही! व्यर्थ हैं!
व्यर्थ ही! व्यर्थ हैं!
पकड़ना यह हवा का
यह सब व्यर्थ हैं!

2. मानव जीवन, दुखों से भरा,
ज्यादा बुद्धि, हैं कष्ट बढ़ाती,
ज्ञान से हैं, चिन्ता बढ़ती,
यह सब व्यर्थ हैं!

3. क्या लाभ हैं, खुशी व माया से?
खुशी हो, चाहे हो परिवार,
अपनी चिन्ताएं फिर भी पाएँगे,
यह सब व्यर्थ हैं!

4. दिन में मेहनत, रातें बेआराम
बिन संकट, सब पा भी लें,
मृत्यु आ के, सब ले जाती हैं,
यह सब व्यर्थ हैं!

Gospel - General

1080

1. What profit all the labor here?
There's nothing new for you and me!
Remember not the former things,
They're all vanity!

Vanity! Vanity!
Vanity! Vanity!
'Tis chasing the wind,
It's all vanity!

2. Man's life is full of grief and pain:
Much wisdom bringeth misery!
Increasing knowledge addeth woe!
It's all vanity!

3. What good our pleasure and our
wealth?
Though joys we have and family,
We'll have our worries just the same!
It's all vanity!

4. Days of toil to gain and restless nights:
Though gained without calamity,
When death comes it is gone for aye!
It's all vanity!

5. याद रख रब, दिन जवानी में,
 उससे डर, यही तेरा लाभ,
 तू तृप्त भी, उसी से होगा,
 कि सब व्यर्थ हैं!

बिन मसीह सब हैं व्यर्थ
 मसीह हैं तो सब लाभ,
 सब कुछ हैं व्यर्थ,
 बस मसीह ही लाभ,

पिता की आराधना – उसका नाम, उसका वचन, उसकी महिमा

155

1. हे पिता आप जीवन का स्रोत हैं
 हम तेरे पुत्र, प्रदर्शन
 तेरे बहुमूल्य नाम में
 हे पिता आप जीवन का स्रोत हैं।

जीवन में, जीवन में,
 एकता हैं तेरे जीवन में
 जीवन में, जीवन में
 तेरे जीवन में हम सब एक हैं?

2. धन्यवाद हैं, पवित्र वचन को
 तेरे स्वभाव से सोखता हैं
 संसार से अलग करता हैं
 धन्यवाद, पिता तेरे वचन का

वचन से, वचन से
 एकता हैं तेरे वचन से
 वचन से, वचन से
 तेरे वचन से हम एक हुए

3. वाह! त्रिएक परमेश्वर की महिमा,
 हम पुत्र, कैसा सौभाग्य हैं।
 प्रकट करता हूँ महिमा
 हे त्रिएक परमेश्वर की महिमा।

5. Remember God in days of youth!
 Fear Him, and such will be your gain!
 With Him you will be satisfied,
 For He is not vain!

Christ without, all is vain!
 Christ within, all is gain!
 All things are vain,
 Christ only is gain!

Worship of the Father - His Name, His Word, His Glory

1081

1. Father God, Thou art the source of life.
 We, Thy sons, are Thine expression;
 In Thy name, our dear possession.
 Father God, Thou art the source of life.

In Thy life, in Thy life,
 We have oneness in Thy life.
 In Thy life, in Thy life,
 In Thy life, O Father, we are one.

2. How we thank Thee that Thy holy
 Word
 With Thy nature, saturates us;
 From the world it separates us.
 Thank Thee, Father, for Thy holy Word.

Through Thy Word, through Thy
 Word,
 We have oneness through Thy
 Word.

Through Thy Word, through Thy
 Word,
 Through Thy holy Word we're all
 made one.

महिमा में, महिमा में
महिमा में हम सब एक हैं
महिमा में, महिमा में
महिमा में हम सब एक होंगे।

3. Oh, the glory of the Triune God!
We're His sons, oh, what a blessing!
We His glory are expressing-
Oh, the glory of the Triune God!
In Thy glory, in Thy glory,
In Thy glory we are one.
In Thy glory, in Thy glory,
In Thy glory we are all made one!

प्रभु की स्तुति – उसका सर्व सम्मिलिता 156

Praise of the Lord - His All Inclusiveness

1103

1. क्या है वो: वो है पिता
वो है सार्वलौकिक पिता
वो पहिलौठा है इस सृष्टि में
वो है एक जो मुझमे रहता है
वो है पिता : अद्भुत:
2. क्या है वो : वो है नदी
वो है प्रबल प्रवाही नदी
वो सींचता मुझे मरुभूमि में
वो है मेरा आश्रय, वो इंसान
वो है नदी : अद्भुत:
3. क्या है वो : दाख की लता
वो है डाल : जड़ है यिशै की
वो है जीवन वृक्ष : हमारा हक
उसे खाना जीवन पाना
वो दाख की लता अद्भुत:
4. क्या है वो : वो चरवाहा
वो है भेड़ प्रभु का मेम्ना
हम रुकते चरते चरण भूमि में
छिड़कते लहू और खाते मेम्ना
वो चरवाहा अद्भुत:

1. What He is: He's the Father.
He's the everlasting Father.
He's the firstborn of creation.
He's the One who lives inside of me.
He's the Father! Wonderful!
2. What He is: He's the river.
He's the mighty flowing river.
He waters me in a desert land.
He's my hiding place; He is our man.
He's the river! Wonderful!
3. What He is: He's the vine tree.
He's the branch, the root of Jesse.
He's the tree of life: we have the right
To eat of Him and have His life.
He's the vine tree! Wonderful!
4. What He is: He's the Shepherd.
He's the lamb of God, the he-goat.
We rest and feed in the pasture land.
We strike the blood and eat the lamb.
He's the Shepherd! Wonderful!

5. क्या वो है : वो है आत्मा
 वो है आत्मा सर्व सम्मिलित
 वो हमारा सबकुछ वो सब में सब
 वो दे जीवन जब पुकारे हम
 वो है आत्मा अद्भुत

6. क्या वो है : वो है व्यक्ति
 वो है वास्तव जीवित व्यक्ति
 ये व्यक्ति कितना महिमामय
 वो है व्यक्ति अद्भुत:

7. क्या वो है : वो है देह
 वो है पूर्णता पिता की
 पिता की योजना का वह केन्द्र
 मसीह कलीसिया एक नव मानव
 है वो अद्भुत: अद्भुत:
 है वो अद्भुत: अद्भुत:
 है वो अद्भुत: अद्भुत:

5. What He is: He's the Spirit.
 He's the all-inclusive Spirit.
 He's our everything; He's our all in all.
 He gives life to us whenever we call.
 He's the Spirit! Wonderful!

6. What He is: He's a Person.
He's a real and living Person.
He is living now inside of us.
This Person is so glorious.
 He's a Person! Wonderful!

7. What He is: He's the Body;
 He's the fulness of the Godhead;
 He's the center of the Father's plan,
 Christ and the church, the one new
 man.
 He is wonderful, wonderful.
 He is wonderful, wonderful.
 He is wonderful, wonderful.

प्रभु की स्तुति – उसकी याद

157

1. हम एकत्रित, हे प्रभु एक देह में
 हम कई हों, फिर भी हम एक हैं
 जीवन बाँटते और रखते कि हम सदस्य
 इसलिए जीवन में हम एक हैं

कोरस : इस संसार में सिर्फ एक ही
 देह है
 पृथ्वी पर हम प्रकट करते
 एक होकर खड़े हुए हर स्थान में
 कि सब देखें, कि सब देखें

Praise of the Lord - Remembrance of Him

1107

1. We're gathered here, O Lord, as Thy
 one Body:
 Though we be many, yet we all are one.
 We share Thy life and own that we are
 members,
 And thus within, in life we all are one.
 There is one Body in this
 universe,
 And we express it here on earth;
 We stand as one in each locality
 For all to see, for all to see.

2. एक रोटी है जो तेरी देह का चिन्ह
तोड़ा गया कि सब सन्त भाग ले
हम रोटी खाते और सहभागी होते
सब संतो साथ एकता घोषित करते

3. एक रोटी, एक प्याला अब मेज पर है
दिखता कि हम कुछ नहीं, पर एक
मसीह ने छुड़ाया, बनाया अपनी देह
बस कहें "आमीन प्रभु हम एक हैं!"

4. एक होकर खड़े, न विभाजित होंगे
क्योंकि मसीह हमारी एकता है
एक होकर खाते—एक रोटी, एक प्याला
हमारी एकता है साक्षात् दिखती

5. ओह क्या आनंद, आशीषित एकता पाना
महसूस करते तू हे प्रभु सन्तुष्ट
हम भी बाँटते आशीषित संतुष्टि को
दुल्हे संग दुल्हन का मीठा पूर्व स्वाद

2. There is one loaf, the symbol of Thy
body:
'Twas broken so that all the saints may
share.

We eat this bread and, as we are
partaking,
Our actual oneness with all saints
declare.

3. One bread, one cup are now upon the
table,
Showing that we can be naught else
but one.

Christ has redeemed us, made us His
own Body:
What can we say but, "Amen, Lord,
we're one!"

4. We stand as one, and cannot be
divided,
Because our oneness is of Christ
alone.
We eat as one: one loaf, one cup
partaking,
And thus our oneness visibly is shown.

5. Oh, what a joy to have this blessed
oneness!
We sense that Thou, O Lord, art
satisfied;
And we too share this blissful
satisfaction—
Sweet foretaste of the Bridegroom with
His Bride.

1. कितना महिमामय तेरा मेज प्रभु
तू मनुष्य, हमारा मेजबान
तेरे घर में निवास करते है
कितना महिमामय तेरा मेज प्रभु
हाल्लेलूयाह, हाल्लेलूयाह,
हाल्लेलूयाह भोज के लिए
हाल्लेलूयाह, हाल्लेलूयाह,
कितना महिमामय तेरा मेज प्रभु
2. कितना आनंदायक तेरा मेज
संगति करते है चारो ओर
हाल्लेलूयाह, हमने पा लिया
कितना आनंदायक तेरा मेज
3. कितना अनमोल, तेरा मेज प्रभु
रोटी व दाख मृत्यु घोषित करे
शारीरिक जीवन को समाप्त करे,
तेरी मेज में भाग लेने से, प्रभु
4. कितना अर्थपूर्ण तेरा मेज प्रभु
रोटी में हम तेरी देह देखते
तेरे प्रेम की वस्तु देखते
कितना अर्थपूर्ण तेरा मेज प्रभु
5. कितना ताज़ा तेरा मेज प्रभु
कितना सन्तुष्ट करता है
दिन प्रति दिन पूर्ति करता है
कितना ताज़ा तेरा मेज प्रभु
6. कितना प्रोत्साहक, तेरा मेज प्रभु
“तेरे आने तक” वादा देता
आशा से भरता है जीवन
कितना प्रोत्साहक, तेरा मेज प्रभु

1. Oh, how glorious is Thy table, Lord,
Thou, the man, our Host, presiding,
In Thy house, Thy home, abiding;
Oh, how glorious is Thy table, Lord!
Hallelujah! Hallelujah!
Hallelujah for this feast!
Hallelujah! Hallelujah!
Oh, how glorious is Thy table,
Lord!
2. How enjoyable Thy table, Lord,
As we fellowship around it,
Hallelujah, we have found it,
How enjoyable Thy table, Lord!
3. Oh, how precious is Thy table, Lord—
Bread and wine Thy death announcing;
Here our soul-life we're renouncing,
By partaking of Thy table, Lord.
4. How significant Thy table, Lord—
We Thy Body in the loaf seen,
Object of Thy love bespeaking;
How significant Thy table, Lord!
5. How refreshing is Thy table, Lord—
So completely satisfying,
Day by day our need supplying;
How refreshing is Thy table, Lord.
6. How encouraging Thy table, Lord—
“Till He come,” its promise giving
Hope, to fill our daily living;
How encouraging Thy table, Lord!

1. परमेश्वर त्रिएक आया मुझमें रहने
एक अद्भुत आत्मा की तरह
हम मिश्रित हैं, प्रभु साथ एक हम हैं
जीवनदायक आत्मा की तरह

ओ वह है अद्भुत आत्मा एक मुझमें
वह तो अद्भुत आत्मा एक मुझमें
पिता पुत्र में है और पुत्र आत्मा अब
वह एक अद्भुत आत्मा है मुझमें

2. "अब्बा पिता" हम पूकारते अंदर से
हममें अद्भुत आत्मा के द्वारा
ये है आत्मा पुत्र की जो पूकारती
जीवनदायक आत्मा के रूप में
3. यीशु मसीह प्रभु अब मुझमें जीता है
एक अद्भुत आत्मा के रूप में
रूपांतरित हुआ, अब करते आनंद
जीवनदायक आत्मा के रूप में
4. अब आत्मा सत्य की रहती मेरे अंदर
एक अद्भुत आत्मा के रूप में
अब बाते मसीह की सब साफ हुई
जीवनदायक आत्मा के द्वारा

1. Now the Triune God has come to dwell
within
As the wonderful Spirit in us.
We are mingled with the Lord, we're
one with Him
As the life-giving Spirit in us.

Oh, He's the wonderful Spirit in
us,
He's the wonderful Spirit in us!
God is in the Son, the Son's the
Spirit now—
He's the wonderful Spirit in us!

2. "Abba Father" is the cry from deep
within
From the wonderful Spirit in us.
'Tis the Spirit of the Son who cries to
Him
As the life-giving Spirit in us.
3. Jesus Christ the Lord is living now in
us
As the wonderful Spirit within.
He has been transfigured, we enjoy
Him thus,
As the life-giving Spirit within.
4. Now the Spirit of reality is here
As the wonderful Spirit within.
Now the things of Christ are all so real
and clear
By the life-giving Spirit within.

5. हम सब वरदान को उत्तेजित करें
जो एक अद्भुत आत्मा है हममें
जब "प्रभु यीशु" पुकारे, तब उमड़ती
जीवनदायक आत्मा के साथ में

5. We will all stir up this gift that's deep
within
As the wonderful Spirit in us.
When we call "Lord Jesus" how our
spirits spring
With this life-giving Spirit in us!

आत्मा की भरपूरी — श्वास की तरह

160

1. आज आत्मा वायु है जो सांस लेते हम;
इस जीवित बहाव में आत्मा खुश होती
कि जैसे शरीर सांस को ग्रहण करती
वैसे ही आत्मा में जीना भी है
2. आज आत्मा वायु है जो सांस लेते हम;
सांस लेने से ज्यादा जरूरी क्या है ?
हर सांस में पाते हैं हम नया जीवन
और खुदा की ताज़गी निरंतर, नई
3. प्रक्रियाकृत खुदा, मुक्त हवा जैसे
जीवन देय न्यूमा, जरूरत हमारी
वह धनी और भरपूर, कितना प्रचुर भी
आत्मा में चलना ही, उसको सांस लेना
4. क्या खुश हो कि आत्मा उण्डेला गया
प्रक्रियाकृत खुदा बेहता है हम में ?
जीवन देय प्रभु को हम मुक्त सांस लेते
सांस लेकर पाते जीवन महिमामय!

Fullness of the Spirit - As the Breath

1114

1. The Spirit today is the air that we
breathe;
Our spirits rejoice in this living inflow.
For just as our body the breath does
receive,
So also in spirit to live it is so.
2. The Spirit today is the air that we
breathe;
What thing more important than
breathing to do?
For breathing each moment, new life
we receive,
And God's living freshness is constant
and new.
3. For God has been processed, as air
now, He's free;
This life-giving pneuma is all that we
need.
He's rich and abundant, so plentiful,
He,
In spirit to walk is to breathe Him
indeed.

उद्धार का सुनिश्चित और आनन्द – कितना महान उद्धार

161

1. मसीह की स्तुति करो जो
उद्धार का खुदा है
जो बचाता, दिव्य जीवन से
और नाकि नियंत्रण से
सब कार्य के बाद, जो हम करे
उसके जीवन में शक्ति है
परिवर्तन लाने की
2. उद्धार करता है वह पूरा
जीवन के सामर्थ्य से
खुद को हममे डालने द्वारा
बचाता है पल पल वह
खोये को आकर बचाता
पाप से ज्यादा वह बचाता
महिमा तक बचा रहा
3. प्रभु हमारा याजक था
देने को सच्चा जीवन
जीवन, स्वभाव है इस जन का
जो छुड़ाता अहम् से
जीवन उसका, अविनाशी
इसके द्वारा पूर्ण बचाता
स्तुति करो, वह योग्य!

4. O, say, aren't you glad that the Spirit's
outpoured
And God, fully processed, is flowing in
us?
So freely we're breathing this life-giving
Lord,
And breathing, receiving His life,
glorious!

Assurance and Joy of Salvation - So Great a Salvation

1130

1. Sing praise to Christ Who lives in us,
The God of our salvation;
Who saves us by His life divine,
And not by regulation;
After we've worked—done all we can,
His life has power to change a man:
His life divine can change us.
2. He saves us to the uttermost
By His life-giving power;
Transfusing Himself into us,
He saves us hour by hour.
He saved the lost by coming in,
He's saving now from more than sin:
He's saving us to glory!
3. Our Lord was constituted priest
To be a real life-giver;
Life is the nature of this One
Who can from self deliver:
His life is indestructible,
By it He saves us to the full:
Praise God, He's fully able!

4. जीवन उसका, पूरा काबिल
महिमा तक लाने को
गर जीवन परखा न होता
कहानी दूजी होती
पृथ्वी पर परखा गया वह
उसके जन्म से, कूस तक
मृत्यु से होकर गुजरा

5. बचाने का वचन दिया
जीवन है कार्य करता
सब कुछ करता वह हमारे
लिए सिद्ध होने को
जीवन हमारा निष्फल है
परीक्षा में वह सफल है
वह लाता पूर्ण उद्धार

6. जीता अब वह मध्यस्थता को
सदा और लगातार
वह युग में भार उठाता है
याजकता कभी न बदलती
वह मध्यस्थता को है जीता
ऐसे याजक की जरूरत
वह स्वर्गो से उंचा है

7. उसके द्वारा पास आओ अब
विनाश को पीछे न हटो
आगे आओ अब जीवन लो
जो कार्यो को लाता है
आगे आओ अब जीवन लो
हमे अपने लोग बनाता
और मृत्यु को निगलता

4. His life is fully qualified
To bring us through to glory;
Were it not for His tested life,
'Twould be another story
His life was fully tried on earth,
To crucifixion from His birth:
He passed through death and Hades.

5. He's pledged to save us to the full,
His life is operating;
He's doing everything for us
'Tis all for our perfecting;
Our life's a failure at its best,
Only His life can stand the test:
His life brings full salvation!

6. He's living now to intercede,
Continuing forever;
He undertakes into the age,
His priesthood changes never;
He always lives to intercede,
Such a High Priest is what we need:
He's higher than the heavens.

7. Come forward now to God through Him,
Ne'er shrink back to destruction;
Come forward now to get the life,
Which brings the proper function;
Come forward now the life to take,
By life His people us He'll make,
And swallow death forever.

मसीह का अनुभव — आत्मा में

162

1. गायेंगे प्रभु को आत्मा से
गायेंगे प्रभु को अन्दर से
गायेंगे हल्लेलुईया यीशु को
जिससे हम सब एक हो गए।
2. कई साल हम धर्मों में थें
कई साल हम अपने मन में थें
कई साल अपनी भावनाओं में थें,
खोज किया, पर कुछ मिला नहीं
3. सीखते हैं आत्मा की ओर मुड़ना
सीखते हैं मसीह को लेने को
सीखते हैं मसीह को खाने को
सब संघर्ष से पूरी आजादी
4. हल्लेलुईया आत्मा में हैं जीवन
हल्लेलुईया नवीनता अन्दर
जब हम मुड़ते मन से आत्मा तक
पूरे धन का आनन्द लेते हैं।

मसीह का अनुभव — खाना और पेय की तरह

163

1. हम जीवित रोटी खाते हैं
हम पीते हैं उस झरने से
जो भी पीये यीशु कहता
कभी प्यासा ना होगा।

क्या प्यासा ना होगा?
— ना प्यास ना होगा
क्या प्यासा ना होगा?

Experience of Christ - In Spirit

1141

1. We will sing to the Lord with our spirit,
We will sing to the Lord from within,
We will sing hallelujah to Jesus;
And be blent into oneness with Him.
2. We have been many years in religion,
We have been many years in our
mind,
We have been many years in
emotions,
Always seeking, but never to find.
3. Now we're learning to turn to our spirit,
Now we're learning to take Christ as
life;
Now we're learning to feed upon Jesus
And be freed from all struggling and
strife.
4. Hallelujah for life in the Spirit,
Hallelujah for newness within.
When we turn from our mind to our
spirit,
We enjoy all the riches of Him.

Experience of Christ - As Food & Drink

1150

1. We're feeding on the living bread,
We're drinking at the fountainhead;
And whoso drinketh, Jesus said,
Shall never, never thirst again.

What, never thirst again?
No, never thirst again!
What, never thirst again?

— ना प्यास ना होगा
जो भी पीये यीशु कहता
कभी प्यासा ना होगा।

No, never thirst again!
And whoso drinketh, Jesus said,
Shall never, never thirst again!

2. हम जीवित रोटी खाते हैं
लगाई भोज को हम खाते हैं
जो भी खाये, यीशु कहता हैं
कभी भूखा, ना होगा।

क्या भूखा ना होगा?
—हाँ भूखा ना होगा
क्या भूखा ना होगा?
— हाँ भूखा ना होगा
जो भी खाये, यीशु कहता
कभी भूखा ना होगा

2. We are feeding on the living bread,
Eating of the feast our Lord has spread,
And whoso eateth, Jesus said,
Shall hunger nevermore.

What, hunger nevermore?
Yes, hunger nevermore!
What, hunger nevermore?
Yes, hunger nevermore!
And whoso eateth, Jesus said,
Shall hunger nevermore.

3. जिंदा हवा में सॉस लेते हैं,
जिसके जीवन के भागी हम
जो भी सॉस ले सदा, पाये
वह जीवन खुदा का।

क्या जीवन खुदा का?
—हाँ जीवन खुदा का
क्या जीवन खुदा का?
—हाँ जीवन खुदा का
जो भी सॉस ले सदा, पाये
वह जीवन खुदा का।

3. We are breathing in the living air,
Breathing in the One whose life we
share

And whoso breatheth now, fore'er
Shall have the life of God.

What, have the life of God?
Yes, have the life of God!
What, have the life of God?
Yes, have the life of God!
And whoso breatheth now, fore'er
Shall have the life of God

4. जिंदा दाखमधु चखते हम
आत्मा में जीवन चखते हम
जो भी उसे चखते, पाये
वह आनन्द खुदा का।

क्या आनन्द खुदा का?
—हाँ आनन्द खुदा का
क्या आनन्द खुदा का?
— हाँ आनन्द खुदा का
जो भी उसे चखते, पाये।
वह आनन्द खुदा का

4. We are tasting of the living wine,
In spirit tasting life divine,
And whoso tasteth, everytime
Shall have the joy of God.

What, have the joy of God?
Yes, have the joy of God!
What, have the joy of God?
Yes, have the joy of God!
And whoso tasteth, everytime
Shall have the joy of God.

5. मसीह पुनरुत्थित राजा
जी उठा जीवन देने को
पाये उसे तो गाएगा
और हमेशा जीएगा।

क्या हमेशा जीएगा?
— हाँ हमेशा जीएगा
क्या हमेशा जीएगा?
— हाँ हमेशा जीएगा
पाये उसे तो गाएगा
और हमेशा जीएगा।

5. Christ is the resurrected King,
Who died and rose, our life to bring,
If you receive Him you will sing,
And live forevermore.

What, live forevermore?
Yes, live forevermore!
What, live forevermore?
Yes, live forevermore!
If you receive Him you will sing,
And live forevermore.

मसीह का अनुभव — खाना एवं पेय की तरह

164

1. पीयों, सिंहासन से बहता स्वच्छ नदी से
खाओं, जीवन के पेड़ के प्रचुर फलों को
देख, दीपक और सूर्य की जरूरत नहीं हैं
क्या ही, इधर रात नहीं।

आओं ना, आओं
कहती आत्मा दुहिनि
आओं ना, आओं
सुनने वाले कहें
आओं ना, आओं
जो प्यासा और इच्छुक हैं,
वह जीवन का जल सेंट में लें।

2. मसीह नदी, मसीह जल
अन्दर से बहता हैं
मसीह पेड़, मसीह फल,
आनन्द लेने के लिए
मसीह दिन मसीह ज्योति,
मसीह भोर का तारा
मसीह मेरा सब कुछ हैं।

Experience of Christ - As Food & Drink

1151

1. Drink! A river pure and clear that's
flowing from the throne;
Eat! The tree of Life with fruits abundant,
richly grown;
Look! No need of lamp nor sun nor
moon to keep it bright, for
Here there is no night!

Do come, oh, do come,
Says Spirit and the Bride:
Do come, oh, do come,
Let him that heareth, cry.
Do come, oh, do come,
Let him who thirsts and will
Take freely the water of Life!

2. Christ, our river, Christ, our water,
springing from within;
Christ, our tree, and Christ, the fruits,
to be enjoyed therein,
Christ, our day, and Christ, our light,
and Christ, our morning star:
Christ, our everything!

3. जीवन का पेड़ खाने के लिए वस्त्र धो लें,
 प्रभु, आमीन, हल्लेलुयाह
 यीशु हैं मधुर
 हम आत्मा में मसीह को अनुभव करते हैं,
 कैसा मसीह हैं मेरे पास ।

4. मेरे पास सुरज से ज्यादा
 चमकदार घर हैं
 जहाँ सभी भाई सच्चाई में एक हैं
 प्रदर्शन करने के लिए
 हम सब एक हो गये
 स्थानीय कलीसिया में ।

3. We are washing all our robes the tree
 of life to eat;
 "O Lord, Amen, Hallelujah!" — Jesus
 is so sweet!
 We our spirits exercise, and thus
 experience Christ.
 What a Christ have we!

4. Now we have a home so bright that
 outshines the sun,
 Where the brothers all unite and truly
 are one.
 Jesus gets us all together, Him we now
 display
 In the local church.

मसीह का अनुभव — उसको आनंद करना Experience of Christ - Enjoying Him

165

1153

1. पाया मसीह को जो सब में सब
 वह मेरे लिए सब कुछ है
 कितना धन्य उसका नाम लेना
 कितना दिव्य और महान

1. We have found the Christ who's all in
 all;
 He is everything to us;
 O how blest upon His name to call,
 How divine, how glorious!

ये आनंद अवर्णीनीय, महिमा से
 भरा
 महिमा से भरा, महिमा से भरा
 ये आनंद अवर्णीनीय, महिमा से भरा
 और आधा कहा न गया

It is joy unspeakable and full of
 glory,
 Full of glory, full of glory;
 It is joy unspeakable and full of
 glory,
 And the half has never yet been
 told!

2. पाया मसीह जो आत्मा है
आत्मा में यह रहता है
कितना उपलब्ध कितना नजदीक
उसकी मधुरता श्रेष्ठ है

3. पाया मसीह के द्वारा जीना
वचन अध्ययन, उसका नाम लेना
खाना पीना संतुष्टि देता
वह घोषणा के योग्य है

4. पाया स्थानीय कलीसिया, घर
हम वाकई घर पर हैं
अब न और बाबूल में भटकते
कलीसिया जरूरी है

5. पाया हमने संतो की सभा
पृथ्वी पर महान आनंद
इससे आत्मा कभी न बुझती
जीवन मूल्यों से भरी

मसीह का अनुभव – उसे प्रेम करना

166

1. मैं यीशु तेरी सुन्दरता से कैद हूँ
मेरा हृदय खुला हैं विशाल,
अब मैं मुक्त सब धार्मिक बन्धनों से
सिर्फ मुझे बने रहना तुम में
जैसे मैं महिमा से निहारू
भर हृदय दिव्य किरणों से
भर मुझे प्रभु मैं प्रार्थना करता
मिश्रित हो तेरी आत्मा मुझमें।

2. We have found that Christ the Spirit is
Who within our spirit dwells;
How available, how near He is,
And His sweetness all excels.

3. We have found the way to live by
Christ—
Pray His Word and call His name!
This—the eating, drinking—has
sufficed
And its worth we now proclaim.

4. We have found the local church, our
home;
We are home and home indeed!
Nevermore in Babylon we roam;
In the church is all we need.

5. We have found that meeting with the
saints
Is the greatest joy on earth;
'Tis by this our spirit never faints
And our lives are filled with worth.

Experience of Christ - Loving Him

1159

1. Jesus Lord, I'm captured by Thy beauty,
All my heart to Thee I open wide;
Now set free from all religious duty,
Only let me in Thyself abide.
As I'm gazing here upon Thy glory,
Fill my heart with radiance divine;
Saturate me, Lord, I now implore Thee,
Mingle now Thy Spirit, Lord, with mine.

2. चमकता आसमान मेरे ऊपर
मनुष्य पुत्र को मैं देखता
पवित्र जन की अग्नि से समाप्त
मेरा जीवन तेरे साथ चमकता
प्रभु मैंने देखा तुझे प्रताप में
निजि प्रेम और महिमा पर लज्जा,
मेरा हृदय प्रेम और स्तुति करता,
स्वाद चखा तेरे स्वादिष्ट नाम का ।

3. प्रभु, मेरा संगमरमर का पात्र
तेरे प्रेम में, तोड़ती खुशी से,
प्रभु, मैं उण्डेलती तेरे सिर पर
प्रभु मैंने तेरे लिए रखा ।
प्रभु मैंने त्यागा अपना सब कुछ
तुझे प्रेम करने से मैं सन्तुष्ट
प्रेम उमण्डता भीतरी भाग से मेरे
कीमती इत्र मैं करती अर्पण ।

4. आओं प्रिय, सुगन्धित पहाड़ पर
कितना मैं देखने की चाह करूँ
पी, प्रभु हृदय के झरने से,
जब तक, तुझ में विश्राम करूँ,
नहीं मैं अकेला आदर करूँ
पर, संतो के साथ उसकी दुल्हिन
जल्दी आ हमारा प्रेम राह देखें
प्रभु यीशु तू होगा सन्तुष्ट ।

2. Shining One — how clear the sky
above me!
Son of Man, I see Thee on the throne!
Holy One, the flames of God consume
me,
Till my being glows with Thee alone.
Lord, when first I saw Thee in Thy
splendor,
All self-love and glory sank in shame;
Now my heart its love and praises
render,
Tasting all the sweetness of Thy name.

3. Precious Lord, my flask of alabaster
Gladly now I break in love for Thee;
I anoint Thy head, Beloved Master;
Lord, behold, I've saved the best for
Thee.
Dearest Lord, I waste myself upon
Thee;
Loving Thee, I'm deeply satisfied.
Love outpoured from hidden depths
within me,
Costly oil, dear Lord, I would provide.

4. My Beloved, come on spices'
mountain;
How I yearn to see Thee face to face.
Drink, dear Lord, from my heart's
flowing fountain,
Till I rest fore'er in Thine embrace.
Not alone, O Lord, do I adore Thee,
But with all the saints as Thy dear
Bride;
Quickly come, our love is waiting for
Thee;
Jesus Lord, Thou wilt be satisfied.

**मसीह का अनुभव — दीवट के बीच में
मनुष्य के पुत्र की तरह**

167

1. प्रकाशितवाक्य एक में
देता है पुत्र का प्रकाशन
जो था और आने वाला है
आओ अब आएँ इस जन पास
2. आत्मा में सुनते तुरही के स्वर
उसके चुनाव को मुड़ कर देखें
सात दिवटो का स्वर्ण मेला
मनुष्य पुत्र चलता वहां
3. महा याजक के वस्त्र पहने
सारी कलीसिया को है देखता
दिवट काट छोट कर, तेल को भरता
आँखों की ज्वाला से जलता
4. छाती पर सोने का पटुका—
काम पूरा कर और विश्राम से
सारी कलीसियाओं पर उण्डेलता
प्रेम में, आप खजाने को
5. उसके सिर और बाल श्वेत ऊन
प्राचीन जन ताजगी से भरा
मुख चमकता सूर्य समान
सब को जलाने, चमकाने
6. ओह जीविते जन को जब देखेंगे
मुर्दा —सा गिर पड़ जाएंगे
तब दहिनी हाथ से संवारेगा—
वह मरा था पर अब जीवित हैं

**Experience of Christ- As The Son of
Man amidst the Lampstand**

1184

1. In Revelation chapter one
God gives a vision of the Son,
Of Him who was and is to come;
Oh, let us to this One now come.
2. In spirit hear His trumpet voice;
We must be turned to see His
choice—
The seven lampstands golden fair;
The Son of Man is walking there.
3. The great high priestly robe He wears,
For every church He fully cares:
He trims the lamp, the oil supplies;
He makes them burn, flames in His
eyes.
4. A golden girdle on His breast—
His work is done, and from His rest
He unto all the churches pours
Himself in love, the treasure store.
5. His head, His hair is white as wool—
The ancient One with youth is full.
His face is shining as the sun
To burn and lighten every one.
6. Oh, when this living One we see,
We'll fall as dead, we'll finished be.
But then the Lord His comfort gives—
He once was dead, but now He lives.

7. प्रत्येक कलीसिया प्रेम करें—
तब सारे धन को उण्डेलेगा
अन्य सभी प्रेम को हम त्यागे
लें यीशु को, दूजा कुछ नहीं।

7. Let every church just love Him more
His riches then He will outpour.
All other loves now lay aside;
Let's take this Jesus, none beside.

Experience of God - As Life

1191

परमेश्वर का अनुभव — जीवन की तरह

168

1. मेरी आत्मा से एक सोता है बहता
मुझमें बहता त्रिएक ईश्वर
पिता एक स्रोत है, मसीह पुत्र मार्ग है
और आत्मा देता जीवन मुझे

1. From my spirit within flows a fountain
of life—
The Triune God flowing in me;
God the Father's the source, Christ the
Son is the course,
And the Spirit imparts life to me.

प्रभु अनमोल जानूं बहाव को
प्राण जीवन मैं अपना छोड़ दूँ
हे प्रभु गहरा कर जीवन का बहाव
तेरे आने पर जीवन हो ताज

Lord, I treasure the sweet flow of
life,
And my soul-life at last I lay
down;
O Lord, deepen the pure flow of
life;
At Your coming may life be my
crown.

2. हरी चराईयों में यीशु मुझको बिठाता
ले चलता सुखदाई जल के पास
न संघर्ष न तनाव, सब कोशिशें व्यर्थ है
बहाव में, मैं हूँ आशीषित

2. In the fresh, tender grass Jesus makes
me lie down;
He leads me by waters of rest;
No more struggle and strain; all self-
effort is vain;
In the flow I am perfectly blessed.

3. एक दिन यीशु बुलाया, पवित्र स्थान में
दिव्य उपस्थिति में जीने
हाल्लेलूयाह मैंने सुना, प्रोत्साहक वचन को
बने रहना— तुम हो दाख में लता

3. Jesus called me one day to the Holiest
Place,
To live in His presence divine;
Hallelujah, I've heard an encouraging
word:
"Abide—you're a branch in the vine."

प्रोत्साहन — दौड़ने की

169

1. दौड़ो, दौड़ो लक्ष्य की ओर—
सर्व सम्मिलित मसीह
बुलाहट की इनाम पाने
को दौड़ो मसीह तक

आगे दौड़ो, आगे दौड़ो,
आगे दौड़ा, हल्लेलूयाह इनाम को
हम आगे दौड़ते, दौड़ते जाते!
मसीह को पाने को

2. दौड़ो, दौड़ो, व्यर्थ जानो,
जो बातें लाभ की थी
परमेश्वर का मसीह पाओ
जो ईनाम है महिमामय

3. दौड़ो, दौड़ो प्रभु को जानो
पुनरुत्थान की शक्ति
हां यह हमारा श्रेष्ठ ईनाम
मुसीबत की घड़ी में भी

4. दौड़ो, दौड़ो एक काम करो
बीती बातें भूल जाओ
आगे मसीह को पाने
को बढ़ो इस मन से

Encouragement -For Pressing On

1205

1. Press on, press on toward the goal—
The all-inclusive Christ.
To gain the prize of God's high call,
Press on, press on to Christ!
Pressing on! Pressing on!
Pressing on! Hallelujah for the
prize
We're pressing on! On and on!
To gain the Christ of God!
2. Press on, press on, count all things
loss.
All that is gain to us,
To win the prize, the Christ of God,
Is far more glorious!
3. Press on, press on to know the Lord
And resurrection power—
Oh, this is our supreme reward,
E'en in the suffering hour!
4. Press on, press on, this one thing do,
Forget the things behind;
Press onward to the Christ before,
Press onward with this mind!

कलीसिया — परमेश्वर के झुण्ड की तरह

170

1. यीशु हैं अद्भुत चरवाहा
लाया हमें बाड़े से दूर
उसकी चरागाह में बहुतायत से
उसकी सम्पन्नता असीम।

The Church - As God's Flock

1221

1. Jesus, our wonderful Shepherd
Brought us right out of the fold
Into His pasture so plenteous,
Into His riches untold.

महिमामय कलीसिया जीवन
भोज करते भण्डार से
जहाँ रहते हम एकता में
खुदा देता जीवन सदा

Glorious church life,
Feasting from such a rich store!
Here where we're dwelling in
oneness
God commands life evermore.

2. विभाजन से हमें बुलाया
थके और भूखे थे हम
अच्छी भूमि में लाया हमें
अच्छा आत्मा के लिए।

2. In the divisions He sought us,
Weary and famished for food;
Into the good land He brought us,
Oh, to our spirit how good!

3. यीशु स्वयं हमारी चराही
भोजन हैं जिसको खाते हैं
हम भेड़ जैसे खिलाये जाते
हर वक्त जब भी हम मिलते।

3. Jesus Himself is our pasture,
He is the food that we eat;
We as His sheep are fed richly
Each time, whenever we meet.

4. रहते हम ऊँचे पर्वत पर
भीगते सुबह की ओस से
बुझाता सोते से प्यास को
जल जीवित और हैं नया।

4. Dwell we here on a high mountain,
Wet with the morning-fresh dew,
Slaking our thirst at the fountain,
Water so living and new.

5. मसीह विश्राम और आनन्द हैं
नहीं हैं किसी का भय
यहाँ भेड़ें रहती सुरक्षित
रखता उपस्थिति में।

5. Christ is our rest and enjoyment,
Here we have nothing to fear;
Here all the sheep dwell securely,
Kept by His presence so dear.

कलीसिया — मसीह की देह की तरह

The Church - As Christ's Body

171

1226

1. कलीसिया महिमामय और
हम सब इसके भाग है
खुश हैं प्रभु ने बनाया हमें एक
इस संसार में एक देह हैं और
हम सब इसके अंग हैं
हाल्लेलूईयाह प्रभु ने बनाया एक

1. Oh, the church of Christ is glorious,
and we are part of it —
We're so happy that the Lord has made
us one!
There's a Body in the universe and we
belong to it —
Hallelujah, for the Lord has made us
one!

हाल्लेलूईयाह देह के लिए
हम हैं इस देह के अंग
हम सम्पूर्ण देह के लिए
हाल्लेलूईयाह प्रभु ने बनाया एक ।

Hallelujah for the Body!
We are members of the Body!
We are wholly for the Body!
Hallelujah, for the Lord has made
us one!

2. न कि अकेला मसीह पर संगठित अस्तित्व
खुदा का होगा पूर्ण प्रदर्शन अभी
न कि अकेली कलीसिया पर
एक देह संगठित

हाल्लेलूईयाह हम लोग देह में हैं अभी ।
हाल्लेलूईयाह देह के लिए
शैतान काँपता है देह से
देह में हम विजयी हैं
हाल्लेलूईयाह हम लोग देह में हैं अभी ।

2. Not the individual Christians, but a
corporate entity —
God must have it for His full expression
now;
Not just individual churches but the
Body corporately —

Hallelujah, we are in the Body
now!
Hallelujah for the Body!
Satan trembles at the Body!
We're victorious in the Body!
Hallelujah, we are in the Body
now!

3. सात सोने की दीवटे
उनका स्वभाव है दिव्य
देह के जीवन में स्वभाविक कुछ नहीं
जब, बांटते दिव्य स्वभाव में
दीवट और चमकती हैं
हाल्लेलूईयाह तीव्रता से चमकता हैं ।

हाल्लेलूईया देह के लिए
देह के दीवट के लिए
चमकती देह के लिए
हाल्लेलूईयाह तीव्रता से चमकता हैं ।

3. There are seven golden lampstands in
the nature all divine —
Nothing natural does the Body life
allow.
When we're one and share God's
nature,
how the lampstand then does shine
—
Hallelujah, it is brightly shining now!

Hallelujah for the Body!
For the lampstands of the Body!
For the golden, shining Body!
Hallelujah, it is brightly shining
now!

4. कैसे प्रकट करें एकता
 दिव्य और चमकीला
 हल्लेलूईयाह यीशु को खाना हैं मार्ग
 वह जीवन का वृक्ष, मन्ना
 हमेशा का पर्व है

हल्लेलूईयाह हमें उसे रोज खाना ।
 हम एक हैं, यीशु खाने से
 हम दिव्य, यीशु खाने से
 हम चमकते यीशु को खाने से
 हल्लेलूईयाह यीशु को खाना हैं मार्ग ।

4. How may we express such oneness,
 be divine and shining too?
 Hallelujah, eating Jesus is the way!
 He's the tree of life, the manna, and
 the feast that's ever new —
 Hallelujah, we may eat Him every day!

We are one by eating Jesus!
 We're divine by eating Jesus!
 How we shine by eating Jesus!
 Hallelujah, eating Jesus is the
 way!

कलीसिया – एक नया मनुष्य की तरह

172

1. पहले स्वभाव से हम पाप में मरे थे
 पूरी कलह की दुनिया में
 पर मसीह ने हम को जिलाया
 उठाकर अपने साथ बिठाया

यीशु ही साथ ला रहा है
 आओ, देखो संतों को एक साथ
 उसका प्रेम हमें बुन रहा है
 प्रभु के पूरे डील डौल तक

2. संतों साथ हम अनुभव करें
 परमेश्वर का विशाल परिमाण
 मसीह के प्रेम परे को जानें
 कि हम उसकी परिपूर्णता से भर जाएं

The Church - As One New Man

1232

1. Once by nature we were dead in sin,
 In a world of utter discord;
 But together God has quickened us,
 Raised us up to sit together with the
 Lord.

Jesus is getting us together,
 Come and see the saints in one
 accord.
 His love is knitting us together,
 To the stature of the fullness of
 the Lord.

2. Thus with all saints we can apprehend
 All the vast dimensions of God.
 Knowing Christ's love passes all we
 know,
 We're together filled to fullness with
 our God.

3. जानते हम अब परमेश्वर का उद्देश्य
रहस्य अब प्रगट हो गया
मसीह, कलीसिया को साथ हम देखते
एक साथ शत्रु को हम लज्जित करेंगे

4. इस कारण से हम प्रार्थना करें
भीतरी मनुष्य को बल दे पिता
हमारे हृदयों में घर बना
कि हम प्रेम में जड़ और नींव डाले

5. देह में साथ मिलकर हम गठेंगे
पूर्ति करता अंगो को मसीह
भागो के परिमाण की मदद से
प्रेम में बढ़कर उन्नति करता है देह

6. उसके उद्देश्य को पूरा करने अब
नया मनुष्य में हम एक हैं
कलीसिया में हो उसकी महिमा
और यीशु मसीह में सदा—आमीन

3. Now we know the purpose of our God,
Visible the mystery became:
Christ, the church, together now we
see,
And together put the enemy to shame.

4. For this cause we pray the Father
God—
Strengthen Thou with might our inner
man;
Make Yourself at home in all our hearts,
Root us, ground us in Your love and for
Your plan.

5. In the Body we'll be fitly framed
As the many members Christ supply;
Working in the measure of each part,
All by growth in love the Body edify.

6. Now we're one His purpose to fulfill,
As the one new man of His plan.
Unto Him be glory in the church,
And in Jesus Christ forevermore—
Amen!

कलीसिया — हमारा घर और आराम

173

1. कलीसिया जीवन की, हरी चराही में लाया है
कि मसीह को अनुभव करूं यहां,
वह संतो के लिए आनंद से भरा हुआ है,
वह नया, निर्मल और प्रिय सदा!

The Church - As our Home And Rest 1237

1. Splendid church life! His green garden!
He has brought us, praise the Lord,
To experience the Christ Who's
growing here!
He is full of rich enjoyment
To His saints in one accord;
He is new and fresh, available and dear.

मैं आनन्दित हूँ इस जगह में,
 उसके अनुग्रह में बढ़ते हैं,
 कुछ और भाता नहीं मुझको,
 पर जीवन का वृक्ष खाना,
 और जीवन का जल पीना है मुझे!

I'm so happy in this lovely place,
 In the garden growing in His
 grace!
 There is no finer pleasure
 Than to eat the living tree
 And to get the living water into
 me.

2. कोई स्कूल या फैक्ट्री, या हवा में चर्च नहीं
 है,
 पर है बाग जहां बीज बोता प्रभु,
 हमें रखता एक जुट, कि हम ले बाग का
 रूप,
 हमें उपजाता और बढ़ाता है मुफ्त!

2. It is not a school or factory
 Or a chapel in the air;
 But a garden where our Lord can plant
 and sow.
 So He's placed us all here corporately
 To be His garden fair,
 Where He's free to cultivate and make
 us grow.

3. तो कलीसिया जीवन के बाग में
 फल लाता वृक्ष है
 जीवन से भरपूर, खाने को उपलब्ध
 तो हो सरल न हो कठोर
 धारणा त्यागो—खाओ वृक्ष
 यीशु को हर पल लो—वो है मधुर

3. Thus within the church-life garden
 There's a fruit-producing tree
 Full of life and so available to eat.
 So be simple, don't be hardened,
 Drop your concepts—eat that tree!
 Take in Jesus every moment—He's so
 sweet!

4. वृक्ष के साथ जल है
 मसीह में खुदा बहता
 सारी प्यास बुझाता, संघर्ष अब अंत
 हालेलूयाह उसके बाग में
 यीशु स्वयं हममें बहता
 जीवन में बढ़ने को वह आपूर्ति

4. With the tree there is the water,
 Flowing God in Christ to us,
 Quenching all our dryness, ending all
 our strife.
 Hallelujah! In His garden
 Jesus flows Himself to us,
 As the full supply for us to grow in life.

5. क्या तुम न संतुष्ट, आभारी कि
 प्रभु लाया यहां
 जहां सुख और समृद्धि बहती है मुफ्त?
 सो हो आनंदित और हर्षित
 आत्मा में भोज करो
 कि खुदा का बाग फल लायें प्रचुर

5. Aren't you satisfied and thankful
 That our Lord has brought you in
 Where His pleasures and His riches
 flow so free?
 So be happy and be joyful,
 In the spirit feast on Him,
 So God's garden can bear fruit
 abundantly.

कलीसिया — जीवन में बढ़त द्वारा निर्माण

174

1. गहरा, गहरा, यीशु के क्रूस में
मुझे जाने दो
मृत्यु और जीवन साथ है चलती
बहाव को गहरा करो;
ओ गहरा दुआ करे
हम पर कार्य करे
और गहराई पर चले
जब तक तुझमें नये न हो
2. उंचे उंचे, यीशु के जीवन में
हम कितने नीचे
तेरे जीवन से उंचाई को जाते
उंचा हम चले
ओ उंचा, दुआ करे
हर दिन रूपांतरित हो
और बहाव में धनी हो
तेरा जीवन, ही हम जानें
3. बढ़ता, बढ़ता हममें वो है बढ़ता
हर दिन और ज्यादा
हम सबके जीवन में वो है बहता
अब यह है उसका मार्ग
ओ बढ़त हम मांगते
हर दिन हममें बढ़ें
तूझे जानना काफी नहीं
तेरा जीवन अब हममें बढ़े
4. जीता, जीता मसीह हममे जीता
वह व्यवहारिक है
छोटी, बड़ी, सबकुछ और सबमें
वह शामिल होता

The Church - Building by the Growth in Life

1240

1. Deeper, deeper, in the cross of Jesus;
Deeper let me go;
Death and life, they always go
together;
Deepen, Lord, the flow.
Oh, deeper yet we pray,
Do work in us each day;
Go deeper, through and through,
Till in Thee we're wholly new.
2. Higher, higher, in the life of Jesus;
Lord, we are so low.
By Thy life we all can go much higher—
Higher let us go.
Oh, higher yet we pray—
Transform us every day—
And richer in the flow;
May Thy life be all we know.
3. Growing, growing, in us He is growing,
More and more each day.
Into all our living He is flowing—
This is now His way.
For growth, O Lord, we pray;
Increase in us each day.
It's not enough to know;
Now Thy life in us must grow.
4. Living, living, Christ is all our living,
He's so practical:
Small things, big things, anything and
all things—

हर तरह, मसीह को जीएं
ओ आज उसे जीएं
उसके नाम को पूकारें
अपना सब कुछ उसको दें

He's involved in all.
Live Christ in every way;
Oh, live Him out today.
His name you now must call,
And give Him your all for all.

5. व्यक्ति, व्यक्ति यीशु मेरा व्यक्ति
अब मुझमें जीता
वह है स्वाद, रसैया और कार्य
ओ क्या ही महिमामय

मेरा व्यक्ति प्रभु तू है
मेरे मन में घर बना
हर तरह से जीवन जैसे
हर दिन मेरा व्यक्ति हो

5. Person, Person, Jesus is our Person,
Living now in us.
He's our tastes, our attitudes and
actions;

Oh, how glorious!
Our Person, Lord, Thou art
Make home in all our heart.
As life in every way
Be our Person, Lord, each day.

6. कलीसिया कलीसिया, स्थानीय कलीसिया
में हम बहाव पाते
गहरा, उंचा, मसीह है जीता
कलीसिया के लिए बढ़े

कलीसिया जो आज है
हर तरफ से मसीह
इसलिए स्वयं से बचे
तेरी देह, बढ़त के लिए

6. Churches, churches, in the local
churches
We all find the flow:
Deeper, higher, Christ as all our living,
For the church we grow.
The churches are today
Just Christ in every way.
For this, from self we cease,
For Thy Body, Thine increase.

7. निर्माण, निर्माण, हम निर्माण हैं देखते
ऐसे कलीसिया का
मसीह अनुभव ही निर्माण लायेगा
वह है केवल मार्ग

ओ प्रभु निर्माण करो
हर दिन बढ़त दो
नये यरुशलेम के लिए
अब ऐसा मानव बना

7. Building, building, we will see the
building
Of the church this way:
Christ experienced will produce the
building—

He's the only way.

Oh, build us, Lord, we pray,
By growth of life each day.
Oh, make us now such men
For the new Jerusalem.

8. आता आता, यीशु जल्द है आता
 दुल्हन लेने को
 कलीसिया में तैयारी है करते
 महिमामय होने
 प्रभु यीशु तू जल्दी आ
 अब है मेरी गूहार
 अंत तक स्तुति करें
 ओ जल्द आ! जल्द आ! आमीन

8. Coming, coming, Jesus soon is coming
 For His chosen Bride.
 In, the churches we are all preparing
 To be glorified.
 Lord Jesus, come again
 This cry is deep within
 We'll praise Thee to the end,
 Oh, come back! Come back!
 Amen!

महिमा की आशा — मसीह के आगमन की तैयारी

Hope of Glory -Preparing for Christ's Return

175

1. मेरे बत्ती में तेल है— हम जलते
 मेरे बत्ती में तेल है आज
 आत्मा की ओर प्रभु हमें मोड़ो
 हमें मोड़ो मोड़ो पूरी तरह!

प्रभु आमीन हालेलुयाह
 हम अब जले जले प्रतिदिन
 प्रभु आमीन हालेलुयाह
 मुड़े मुड़े पूरी तरह

2. तेरे आने पर हमारे बर्तन
 को जरूरत तेल की पूर्ति
 तो देते बर्तन हम भरने को
 ताकि बत्ती कभी ना बुझे

भर दे, यीशु! भर दे, यीशु!
 हर वक्त दे खुद को और अधिक!
 भर दे, यीशु! भर दे, यीशु!
 भर अब हमें सच्चाई से!

1308

1. We have oil in our lamps—we are
 burning!
 We have oil in our lamps today!
 To the spirit, O Lord, keep us turning,
 Keep us turning, turning all the way!

O Lord! Amen! Hallelujah!
 We are burning, burning every
 day!
 O Lord! Amen! Hallelujah!
 Turning, turning all the way!

2. But our vessels need oil for Thy
 coming;
 We must gain a reserve supply.
 So our vessels we give for the filling
 That our lamps may never, never die.

Fill us, Jesus! Fill us, Jesus!
 Every moment give us more of
 Thee!
 Fill us, Jesus! Fill us, Jesus!
 Fill us with reality!

3. तेरे आने तक हम जलेंगे
उस दिन तक हम जलेंगे
तब विवाह में संग हम जायेंगे
और पूरी तरह से हम जलेंगे

आओ यीशु आओ यीशु
आ और पाओ हमें पूर्ण चमकते
आओ यीशु आओ यीशु
आ, दुल्हन में करो आनंद

महिमा की आशा — विवाह का दिन

176

1. प्रभु जल्द दिखेगा,
दिन अभी करीब है।
ओह, कितना प्रेम तेरा आना करते!
और दूजा कोई नहीं
प्रभु, प्रेमी, या जीवन
बिना प्रभु, हमारा दूल्हा!
2. घड़ी अब नजदीक है,
जल्द धूम को सुनेंगे
और बादलों में देखेंगे
ओह कितना मधुर है
मिलते दूल्हा और दुल्हन
और प्रेम परे को जानेंगे
3. पल उड़ता जाता है,
जल्द उसे देखेंगे!
आमीन, प्रभु यीशु! जल्दी आ!
हम तेरी राह तकते
तेरे साथ रहने को,
जिसने जीता हमारा हृदय।

3. Then we'll burn till the Lord comes to
meet us,
Then we'll burn till He comes that day.
Then we'll go in with Him to the
wedding
And be brightly burning all the way.
Come, Lord Jesus! Come, Lord
Jesus!
Come and find us filled and
burning bright!
Come, Lord Jesus! Come, Lord
Jesus!
Come and in Thy Bride delight.

Hope of Glory -the Wedding Day

1314

1. Lord, Thou wilt soon appear,
Thy day is almost here.
Oh, how we love Thy coming soon!
We have no other
Lord, life, or lover
Than Thou, Lord Jesus, our
Bridegroom!
2. The hour is drawing nigh,
Soon we shall hear Thy cry
And with Thee on the clouds descend.
Oh what an hour sweet
When Bride and Bridegroom meet
And love surpassing comprehend.
3. The moments fly apace,
Soon we shall see Thy face!
Amen, Lord Jesus! Quickly come!
We long Thyself to see
And with Thee ever be,
Thou who our inmost heart hath won.

4. पर अब यह पल है;
 तू प्रभु है दूल्हा,
 वापस आयेगा दुल्हन को लेने
 ओह हल्लेलूयाह!
 इसकी हम देखते राह,
 और तू भी संतुष्ट होवेगा।

गाने के लिए वचन

177

आनंद के साथ जल भरोगे
 तुम उद्धार के स्रोतों से
 उस दिन तुम, ये कहोगे
 स्तुति हो

नाम, ले के, उसका
 बड़े कामों का, प्रचार करो
 बताओ कि उसका नाम ऊँचा है
 जोश से कहो, तुम सब हे सिय्योन वासी
 कि तुम सब के बीच में महान है, इस्राएल
 का पवित्र

अंतिम प्रकटीकरण—परमेश्वर का अनंत उद्देश्य

178

1. क्या चमत्कार क्या रहस्य
 परमेश्वर और मनुष्य जुड़ गये
 मनुष्य को खुदा बनाने के लिए खुदा
 मनुष्य बना यह है व्यवस्था
 उसकी सुइच्छा और चाह के द्वारा
 अपने लक्ष्य को प्राप्त करें।

4. Tis but a moment now;
 Thou, our Lord Bridegroom, Thou
 Soon wilt return to claim Thy Bride.
 O Hallelujah!
 'Tis this we long for,
 And Thou too wilt be satisfied.

Scripture for Singing

1340

Therefore with joy shall ye draw water
 Out of the wells of salvation
 And in that day shall ye say
 Praise the Lord

Call upon His name, declare His doings
 among the people,
 Make mention that His name is
 exalted
 Cry out and shout, thou inhabitant of
 Zion
 For great is the Holy One of Israel in
 the midst of thee

Ultimate Manifestation-God's Eternal purpose

1350

1. What miracle! What mystery!
 That God and man should blended be!
 God became man to make man God,
 Untraceable economy!
 From His good pleasure, heart's desire,
 His highest goal attained will be.

2. पहला खुदा—मनुष्य शरीर बन गया
 उसकी खुशी में मैं खुदा बन जाऊँ
 जीवन, स्वभाव में हम उसके वर्ग
 परमेश्वरत्व सिर्फ उसके लिए
 उसके सदगुण मेरी उत्तमता
 वह मेरे द्वारा चमक जाएँ।

3. अब मैं जीवित नहीं रहा
 मसीह मेरे साथ जीवित हैं
 त्रिएक परमेश्वर और संतो के साथ
 होंगे उसके सार्व-भौमिक भवन
 सामूहिक प्रकटीकरण के लिए
 हम उसकी जैविक देह को गाएँ।

4. यरूशलेम हैं परम पूर्णता
 दर्शनों का समग्रता
 त्रिएक परमेश्वर और त्रिभागीय मनुष्य
 एक प्रेमी जोड़ा अनन्तकालिन
 मनुष्य परमेश्वर का एक साथ होना
 पारस्परिक निवास स्थान बना
 खुदा की महिमा मानवता में
 वैभव में चमकता रहा हैं

अंतिम प्रकटीकरण—परमेश्वर का अनंत उद्देश्य

179

ईश्वर की अनन्त व्यवस्था
 है कि मानव उसके समान हो
 जीवन और स्वभाव में
 ना कि ईश्वरत्व में
 और स्वयं को मानव संग एक करना
 और मानव उसके साथ एक हो
 इस तरह अभिव्यक्ति में
 विस्तृत और बढ़ोत्तरी हो
 कि उसके सारे दिव्य गुण, कि उसके सारे
 दिव्य गुण
 मानव गुणों में प्रगट हो जाए

2. Flesh He became, the first God-man,
 His pleasure that I God may be:
 In life and nature I'm God's kind,
 Though Godhead's His exclusively.
 His attributes my virtues are;
 His glorious image shines through me.

3. No longer I alone that live,
 But God together lives with me.
 Built with the saints in the Triune God,
 His universal house we'll be,
 And His organic Body we
 For His expression corp'rately.

4. Jerusalem, the ultimate,
 Of visions the totality;
 The Triune God, tripartite man—
 A loving pair eternally—
 As man yet God they coinhere,
 A mutual dwelling place to be;
 God's glory in humanity
 Shines forth in splendor radiantly!

(Repeat the last two lines of each stanza.)

Ultimate Manifestation-God's Eternal purpose

1. God's eternal economy
 Is to make man the same as He is
 In life and nature,
 But not in the Godhead
 And to make Himself one with man
 And man one with Him
 Thus to be enlarged and expanded in
 His expression
 That all His divine, that all His divine
 Attributes may be expressed in human
 virtues.

आंतरिक जीवन के विभिन्न पहलुएं—जीवन की संगति

180

1. जीवन देने आया मसीह
संसाधित दैवीय त्रिदेव
श्रोत है परमेश्वर पिता
उभरता सोता है वो
पुत्र है जैसे भावुक वसंत
आत्मा में नदि जो जीवन व्यापि
आह! कैसा ये चमत्कार है ?
यह त्रिएक परमेश्वर मुझमें
आह! मुझे मिली नदियाँ जीवन कि
बहे बाहर मेरी आत्मा से
मुझे मिली नदियाँ जीवन कि
बहे बाहर मेरी आत्मा से
अब ये जीवन बहे मुझसे,
मैं परिपूर्ण बहुतायत तक
पापों को वो निश्प्रभाव करे
उभरता वसंत अब अन्दर से
बहे अब — परिपूर्ण हो रहा स्वतः ही !

2. अब यह जीवन मुक्त है
यह मात्र एक विजय ही नहीं
परमेश्वर का उद्देश्य है
वह बहता निरुद्देश्य नहीं
जीवन में है अब संपूर्णता
एक संपूर्ण उद्देश्य अब मेरे पास
जीवन चले और बड़े, बहे रूप ले
अब यह जीवन कि नियति
आह ! मुझे मिली नदियाँ जीवन कि
बहे बाहर मेरी आत्मा से
मुझे मिली नदियाँ जीवन कि
बहे बाहर मेरी आत्मा से

Various aspects of Inner Life-The Fellowship of life

1351

1. Christ has come to be life, the
processed divine Trinity.
God the Father's the source, a fountain
emerging to be.
God the Son as a gushing up spring,
And the Spirit's a river for life imparting
Oh how can this miracle be? The Triune
God flowing in me!
Oh, I've got rivers of life flowing out of
my innermost being!
I've got rivers of life flowing out of my
innermost being!
As this life flows through me, I'm
supplied abundantly.
His life nullifies sin! Power springs
now from within!
To be free, overcoming
spontaneously.

2. Yet this life though it frees, is not meant
for mere victory.
God is full of intent and never could
flow aimlessly.
So this life has a totality, a
consummate issue encompassing me.
Life moves and life grows, life shapes
as it flows
Now I share in this life's destiny.
Oh, I've got rivers of life flowing out of
my innermost being!
I've got rivers of life flowing out of my
innermost being!

अब हम रहे साथ साथ
परमेश्वर मानव प्रत्यक्ष है
भेड़, पत्नी, आत्मा, दुल्हन
आओ पीयो नदि तट से
बड़े वृक्ष, आनंद है यह अनंत

We'll abide mutually, God and
man revealed to be
Lamb, Wife, Spirit, and Bride.
Come! Drink! And riverside,
Grows the tree, our enjoyment
for eternity!

3. अब तेवर का कोई कारण नहीं
है जिसके पास य ह जोड़
जीवन चलता अपने पाठ पे
और विजय निस्संदेह है
मुझे रहना है बस इस धारा में
परमेश्वर दे वृद्धि जब मैं पिछूँ तो
अब आनंदित हृदय उत्साह कदमों में
है मेरे मुस्कान चेहरे पे
आह ! मुझे मिली नदियाँ जीवन कि
बहे बाहर मेरी आत्मा से
मुझे मिली नदियाँ जीवन कि
बहे बाहर मेरी आत्मा से

3. So I've no cause to frown as one who's
received this zoe.
I know life runs its course and triumphs
inevitably.
I'm required just to stay in the flow,
If I do the drinking then God gives the
growth.
So there's joy in my heart, and a
spring in my step,
And a smile on my face as I sing,
Oh, I've got rivers of life flowing out of
my innermost being!
I've got rivers of life flowing out of my
innermost being!

मसीह का अनुभव—उसे प्रेम करना

181

प्रभु, मैं प्रेम करता
हाँ सचमुच प्रेम करता
बिना तेरे जीवन व्यर्थ हैं
तुम कितने आकर्षित
तुम कितने सुन्दर हो
तुम्हारी समृद्धि असीमित
तेरा नाम प्यारा, मधुर
पुकारना सन्तुष्ट करता
तू मेरा और मैं तेरा प्रभु
तेरे साथ मिश्रित हुआ
खुदा मनुष्य संगठन
पूर्वस्वाद नये यरूशलेम का।

Experience of Christ-Loving Him

O Lord, I love You,
I really love You,
Without You life's really nothing.
You are so attracting,
And You are so charming;
Your riches are unsearchable.
Your name's so dear and sweet,
Calling makes one satisfied,
Now You are mine and I am Thine,
Lord;
Joined and mingled with You,
God-man incorporation,
Foretaste of the New Jerusalem)

मसीह का अनुभव—उसकी उमड़ती संतुष्टि

182

1. ये सब आनंद कुछ भी नहीं
पाना नहीं, देखना नहीं
पर जीवित मसीह महिमा में
और परवाह करना नहीं
2. ये सब आनंद कुछ भी नहीं
पाना नहीं देखना नहीं
पर जीवित मसीह महिमा में
और उसकी इच्छा पृथ्वी पर

पताका गीत — मरकुस के सुसमाचार का क्रिस्तलीयकरण

183

जब हम मिश्रित आत्मा में जीते
हम सब मसीह को सीखते हैं
सच्चाई की आत्मा से, यीशु की
वास्तविकता,
बनता हैं जीवनीय, हमारा इतिहास
देह की वास्तविकता,
मसीह की देह की वास्तविकता
परमेश्वर का राज्य प्रभु यीशु हैं
बीज को बोया विश्वासियों में
और विकास होता एक मण्डल में
खुदा राज्य करें दिव्य जीवन में....

मसीह व्यक्ति, सर्वसम्मिलित मृत्यु
उसका अद्भुत पुनरुत्थान,
सर्वसम्मिलित प्रतिस्थापन
नया मनुष्य उत्पन्न करें
सिर्फ उसे सुनें, सिर्फ यीशु को देखें,
उसे सुनें और यीशु को देखें,

Experience of Christ-His Overflowing Satisfaction

1. O the joy of having nothing and being
nothing, seeing nothing
But a living Christ in glory,
And being careful for nothing
2. O the joy of having nothing and being
nothing, seeing nothing
But a living Christ in glory,
but His interests down here.

Banner Song - Crystallisation Study of Mark

When we live in the mingled spirit
We are learning Christ according to
The reality in Jesus by the Spirit of
reality
So that His biography becomes our
history
To be the reality of the Body, the Body
of Christ.
The Kingdom of God is the Lord Jesus!
Sown as a seed into the believers
And developing into a realm
Over which God can rule in the divine
life
Christ's person with His all-inclusive
death
And His wonderful resurrection
Is our all-inclusive replacement
For the producing of the One New Man!
So we must hear Him
And see Jesus only.
We must hear him and see Jesus
only.

आगे चलो, प्रचार करो, सारी सृष्टि
को
घोषणा करें, प्रस्तुत करो,
और मसीह को बांटो
उसकी बढ़त और विकास और
प्रकटीकरण
राज्य के लिए परमेश्वर का राज्य ।

Let us go forth and preach Christ
to all the creation!
Proclaiming the gospel,
presenting the truth and
ministering life!
For the growth, development, and
manifestation
Of the Kingdom of God.

आशीष प्रभु

184

आशीष प्रभु
(आशीष प्रभु)
सब ही सेवक प्रभु के
(सब ही सेवक प्रभु के)
खड़े जो रात को
(खड़े जो रात को)
प्रभु के भवन में
(प्रभु के भवन में)
उठाओ हाथ
(उठाओ हाथ)
पवित्र स्थान में
(पवित्र स्थान में)
आशीष प्रभु
(आशीष प्रभु)
आशीष प्रभु
(आशीष प्रभु)

खुदा ने बुलाया हमें

185

1. खुदा ने बुलाया हमें
योजना है महिमामय
जिसके लिए पूर्ण प्रक्रियाकृत
परिपूर्ण है अब वह
आत्मा के रूप अब वो हममें
हमारा नियत किया भाग
पूर्ण उद्धार को संपन्न करता
बनाए अब वो अपने जैसा

हो अब प्रभु का गृह प्रबंध का दर्शन
निर्देश करें मेरी हृदय को
और अब भरे मेरी आत्मा लौ से पूर्णतः
दृढ़ और तेज़ आत्मा से आगे बढ़ें
पूरा करने लक्ष्य
नव यरुशलेम हालेलूय्याह!

Come bless the Lord

Come bless the Lord,
(Come bless the Lord,)
All ye servants of the Lord,
(All ye servants of the Lord,)
Who stand by night,
(Who stand by night,)
In the house of the Lord.
(In the house of the Lord.)
Lift up your hands,
(Lift up your hands,)
In the Holy Place,
(In the Holy Place,)
And bless the Lord.
(And bless the Lord.)
And bless the Lord.
(And bless the Lord.)

God has called us for His purpose

1. God has called us for His purpose,
His economy so glorious,
For which He was fully processed;
Consummated now is He!
As the Spirit, He indwells us;
As our God allotted portion,
Working out His full salvation,
Making us the same as He is.
Oh, may a clear, controlling
vision of
The Lord's economy direct my
heart,
And burn in me until my
spirit's wholly set afire!
With spirit strong and active
we'll press on
To consummate God's goal—
New Jerusalem, Hallelujah!

2. जीया परमेश्वर – मनुष्य जैसे
दिया पालन करने को पथ
त्यागा स्वभाविक मनुष्य
आज्ञाधीन था मृत्यु तक
वह था एक ही परमेश्वर –मनुष्य
अब हम उसके प्रतिलिपि
गेहूँ जैसे हम मिश्रित है
सामूहिक प्रत्युत्पादन

3. जीया ये पुनरुत्थान को
मरे प्राण के जीवन, शरीर
जीवित है मिश्रित आत्मा में
त्यागेंगे स्वभाव जीवन
अब हम सब है जीवित देह में
हर दिन हम विजय को पाते
प्रयत्न करते सिय्योन के लिए
प्रभु के आगमन के ताक में

4. एक जीना खुदा मानव का
मिश्रित आत्मा में हर समय
एक साथ ही है हम दोनों अब –
जैविक अस्तित्व एक ही
यही दर्शन है युगों का
रोज़ करे हमे नियंत्रित
ताकि प्रभु को मिलें देह
चमकते पवित्र शहर

2. Jesus lived the God-man pattern,
Set the way for us to follow,
He denied His natural man and
Was obedient unto death,
Once He was the only God-man;
Now we are His duplication.
As the many grains we're blended
As His corporate reproduction.

3. Living out His resurrection,
Dying to the flesh and soul-life.
Living by the mingled spirit,
Natural man we will deny.
Now we're living in the Body,
Every day we're overcoming,
Striving for the peak of Zion,
Watching for our Lord's appearing.

4. God and man will have one living,
Always in the mingled spirit;
We two are incorporated
One organic entity!
This the vision of the ages
Will control our daily living
That the Lord may have His Body
Shining as the holy city.

प्रेम परमेश्वर जिसने भेजा प्रिय पुत्र को

186

1. प्रेम परमेश्वर जिसने भेजा प्रिय पुत्र को
मानव गिर गया भ्रष्टाचार के साथ
पर भेजा तूने प्रिय पुत्र
दिया परमेश्वर ने कृपा और प्रेम हमको
जब कि हम सब ही थे पापी
मसीह मरा

God is love, Who sent His beloved Son

1. God is love, Who sent His beloved Son.
Man is fallen with corruption,
But You sent Your dear Son.
God commends His kindness and love
toward us,
In that while we were yet sinners
Christ died for us.

परमेश्वर तूने न छोड़ा
प्रिय पुत्र को
पिता हम करे स्तुति
इस अमूल्य के लिए

God You did not spare Him,
Your beloved Son.
Father, how we praise You
For this precious One!

2. कौन जाने ये प्रेम हमारे पिता का
कानों ना सुना, आँखों ने ना देखा
पर प्रभु मैं छुड़ा गया
प्रेम परमेश्वर, परमेश्वर तू बना मानव
एक शपित मनुष्य, मरा मेरे लिए
प्रभु, लटका वृक्ष से

पिता तुमने भेजा
अपने प्रिय पुत्र को
बहाया क्रूस पर लहु
प्रेम पहुँचा मुझ तक

3. प्रेम परमेश्वर करता इसीलिये दिया पुत्र को
बस विश्वास करो, नाश ना हो
पर पाओ अनंत जीवन
बस विश्वास करो, नाश ना हो
पर पाओ अनंत जीवन

प्रेम परमेश्वर करता इसीलिये दिया
पुत्र को
बस विश्वास करो, नाश ना हो
पर पाओ अनंत जीवन
बस विश्वास करो, नाश ना हो
पर पाओ अनंत जीवन

2. Who can know the love from our
Father's being?
Ears have never heard, eyes have never
seen,
But Lord, I've been redeemed.
God is love. O God, a man You became;
A cursed man to be, God, You died for
me.
Lord, You hung from a tree.

Father, You have sent Him,
Your beloved Son.
He shed His blood on Calvary.
Your love reached me.

3. God so loved the world that He gave us
His Son.
Just believe in Him. Be not perishing,
But have eternal life.
Just believe in Him. Be not perishing,
But have eternal life.
God so loved the world that He gave
us His Son.
Just believe in Him. Be not
perishing,
But have eternal life.
Just believe in Him. Be not
perishing,
But have eternal life.

कैसे मैं एक गांव की लड़की

187

1. कैसे मैं एक गांव की लड़की
बने तेरा जोड़ा — दुल्हन ?
तू है पवित्र तू है दिव्य
पर मैं पतित मनुष्य
2. तेरे बीना ना कोई संयोग
तेरे जैसा बनूं इस प्रेम में
सृष्टि से पहले ही मुझे चुना
कुछ ना बदले तुझे

ये जो दिव्य प्रेम
हृदय की आशा
मैं बना अधम मनुष्य
तुझे खुश करने को

कुछ भी ना रोके
कुछ भी ना बदले
अनंत प्रेम उसके लिए
मैं पाऊँगा उसको
3. ना स्वर्गदूत, ना मानव जाना
रहस्य जो हृदय में छुपा
चाहा मानव के साथ एक होना
संसार के पहले से
4. पाप आया मुझे क्षय करने
शैतान के कुटिलता के द्वारा
कुछ भी ना तोड़ सके प्रेम तेरा
पाने को पूर्णतः

How could a country girl like me

1. How could a country girl like me
Become Your match — Your bride to
be?
You're holy and You are divine
But I'm fallen and human.
2. Without You, Lord, I have no chance
To be like You in this romance.
But You chose me ere the world
began
Nothing could change Your plan.

This divine romance
Is My heart's deep plan.
I became a lowly man
To court My country girl.

Nothing could deter,
Nothing can alter
My eternal love for her;
I'll gain My country girl.
3. No man or angel ever knew
This secret hidden deep in You
That You desired to be one with man
Before the world began.
4. Though sin came in to ruin me
Through Satan's scheme and
subtlety
Nothing could break Your love for me
To gain me totally.

ये जो दिव्य प्रेम
हृदय की आशा
मैं बना अधम मानव
तुझे खुश करने को

कुछ भी ना रोके
कुछ भी ना बदले
अनंत प्रेम उस के लिए
मैं पाऊँगा उसको

This divine romance
Is My heart's deep plan.
I became a lowly man
To court My country girl

Nothing could deter,
Nothing can alter
My eternal love for her;
I'll gain My country girl

5. राजाओं का राजा बना मानव
तू मरा — कि मैं मुक्त हुआ
पुनरुत्थान में बने रानी
करने राजा को ब्याह

6. जी उठ कर, मुझमें आया
अब मुझमें है तेरी दिव्यता
है जीवन और स्वभाव में एक
दोनों मानव व दिव्य

प्रेम मुझे खींचा
तेरे हूँ मैं अब
मैं अपना ना हूँ, प्रभु
मैं अब बस तेरा

तेरा प्रेम खींचा
नाम में मोहित हुआ
वश किया तेरा व्यक्ति
हाँ मैं चुम्बित तुझसे

7. प्रभु इस मधुर संगति में
रह मेरे साथ प्रभु घनिष्ट
व्यक्तिगत और बहुत प्रिय
एक मधुर भरा सम्बन्ध

5. As King of kings You became a man,
You died for me—I've been
redeemed,
In resurrection made us queen
To marry You, my King.

6. From death You 'rose and entered
me,
I now possess Your divinity;
In life and nature we're the same:
Both human and divine.

In Your love I'm drawn,
To You I belong;
I am not my own, Lord,
I'm Yours alone.

By Your love I'm drawn,
In Your name I'm charmed,
And Your Person captured me,
For I've been kissed by Thee.

7. Lord, in this close sweet fellowship,
Lord, be with me so intimate,
So personal and affectionate;
A sweet relationship.

8. प्रभु रोज़ आंतरिक मन बदलो
दिल को अपना पूरा बनाओ
करो पूर्ण रूपांतरित
बनने तेरी रानी

प्रेम मुझे खींचा
तेरी हूँ मैं अब
मैं अपनी ना हूँ, प्रभु
मैं अब बस तेरी

तेरा प्रेम खींचा
नाम में मोहित हुई
वश किया तेरा व्यक्ति
हाँ मैं तुझसे चुमी गई

मैं क्रुसीकृत मसीह के साथ

188

मैं क्रुसीकृत मसीह के साथ
और अब मैं नहीं जो जिये
पर है वो मसीह जो जीता
और जीवन जो मैं जीयूँ
शरीर में विश्वास से
परमेश्वर के पुत्र में
किया प्रेम, खुद को दिया

1. और अब मैं चलता हूँ आत्मा से
धीरे—धीरे, प्रतिदिन
प्रभु करता प्रेम
तू है मेरा अमूल्य जन
जब मैं ये और वो करूँ
याद दिलाओ तू कहाँ
तू है आत्मा में
भरता अनुग्रह से मुझे

8. Lord, daily change my inward being
Lord, all my heart possessing
In all my being—transforming
To be Your bride and queen

In Your love I'm drawn,
To You I belong;
I am not my own, Lord,
I'm Yours alone.

By Your love I'm drawn,
In Your name I'm charmed,
And Your Person captured me,
For I've been kissed by Thee.

I am crucified with Christ

I am crucified with Christ
And it is no longer I who liveth,
But it is Christ who lives in me;
And the life which I now live
In the flesh, I live in faith—
The faith in the Son of God
Who loved and gave Himself up
for me.

1. And now I'm walking by the Spirit
Step by step, day by day,
O Lord, I love You.
You're the precious One to me.
As I do this and that
Lord, remind me where You're at;
You're in my spirit,
Dispensing grace to me.

2. और अब मैं चलता हूँ आत्मा से
आगे बढ़ूँ लक्ष्य की ओर
प्रभु तेरा उद्देश्य
मेरे लिए सब कुछ
खुद से प्रेम मैं त्यागता हूँ
कलीसिया, दुल्हन के लिए
गृह प्रबंध की
परिपूर्ति के लिए

2. And now I'm walking by the Spirit,
Marching on toward the goal.
O Lord, Your purpose
Means everything to me.
All self-love I lay aside
For the churches, for Your Bride,
For the fulfillment
Of Your economy.

अगर है चाह प्रभु कि तो

189

1. अगर है चाह प्रभु कि तो,
ना ढूँढो इस दुनिया में
क्योंकि यह दुनिया ना है घर जहाँ वो है
जहाँ वो है, जहाँ वो है
जहाँ वो है, जहाँ वो है
क्योंकि यह दुनिया ना है घर जिसमे वो है

2. अगर है चाह प्रभु कि तो, ना ढूँढो उसे मन
में
क्योंकि मन बस जनता है, वह चखें ना
वह चखें ना, वह चखें ना
वह चखें ना, वह चखें ना
क्योंकि मन बस जनता है, वह चखें ना

3. अगर है चाह प्रभु कि तो, खोलो अपने हृदय
को
खोलो अपने हृदय को और आने दो
और आने दो, और आने दो
और आने दो, और आने दो
खोलो अपने हृदय को और आने दो

If you wish to find the Lord

1. If you wish to find the Lord,
Do not seek Him in the world,
For the world is not the place in
which He dwells.
In which He dwells, in which
He dwells,
In which He dwells, in which
He dwells,
For the world is not the place in
which He dwells.

2. If you wish to find the Lord,
Do not seek Him in the mind,
For the mind can only know, it
cannot taste.
It cannot taste, it cannot taste,
It cannot taste, it cannot taste,
For the mind can only know, it
cannot taste.

3. If you wish to find the Lord,
You must open up your heart,
You must open up your heart and let
Him in.
Let Him in, let Him in,
Let Him in, let Him in,
You must open up your heart and let
Him in.

4. अगर है चाह प्रभु कि तो, पुकारो नाम बस
 उसका
 पुकारो नाम बस उसका और आने दो
 पुकारो नाम, पुकारो नाम
 पुकारो नाम, पुकारो नाम
 पुकारो नाम बस उसका और आने दो

4. If you wish to let Him in,
 You just call upon His name,
 You just call upon His name and let
 Him in.
 Call His name, call His name,
 Call His name, call His name,
 You just call upon His name and let
 Him in.

प्रभु तेरा बस एक स्पर्श

190

1. प्रभु तेरा बस एक स्पर्श,
 बस तेरा सुंदर स्वरूप
 बस तेरा चुंबन
 चाहूँ मैं बस, मेरे प्रेम

2. सुनने दो वाणी तेरी
 तू ही अब मेरी पसंद
 बोल मुझे प्रेम से
 सबकुछ मेरा अर्पण

कुछ भी न कोई करे संतुष्ट अब
 बस तू ही प्रभु
 यीशु, मेरा प्रेम, मेरी आकांक्षा
 हे प्रभु, बस करूँ प्रेम

3. पहले सा करने दे स्पर्श
 लालसा हो और अधिक
 तू ही सर्वश्रेष्ठ
 सब कुछ छोड़ूँ तेरे लिए

4. वह चुंबन तेरे मुख का
 मेरे होंठ स्तुति करते
 कृपा से भरपूर
 ओह क्या वो स्वाद, मेरे प्रेम

Just one touch of You, dear Lord

1. Just one touch of You, dear Lord,
 Just one look into Your eyes,
 Just one kiss from You,
 You're all I need, my Love.

2. Let me hear again Your voice.
 You are now my final choice.
 Speak in love to me.
 I'll waste myself on Thee.

Nothing and no one can satisfy
 me
 but You anymore.
 Jesus, I love You, my only
 desire.
 Oh Lord, I just love You.

3. Let me touch You as before,
 Craving for You more and more,
 You're the very best!
 I'll drop the rest for You.

4. Oh, the kisses of Your mouth
 Make my lips to praise and shout.
 Lord, You're full of grace
 Oh, what a taste my Love!

कुछ भी न कोई करे संतुष्ट अब
बस तू ही प्रभु
यीशु, मेरा प्रेम, भर दे मुझमें आग
तेरे लिए, है तू ही चाह

Nothing and no one can satisfy
me
but You anymore.
Jesus, my first Love, oh set me
on fire
For You, my only desire.

5. मुझे भर दृष्टि से
ओह! यह मेल संतुष्ट: करे
जब देखुं तुझे
मैं भर जाऊँ, मेरे प्रेम

5. Just infuse me with Your eyes.
Oh! This union satisfies!
As I gaze on You.
I'm filled with You, my Love.

6. बस तू ही है कर सकता
मैं ना कर सकूँ अकेले
पास में रख मुझे
जुड़ूँ तुझसे जैसे एक

6. Only You alone will do.
I can't make it without You.
Keep me close to You,
Just joined to You as one.
Nothing and no one can satisfy
me
but You anymore.
Jesus, I love You, my only
desire.
Oh, set my heart on fire.

- कुछ भी न कोई करे संतुष्ट अब
बस तू ही प्रभु
यीशु, मेरा प्रेम, मेरी आकांक्षा
आग से भर हृदय को

7. मैं पछताके अब मुड़ूँ
भर दे हृदय अग्नि से
उत्साह की लौ भर
प्रभु, रह मुझ में अब तू

7. I repent and now return,
Grant my heart for You to burn.
Flame in me this zeal.
Lord, be in me so real!

8. मैं पछताके अब मुड़ूँ
भर दे हृदय अग्नि से
उत्साह की लौ भर
प्रभु, रह मुझमें अब तू

8. I repent and now return,
Grant my heart for You to burn.
Flame in me this zeal.
Lord, be in me so real!
Jesus, my first Love! Oh Jesus,
my best Love,
I now return to You.
Jesus, my first Love! Oh Jesus,
my best Love,
I love You. I just love You!

यीशु पहला प्रेम! ओह! यीशु उत्तम
प्रेम
अब मैं मुड़ूँ तुझ तक
यीशु पहला प्रेम! ओह! यीशु उत्तम
प्रेम
प्रेम करूँ, बस करूँ प्रेम

बस तुझमें रहना, जैसे तू मुझमें

191

1. बस तुझमें रहना, जैसे तू मुझमें
बस प्रभु बसना तुझमें निरंतर
यहाँ मैं और तू एक तू और मैं
हम जुड़े फिर से प्रभु आपस में

अपनी व्यवस्था बांटे परमेश्वर
वह त्रिएकता में
वो उड़ेलें और हो मिश्रित
सब कुछ वो मुझ तक

2. मैं हूँ बस एक डाल और वो है वृक्ष
जैसे मैं बसु, हो सब कुछ ठीक
चाहूँ रहना प्रभु हर समय
यहाँ तेरा मैं, प्रभु तू मेरा

3. मैं हूँ डाल प्रभु जिसको जोड़ा
मैं हूँ आया तुझमें इस एकता में
समृद्धि तेरी बहे जीवन से
जैसे मैं बसा तुझमें, मैं बढ़ुंगा

4. जैसे मैं बसु तुझमें तू मुझमें
यहाँ जुड़ुं मैं प्रभु वास्तव में
जैसे मैं रहूँ तेरे साथ
हम होंगे मिश्रित पूर्णतः

Just to be in You as You're in me

1. Just to be in You as You're in me.
Just abide in You, Lord, constantly.
Here I'm one with You, as You're with me.
Here we're joined as one, Lord,
mutually.

God's dispensing, His
economy,
In His Trinity,
He's transfusing, and He's
mingling
All He is to me.

2. I am just a branch, and You're the vine.
As I dwell in You, everything is fine.
Here I'd like to be, Lord, all the time.
Here I'm Yours, dear Lord, and You are mine.

3. I'm a branch that's been, Lord,
grafted in.
I'm supplied in You in this life union.
Here Your riches, Lord, in this sweet life flow.
As I dwell in You, I will surely grow.

4. As I dwell in You, and You in me,
Here I'm joined to You, Lord,
practically.
As I stay with You, as You're with me,
We will mingle, Lord, subjectively.

5. जैसे मैं करूँ प्रेम, आनंद करूँ
तू बना मुझमें रीमा शब्द
यहाँ प्रार्थना करूँ मैं, तू मुझमें
तुम फल लाओगे बहुतायत से

6. जैसे मैं बसु प्रभु और तू बहे
प्रभु तू भरे मुझे पूर्णतः
यहाँ हम एक हैं, दर्शाते तुझे
यहाँ पूर्ण आनंद कि हम बसे तुझमें

करूँ प्रेम पर न हों आदर्शित

192

1. करूँ प्रेम पर न हों आदर्शित
करूँ सेवा पर ना हों पुरस्कृत
करूँ जतन ना पहचाना जाऊँ
करूँ सहन और ना हो सम्मानित

2. है उडेणलना ना कि पीना
है तोड़ना ना कि रखना
जीवन कष्ट तो हो अनुग्रह
जीवन प्रेम तो हो सुख प्रदान

3. न चाहूँ दया और चिंता
ना लेना धीरज व स्तुति
होना निर्जन व होना विस्मृत
होना निशब्द पूर्ण परित्यक्त

5. As I'm loving You and enjoying You,
Lord,
You become in me the rhema word.
Here I'll pray in You as You pray in
me.
You'll bear fruit in me, Lord,
abundantly.

6. As I dwell in You, Lord You're flowing
through.
Lord, You're filling me, overflowing
too.
Here we all are one and expressing
You.
Here our joy is full as we dwell in
You.

Let me love and not be respected

1. Let me love and not be respected;
Let me serve and not be rewarded;
Let me labor and not be
remembered;
Let me suffer and not be regarded.

2. 'Tis the pouring, not the drinking;
'Tis the breaking, not the keeping—
A life suff'ring to seek others'
blessing,
A life loving and true comfort giving.

3. Not expecting pity or concern,
Not accepting solace or praise;
Even lonely, even forgotten;
Even wordless, even forsaken.

4. आंसु रक्त ही मेरी
धार्मिक ताज इनाम हो
छोड़ूं अपना महत्व सच्चे पथिक के लिए
तेरा जीवन प्रभु जो तूने चुना था
उन दिनों जब तू धरती पर था
सारे कष्ट, अहित, हानि सहे तू ने
ताकि सब पास आए, करे विश्वास

5. मैं देख न सकूँ कितना दूर जाऊँगा
तब भी बढ़ूँ जानूँ ना हो वापसी
है तू ही आदर्श, पूर्ण और सच्चा
लेता कृतज्ञता बिना झिझक
प्रभु इस घड़ी में मैं प्रार्थना करूँ
कि तू धोये छुपे अश्रु को
प्रभु सीखूँ मैं कि तू मेरा इनाम
बन सकूँ अनुग्रह दूसरों का

हे यीशु तुम हो प्यारे

193

1. हे यीशु तुम हो प्यारे
तुम्हरी ही अकांक्षा
किसी भी बाहरी सूख से
तुम उत्तम हो सबमें
सौंदर्य तुम्हारा यीशु
है अधिक ही सबसे ही
सुहावन तुम ही स्नेही
आकर्षक तुम रोशन

4. Tears and blood for the righteous
crown
My price shall be; losing all,
My cost for a faithful pilgrim's life.
'Twas the life, O Lord, that You chose
to live
In those days when on earth You
walked,
Gladly suff'ring all injuries and loss
So that all might draw near and
repose.

5. I cannot see how much farther I shall
go;
Still I press on, knowing there is no
return.
Let me follow Your pattern, so perfect
and true,
Bearing all gratefully without
complaint.
In this time of trial, O my Lord,
I pray that You would wipe my hidden
tears away;
Let me learn, O Lord, You are my
reward;
Let me be others' blessing all my
days.

Lord Jesus, You're lovely

1. Lord Jesus, You're lovely.
You're more to be desired,
Than any earthly pleasure.
You're fine, beyond compare.
Lord Jesus, Your beauty
Does far exceed all others.
You're comely and You're tender.
You're radiant and You're fair.

2. जब तुझे निहारू मैं
करता हृदय आकर्षित
प्रभु दूर ना जा सकूँ
आगोश में ही संतोष
अब समय ही इसमें जाएँ
पवित्र अनुपम स्मृति
तुझ में बसूँ निहारू
महिमामय मुख तेरा

3. अपना जीवन तुझे दूँ
केवल तू ही बहुमूल्य
यहाँ कुछ ना, ना कोई भी
जो मैं चाहूँ बस तू
सब दिन हो तेरे प्रभु
हृदय प्रेम करने को दूँ
बहुमूल्य तेरी सेवा ही
तेरी पूर्ण करुणा से

प्रभु, हृदय मेरा सच्चा रख
194

1. प्रभु, हृदय मेरा सच्चा रख हमेशा
ना जाऊँ वापस निहारू तुझे
हृदय जो है शुद्ध ढूँढ़े बस तुझे ही
हृदय जो प्रेम करे, बहुमूल्य है बस तू

तेरा प्रेम बाध्य करता सब देने को
प्रभु, ना हो कुछ हृदय खींचा तुझ तक
आह! क्या सौभाग्य, दूँ खुद को तुझे
प्रेम प्रभु को सबसे प्रिय
हे प्रभु, मैं प्रेम करूँ

2. When I behold You Jesus,
You draw my heart completely.
I cannot turn away Lord,
I rest in Your embrace;
And time is gone there's only
Your holy, matchless presence
Abiding in You, gazing
Upon Your glorious face.

3. I give my life to You Lord,
For You alone are worthy.
There's nothing and there's no one
That I desire but You.
May all my days be Yours, Lord,
My heart be given to love You,
To treasure and to serve You
By Your sufficient grace.

Lord, keep my heart always true to
You

1. Lord, keep my heart always true to
You,
Never backsliding, always viewing
You,
A heart that is pure that sees only
You,
A heart that loves You and treasures
only You.

Your love constrains me to give
my all to You.
Lord, I can't help it; my heart is
drawn to You.
Oh what a privilege! I give
myself to You!
I love You, Lord, dearest Lord.
I love You! I just love You!

2. प्रभु, प्रेम मेरा जलता रहे नित्य
 प्रेम जो कम ना हो, रहे गर्म नित्य
 प्रेम चमके उज्ज्वल तुझ तक नित्य
 प्रेम जो हो नूतन जैसे पहला वो स्पर्श

3. प्रभु, जीवन ले मैं देता तुझे
 हो हजारों तो, अर्पण तुझ पर
 कुछ ना रोके अब, मेरा सब तुझे
 जीवन, भविष्य, प्रिय प्रभु सब है तेरा

प्रिय प्रभु दूल्हा

195

1. प्रिय प्रभु दूल्हा
 कब आओगे प्रभु तुम
 ना कर देर उस दिन के लिए
 दे कृपा भरने की
 तुझसे प्रभु हर दिन
 प्रिय प्रभु ले जा साथ साथ

आ, प्रभु यीशु
 आ जा प्रिय दूल्हा
 अमूल्य जल्द आ, जल्द आ
 प्रभु खत्म कर
 प्रभु मैं भट्कूं ना
 सच्चा तुझसे हर समय

2. Lord, keep my love burning brightly
 for You,
 A love never dwindling always hot for
 You,
 A love, shining brighter all the way for
 You,
 A love, so fresh like the day I first
 touched You.

3. Lord, take my life, I present it to You!
 If I had a thousand, I'd pour all on
 You!
 Nothing withholding, my all is for
 You.
 My life and my future, dear Lord, is
 all for You.

Lord, how long, dear Bridegroom

1. Lord, how long, dear Bridegroom,
 'Til You come, Lord, how soon?
 Don't delay for that coming day,
 coming day.
 Grant me, Lord, to be filled
 With You, Lord, every day.
 Dearest Lord, take me all the way.

Come, Lord Jesus,
 Please come, dear Bridegroom;
 Precious One, come soon,
 come soon.
 Lord, consume me!
 Oh Lord, don't let me stray,
 Faithful to You all the way.

2. प्रभु घर बना मुझमें
अन्दर गुप्त भागो में
छुपा प्रभु है बस तेरा, बस तेरा
तेरी ही श्रेष्ठता
सब चीजों में हर समय
स्वामित्व है पूर्णतः
3. प्रार्थना में और चाह में
आत्मा में हमेशा हो
संतुष्ट होऊँ मैं तुझसे ही, तुझसे ही
यही हो नित्य जीवन
हर क्षण हो तेरी ही आस
यह प्रभु है प्रार्थना
4. इस संसार में देखे
तेरे मधुर स्पर्श में
तू ही चाह तू ही नियति, नियति
प्रभु मूल्य कितना भी हो
प्रभु आमीन होने दो
आह! मेरे प्रेम अब आ जल्दी
5. तेरे प्रेम में मैं बाध्य
जो अन्दर, समा ना पाऊँ
प्रभु अब और ना रोक पाऊँ, रोक पाऊँ
तेरे प्रेम में समर्पित
कलीसिया हो दुल्हन
यह है चाह मेरी पूर्णतः

2. Lord, make home in all my heart
In my secret, deepest parts,
Hidden, Lord, and reserved for You,
for You.
You would be preeminent
In all things and all events,
Possessed by Thee to this extent.
3. In my prayer and deepest plea
In my spirit always be
Saturated and soaked with Thee,
with Thee.
This would be my life daily.
Every hour expecting Thee,
This I pray, Lord, desperately!
4. The universe, in it we see,
In the sweetest touch of Thee,
You're my choice and my destiny,
destiny.
Lord, whate'er the price may be,
Lord, Amen, let it be!
Oh, my Love, please come back
quickly!
5. In Your love I am constrained.
What's within, I can't contain.
Lord, I can't any more restrain,
restrain.
In Your love, I'll pour on Thee.
And the church, Your Bride to be,
This my choice voluntarily.

चरवाहा स्वीकारा

196

1. चरवाहा स्वीकार कर
साथ आओ और खाओ उनके साथ
महसूलदार वा पापी
जाओ उन्हें लाओ घर
आनंदित कंधों पर
प्रभु, उन्हें लाओ घर
2. आत्मा, प्रिय आत्मा
कहाँ आखरी सिक्का है ?
हां है नौ तेरे पास
पर एक तुझे ढूँढना
प्रिय आत्मा तू झाड़ें
पूरी धरती पर
3. पिता, प्रिय पिता
करो दया मानव पर
वो गिरा सुअर बाड़े में
कब आएगा वापस ?
प्रिय पिता, दे चुंबन
तेरा पुत्र आएँ घर
4. पिता, दया के
पहनाओ अच्छे वस्त्र
और काटो मोटा बाछ
और खाओ, आनंद करो
था वो गुम पर मिला
मरा था पर जी उठा

Shepherd, receive man

1. Shepherd, receive man,
Come near and eat with them,
Publicans and sinners.
Go out to carry them home
On Your shoulders, rejoicing.
Lord, carry them home.
2. Spirit, dear Spirit,
Where is the one lost coin?
Yes, You have the nine,
But the one You must find.
Dear Spirit, You're sweeping
All over the earth.
3. Father, dear Father,
Have mercy on mankind!
He's fallen to the pigs' pen.
When will he return?
Dear Father, just kiss them,
Your sons coming home.
4. Father of mercy,
Clothe him with the best robe
And kill the fatted calf
And eat and be merry —
He was lost, but found,
Was dead, but now he lives.

कुछ आज कल हमसे कहेंगे

197

1. कुछ आज कल हमसे कहेंगे, यीशु न भोजन
कि हमको उसको जानना और करना है
अच्छा
पर हर्ष है बताने में कि ये रास्ता ना है —
यीशु है जीवन की रोटी, हर दिन हम खाते

चाहे कलीसिया जीवन, खाना
पीना, श्वासन,
चाहे कलीसिया, लेना वचन को
चाहे हम सुनना "प्रभु"
आमीन, हालेलुयाह
चाहे कलीसिया, भोज प्रभु साथ

2. जब भरे अन्तर मन, तब हम पहले जैसे ना,
बहुत धन चखें हम पुकारने से उसका नाम
"सेवाएं" सप्ताह में एक बार काम न करेंगी
हर दिन हम चाहे संगति, पार ले चलने को
3. अगर बाद में दुनिया के ये दिन, परिस्थिति
लगे इस गोल चक्कर में तुम चक्कर खा
गए
तब सुनो इसे ध्यान से जो हमने कहा है
हो सकता है कि तुम पाओ हमारी राह ठीक

Some, these days

1. Some, these days, would tell us that
our Jesus is not food,
That we only need to know about Him
and do good,
But we're glad to tell you brothers,
it's just not that way—
Jesus is the bread of life; we eat Him
every day.

We love the church life, eating,
drinking, breathing Jesus.
We love the church life, taking
in God's Word.
We love to hear those "O Lord,
Amen, Hallelujahs!"
We love the church life, feasting
with the Lord.

2. When He fills our inward parts, we're
never quite the same,
So much richness we can taste by
calling on His name.
"Services" but once a week for us will
never do.
Every day we need the fellowship to
take us through.
3. If these latter days and situations of
the world
Make you feel that round a vicious
circle you are swirled,
Then please listen closely to the
things we have to say;
It may be that you will find with us a
better way.

त्रिएक ईश्वर रहस्य

198

1. त्रिएक ईश्वर रहस्य —
परमेश्वर एक और तीन
और त्रिएक परमेश्वर अद्भुत
है अद्भुत अद्भुत वो!
त्रिएक ईश्वर रहस्य —
परमेश्वर एक और तीन
और त्रिएक परमेश्वर अद्भुत
है अद्भुत अद्भुत वो!

(भाई)

एक बालक है जन्मा
हमे एक पुत्र दिया
वो पराक्रमी ईश्वर
पुत्र, पिता एक
(बहन)
वो शक्तिमन ईश्वर
अनंत पिता वो
अद्भुत नाम उसका
है यह अद्भुत व्यक्ति

2. है प्रभु अब एक आत्मा
है यह अद्भुत रहस्य
मसीह, जीवन देय आत्मा
वो आया मुझमें अब

है प्रभु अब एक आत्मा
महिमामय है यह
मसीह, जीवन देय आत्मा
वो आया हममें अब

(भाई)

आखरी आदम बना
है प्रभु एक आत्मा
आखरी आदम बना
मसीह प्रभु, आत्मा

The Triune God: a mystery

185

1. The Triune God: a mystery—
God is one and He's three.
Oh, Triune God, You're wonderful!
You're wonder- wonderful!
The Triune God: a mystery—
God is one and He's three.
Oh, Triune God, You're marvelous!
You're marvel- marvelous!

(Brothers)

A child is born to us,
A son is giv'n to us,
The child, the mighty God,
The Son and Father one.

(Sisters)

The mighty God is He,
Eternal Father, He,
His name is Wonderful,
A wonderful Person.

2. The Lord is now the Spirit,
A wondrous mystery!
Christ, the life-giving Spirit,
Has entered into me!

The Lord is now the Spirit,
Oh this is glorious!
Christ, the life-giving Spirit,
Has entered into us!

(Brothers)

The last Adam became
The Lord is the Spirit,
The last Adam became
Christ is the Lord Spirit.

(बहन)
जीवन देय आत्मा
मसीह सर्वसम्मलित
जीवन दायि आत्मा
हममें रहता है वो

(Sisters)
The life-giving Spirit!
The all-inclusive Christ
The life-giving Spirit!
He's now indwelling us!

3. स्रोत परमेश्वर पिता;
परमेश्वर पुत्र पहुँचा
परमेश्वर आत्मा बहे
बहाये वो मुझमें अब

3. Our Father God, the source;
God, the Son, has reached me.
God as the Spirit's flowing free.
He flowed God into me!

स्रोत परमेश्वर पिता;
मार्ग है ईश्वर पुत्र
ईश्वर आत्मा आए मुझमें
है यह अद्भुत रहस्य

Our Father God, the source;
God, the Son, is the course.
God as the Spirit entered me!
'Tis the greatest mystery!

(भाई)
मुझमें त्रिएक ईश्वर
ओह! यह है महिमामय
मुझमें त्रिएक ईश्वर
ओह! यह है अद्भुत
(बहन)
सबसे बड़ा रहस्य
हममें त्रिएक ईश्वर
सबसे बड़ा रहस्य
हममें त्रिएक ईश्वर

(Brothers)
The Triune God in me:
Oh this is glorious!
The Triune God in me:
Oh this is marvelous!
(Sisters)
The greatest mystery!
The Triune God in us!
The greatest mystery!
The Triune God in us!

है जो मेरा पापी कल

199

1. है जो मेरा पापी कल ?
न आराम है चेतना को
अन्तर मन में है एक दर्द
मैं हूँ दोषित अपने अपराधों से

What about my sinful past

1. What about my sinful past?
And my conscience **has no rest.**
Deep within I feel the pain.
I'm condemned from all my guilty
stains.

2. ओह दुर्भाग्य का जीवन
 इस व्यर्थ दुनिया में
 मैंने ढूँढा खुशीयों को
 मैंने पाया तोहफे में खालीपन

3. परमेश्वर था दूर मुझसे
 महान और उंचा है वो
 हां तब भी मानवता ली
 मेरे लिए आए
 लटके काठ पे
 मेरे लिए लहू बहा

इसीलिये मैं प्रेम करूँ
 इसीलिये संजोउं तुझको
 इसीलिये दूँ जीवन, सबकुछ तुझको
 इसीलिये मैं प्रेम करूँ
 इसीलिये संजोउं तुझको
 इसीलिये दूँ जीवन, सबकुछ तुझको

प्रेम करता प्रभु

200

प्रेम करता प्रभु
 और ना तुझसा है कोई
 पूरे ही ब्रम्हांड में
 मेरे पास तुझसा है ना कोई
 हे यीशु मैं प्रेम करूँ

2. O my life of misery,
 In this world of vanity,
 As I searched for happiness,
 My reward I received just emptiness.

3. God was far away from me,
 Great and highest One is He.
 Yet You took on humanity.
 You came for me,
 Hung on a tree,
 Bled there to die for me.

That's why I love Him.
 That's why I treasure Him.
 That's why I give my life and all
 to Him.
 That's why I love Him.
 That's why I treasure Him.
 That's why I give my life and all
 to Him.

Lord, I just love you

Lord, I just love you
 And there is no one like you
 In the whole universe
 I have no other one like you
 Lord Jesus, I love you